पिपासा

अतीन वंद्योपाध्याय

अनुवादक

वीरेन्द्र नाथ मिश्र



उल्था प्रकाशन-कलकत्ता

'पिपासा' उपन्यास के लेखक श्री अतीन वंद्योपाध्याय बङ्गला के तरुण उपन्यासकारों में काफी लोकप्रिय हैं । आपका जन्म पूर्व बङ्गाल, वर्त्तमान बङ्गला देश में हुआ था । स्वभावतः आपकी लेखनी तत्कालीन पूर्व बङ्गीय विषय वस्तु से अनुप्राणित है । भाषा एवं भाव में बङ्गाल की रोमांटिकता एवं मिट्टी की प्राणमयता सजीव है ।

देश-विभाजन के बाद आप पश्चिम बङ्गाल चले आये । जीविका के लिये कभी रसोइया बने, तो कभी जहाज की नौकरी की । परिणामस्वरूप विभिन्न स्तरीय जीवन को निकट से देखा ।

तत्कालीन पूव बङ्गला (वर्त्तमान वङ्गला देश) की पृष्ठ भूमि में प्रसारित 'नीलकण्ठ पाखिर खोंजे' साहित्य अकादमी से पुरस्कृत होकर नेशनल बुक ट्रस्ट से कई भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है।

अञ्जलि/निर्मला, सुरेश और चमन की प्यास व घुटन भरी जिन्दगी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है 'पिपासा' ।

आपके उपन्यास हिन्दी भाषा में प्रकाशित हों, हमारी कामना है ।

"...निर्मला तथा अंजली की समाधि पर मौलसिरी और कदंब के पेड़ दो प्रकार की शोभा लिये बढ़ रहे हैं। अभी भी दोनों की छाया में दो प्रौढ़ चलते-फिरते दिखाई देते हैं। वे चलते-चलते कभी अन्यमनस्क हो जाते हैं। घास पर ओस की बुंदें झिलमिलाती रहती हैं। ओस की बुंदों में वे शायद प्यार को खोजते-फिरते हैं। कभी-कभी दोनों चुपचाप पेड़ तले बैठे रहते हैं। मैदान से ठण्डी हवा के झोंके आने पर वे विभिन्न प्रकार के फूलों की सुगन्ध पाते हैं। कौन-सी सुगन्ध किस फूल की है वे समझ नहीं पाते हैं। उस समय दोनों प्रौढ़ एक-दूसरे की ओर देखकर उदास हँसी हँसते हैं। सूर्य उन पर अपनी किरणें बिखेरता है।"

पिपासा

सुरेश इस पहाड़ी शहर में पहली बार आया है । स्टेशन पर उसने एक तांगा लिया । वह जायगा नटिंगहोम । वहाँ उसकी एफ पार्टी की आफिस है । तांगा में बैठे-बैठे ही उसने एकबार फिर सारी फ़ाइलों को ठीक से देख लिया । किस तरह बात शुरू करेगा, किस-किस प्वाइंट पर जोर देगा, यह सब मन-ही-मन सोच लिया ।

दोनों तरफ छोटे-बड़े पहाड़ । स्टेशन से इस तरफ काफी खुली जगह है । इक्के-दुक्के मकान । सिर्फ एक रेल यार्ड और कीलदार तारों का अहाता । कुछ चिड़िया । वह इन चिड़ियों को नहीं पहचानता । इसके बाद कुछ आदिवासियों के घर । पहाड़ी रास्ते से होता हुआ तांगा अब आबादी में आ पहुँचा—बाजार, कालेज, मिशनरी अस्पताल । सूरज अब तक सिर पर आ गया था । गरमी का मौसम । पर गरमी नहीं है । बल्कि सुरेश को तो सरदी लग रही है ।

वह अपने साथ एक रैपर लाया है । पहाड़ी इलाके में पहुँचते ही इधर वालों को सरदी लगने लगती है । इसीलिये लीला ने उसके सूटकेश में दो-चार गरम कपड़े रख दिये थे ।

सुरेश ने हंस कर पूछा था, "गरम कपड़ों का भला क्या होगा ?"

लीला ने कोई जवाब नहीं दिया था । उसका पति साधारणतः कहीं बाहर जाता ही नहीं, और खास कर पहाड़ी इलाके के बारे में तो वह बिलकुल ही अनजान है । शादी से पहले लीला अपने मामाओं के साथ बहुत घूमी-फिरी है । मामा सब देहरादून रहते थे । वह गरमी और दुर्गापूजा की छुट्टियों में मामाओं के घर पहुँच जाती थी ।

यूं तो सुरेश पहाड़ी शहर के बारे में अनजान था ही; पर दफ्तर के छोटे

बावू अविनाश से उसे थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी। कहा था; "कुछ गरम कपड़े ले लीजियेगा सर, जरूरत पड़ सकती है।"

हालांकि इस तरह की छोटी-मोटी बात के लिए उसे आने की जरूरत नहीं थी। लेकिन चमन लाल के साथ डिसकाउंट को लेकर झमेला हो गया है। डिसकाउंट के संबंध में जब तक पार्टी से कोई बातचीत नहीं हो जाती, जब तक कोई फैसला नहीं हो जाता, तब तक कुछ करना मुश्किल है। वह एक सीमा निश्चित कर सकता था और उसके अधीनस्थ अधिकारी उस सीमा तक बात कर सकते थे; पर मुश्किल तो यह है कि चमन लाल शायद उससे कम पर ही राजी हो जाय। अधीनस्थ अधिकारी यदि ढंग से बातचीत न कर सके, तो संभव है ज्यादा डिसकाउंट देने के कारण कंपनी को ज्यादा नुकसान उठाना पड़े। पता नहीं क्यों, सुरेश इस मामले में किसी पर भरोसा न कर सका। उसने अपनी आफिस के सभी अधिकारियों को चकित करता हुआ कहा, "इसे मैं खुद सलटाऊंगा। मैं खुद जा रहा हू।"

वह और किसी पर भरोसा नही कर पा रहा है, ऐसा उसने मुंह फोड़ कर नहीं कहा। बस चला आया। आते वक्त और भी कुछ काम साथ ले आया। चमन लाल को कहने से वह स्टेशन गाड़ी भेज सकता था। लेकिन वह खुद जायगा सुनकर, चमन लाल सावधान हो जाता। अचानक पहुँचने पर ही, अधिक लाभ की संभावना है। इसलिये उसने चमन लाल को सूचना तक नहीं दी थी। आवश्यक काम समझ कर वह अचानक ही चला आया है, ऐसा ही भाव दिखायेगा।

कंपनी के अंदरूनी मामलों से संबंधित होने के कारण ही शायद उसे कभी-कभार बाहर जाना पड़ता है। छुट्टियों में उसे कहीं बाहर जाने की इच्छा नहीं होती। बस, वह अपने गाँव चला जाता। लीला के साथ वह मां-बाप के पास अपनी छुट्टियाँ बिता देता।

पत्नी से अलग वह कभी नहीं रहा। शादी के बाद जो लीला उसके घर आयी, फिर कहीं नहीं गयी। सुरेश दक्षिण कलकत्ता में रहता और उसकी सुसराल उत्तर कलकत्ता में। ससुर का परिवार काफी बड़ा है। कितने ही आदमी हैं। रहने-सोने की बड़ी असुविधा है। यहाँ आने पर लीला के हाथों काफी समय रहता है। लम्बा-चौड़ा फ्लैट है। पार्लर और बालकोनी में खड़े होने से सामने के लान में रंग-बिरंगे फूल दीखते हैं। सुरेश घरमुखी आदमी है। दफ्तर बंद होने पर वह सीधे घर चला आता है। लीला एक कीमती पीली साड़ी

पहने रहती है। बड़ा-सा जूड़ा बांधती है। मांग में सिंदूर की बिंदी लगाती है और वह एक सरल-सुबोध बालिका बन जाती है। मायके में उसका मन नहीं लगता। किसी उत्सव में अगर जाती भी है, तो रात के दस बजते ही वापस आ जाती है। आते ही पलंग पर पड़ जाती है, मानो अभी तक वहाँ किसी ने उसे बांध रखा था, अब भाग आयी है।

दोनों तरफ शहर बसा है। आबादी शुरू हो गयी है। वाह, तांगा पर आने से मजा आ गया। तांगे पर न आता, तो दोनों तरफ के लाल व नीले रंग के घर द्वार,रंग-बिरंगे फूलों की लताएं, इतना मनोहर पहाड़ी दृश्य मानो नहीं देख पाता। पता नहीं उसे ऐसा क्यों लग रहा है कि सहसा न आकर चमन लाल को कह कर एक अच्छे होटल की व्यवस्था करा लेता। काश, ऐसा करता तो लीला को साथ ही ले आता। कितना सुन्दर शहर है! पहाड़ी झरना देखने पर लीला शायद चञ्चल बालिका बन उठती, हिरनी की तरह चौकड़ियाँ भरती फिरती। और इसी समय सुरेश को अपनी बच्ची की याद हो आयी।

नन्हा-सा चेहरा, मासूम व प्यारा-प्यारा चेहरा उसे याद हो आया। वह मानो विदेश आ पहुँचा है। सिर्फ एक दिन का सफर कितना लम्बा मालूम पड़ रहा है। दरअसल सुरेश बहुत कम ही कहीं बाहर जाता है। छोटे कमरे में इतु अभी क्या कर रही है। उसकी अर्द्ध वार्षिक परीक्षा है। न, लीला उसके साथ आती ही नहीं। इम्तहान और स्कूल मौज-मस्ती करने से दोनों मिट्टी में मिल जाता—वह इसे कभी भी बर्दाश्त नहीं करती।

पहाड़ देखते ही बङ्गाली खुशी से नाच उठता है वाह, पहाड़ी सीढ़ियों की एक-एक सीढ़ी पर घर-द्वार, रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ, प्रशस्त लान और लान में पड़ती सूर्य की किरणें, सुन्दर युवक-युवतियों का अबाध विचरण। सुरेश का मन मुग्ध हो गया। उसने मन-ही-मन निश्चय किया, इतने दिनों बाद जब एक बार बाहर निकल पड़ा हूं, तो कुछ दिनों तक रह कर आसपास के दर्शनीय स्थान देख कर वापस जाऊँगा।

चमन लाल की फैक्टरी खोज निकालने में कोई कष्ट न हुआ। चमन लाल यहाँ एक केजी, दो केजी टीन में सरसों तेल पैक करके बेचता है। यहीं से भूटान जाने का एक रास्ता निकल गया है। इन इलाकों में पहाड़ों के ऊपर-ऊपर गाँव बसे हैं। चमन लाल का एक केजी, दो केजी पैकिंग का कारोबार बड़ा लाभप्रद है। सुरेश की कंपनी उसे प्रिंटेड कंटेनर देती है। चमन लाल बहुत बड़ी पार्टी है। फैक्टरी के नीचे तांगा के पहुँचते ही उसे लगा कि चमन लाल कहीं बाहर जाने की तैयारी कर रहा है।

वह नीचे है। रास्ता ऊपर चला गया है। झटपट तांगे से उतर कर सुरेश ने किराया-चुकाया। वह चाहता, तो सूटकेस और वेडिंग छोड़ कर ऊपर जा सकता था; लेकिन उसे देख कर चमन लाल नीचे आ रहा था। पास आते ही चमन लाल अवाक होकर बोल उठा, "अरे साहब आप ! यहाँ कैसे ? वह और भी बहुत कुछ बोलना चाहा, पर सुरेश बीच ही में उसकी बात काट कर बोल उठा, "पहले नहा-धो लूं, उसके बाद और कुछ।" सुरेश ने सोचा था, चमन लाल का मकान और-और मारवाड़ियों जैसा ही होगा। लेकिन चमन लाल ने बड़ा ही फैशनेबुल मकान बनाया है। पहाड़ काट कर समतल बनाया गया है। गाड़ी मकान तक नहीं जाती है। करीब तीस फीट नीचे और भी एक टीला तोड़ कर आउट हाउज बना है। वहाँ उसके नौकर-चाकर रहते हैं। गाड़ी वहीं छोड़ कर सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर जाना पड़ता है। सुरेश ने देखा, चमन लाल ने बड़ा सुन्दर मकान बनाया है।

चमन लाल लम्बे अर्से से बङ्गाल में कारोबार कर रहा है। उसने सुना है कि चमन लाल की पत्नी बङ्गालिन है।

सुरेश बोला, "वाह, बड़ी अच्छी जगह मकान बनाया है, भाई।

सुरेश को नीचे देखने में मानो डर लगता है। करीब हजार फीट नीचे रंग-बिरंगे फूल-पौधे लहरा रहे हैं। बड़े-बड़े पत्थर संगमर्मर की छोटी-छोटी चट्टान जैसा दीख रहे हैं।

चमन लाल बोला, "होटल में आपको तकलीफ होगी साब, आपको वहाँ अच्छा न लगेगा। जब आये हैं, तो यहीं कुछ दिनों तक रहिये। बड़ी इच्छा है, कुछ दिन आपकी सेवा करूं।

चमन लाल जानता है, इस साहब को खुश करने से उसे बड़ा लाभ होगा। इन दिनों टीन कंटेनर मिल नहीं रहा है। छलांगे मार-मार कर कीमत बढ़ती जा रही है। पुराने माल का डिसकाउंट अभी तक उसने लिया नहीं। कुछ माल खराब निकला है। वह चाहे तो सब माल वापस दे सकता है। लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा। बड़े साहब को वह एक बार अपनी फैक्टरी ले जायेगा। ढेर सारे फटे कंटेनर दिखायेगा। वह चाहता तो पूरा माल वापस दे सकता था; पर दिया नहीं। झलाइ करा कर चलाने की कोशिश करेगा। वह नहीं चाहता कि उसके कारण कंपनी को इतना नुकसान हो। इस तरह वह बड़ा साहब को खुश करने की कोशिश करेगा। बड़ा साहब अगर उस पर एकबार खुश हो जायें,

तो उसे तरह-तरह की सुविधाएं मिलेंगी। जैसे पुराने माल पर ज्यादा-से-ज्यादा डिसकाउंट, इस मंहगाई में हर महीने सप्लाई ठीक रखना, नये माल के संबंध में एक मनोनुकूल एग्रीमेंट करना आदि-आदि। और अगर बड़ा साहब दो नम्बर का कारोबार करने की थोड़ी सुविधा दें तो फिर चाँदी-ही-चाँदी है।

सुरेश बोला, "चमन लाल जी आप इतने रसिक हैं, नहीं जानता था।"

चमन लाल दायीं ओर वाला गेट पार कर रहा है। दायीं ओर का लान पार करते ही दो कमरे का खूबसूरत फ्लैट। बिलकुल अलग-अलग। कारोबार के सिलसिले में जो आता है, हाँ, पार्टी बड़ी होनी चाहिये, उसे यहाँ टिकाया जाता है। हर तरह का प्रबंध है। मोजाइक किया हुआ फ्लोर, हरे रंग से रंगी काठ की दीवार। नीले रंग का प्लास्टर किया हुआ काठ की छत। ऐसा लगता है मानो हरी-भरी घास से यह मकान बना हो। चारों तरफ हरा-भरा लान। दायीं ओर पहाड़ के करीब रेलिंग। वहाँ खड़े होने में उसे डर लग रहा था। अभी वह खिड़की के पास खड़ा है। ड्राइंग रूम, बेड रूम, एक-एक कर सब कुछ दिखा कर चमन लाल ने विदाई ली।

खिड़की पर बैठा-बैठा सुरेश दूर-दूर तक फैले हुए पहाड़ों को देखता रहा। पता नहीं क्यों, उसे फिर लीला याद हो आयी। लीला को साथ लाता, तो मजा आ जाता। लोग ऐसी ही जगह हनीमून करने आते हैं। क्यों आते हैं, अब वह महसूस कर पा रहा है। उसकी उम्र हो गयी। शादी किये छः-सात साल बीत गये। इतनी सुन्दर जगह पृथ्वी पर कहीं है, वह जानता ही नहीं था। जानता होता तो लीला को अवश्य ही साथ लाता। मन-ही-मन वह पश्चाताप कर रहा है। जीवन भर सिर्फ काम ही करता रहा, शहर से बाहर कदम न रखा। झरना, पहाड़, नदी-नाले, पेड़-पौधे देख कर जो इतना आनन्द मिलता है, इतने दिनों बाद आज वह अनुभव कर पा रहा है। सुरेश बड़ा सक्त आदमी है, सक्त ऑफिसर। अपनी जिम्मेवारी याद आते ही उसने सोचा कवियों जैसी भावुकता उसे शोभा नहीं देती।

झटपट नहा-धो कर, खा-पीकर तैयार होना होगा। यथाशीघ्र काम खतम करना होगा। संभव हुआ, तो कल ही ट्रेन पकड़ेगा। उसे ऐसा लगा, उसके न पहुँचने पर ऑफिस एकदम ठप्प हो जायेगी। मालिक का वह विश्वासी व्यक्ति है। उसके न रहने पर फैक्टरी में मुश्किल से आधा काम होगा। वह यहाँ काम से आया है, घूमने नहीं। इस तरह की कविता-टविता उसे शोभा

नहीं देती। उसने जो दो-चार दिन रुकने का विचार किया था, रुक न सकेगा।

और ठीक इसी समय उसे लगा, चमन लाल के दक्षिणी बरामदे पर एक युवती खड़ी है। वह नीचे पहाड़ देख रही है या ऊपर आसमान, कहना मुश्किल है। बड़ी-बड़ी आँखों से सब कुछ देख रही है। लाल रंग का सिफन पहने है। जोरों की हवा बहने के कारण दो-चार उलझी लटें माथे पर फैली हैं। बड़ा उदास-उदास-सा चेहरा। मानो सुरेश का चिर परिचित चेहरा हो। सुरेश आड़ में खड़ा-खड़ा एकटक युवती को देखता रहा। उसे अब नहाने की इच्छा नहीं हो रही है। चुपचाप बैठे रहने को जी चाहता है। कहाँ थी यह? या उसे ऐसी जगह आकर लगता है कि पृथ्वी की हर चीज सुन्दर है। हर चीज मनोहर है। सुरेश सोच न सका कि वह कल क्यों जाना चाहता है? कौन उसे अपनी ओर खींच रहा है? लीला, क्या लीला उसे अपनी ओर खींच रही है? क्या कर्त्तव्य-बोध उसे खींच रहा है या उसका अहम् भाव? कौन? उसने विस्मित होकर दर्पण में अपने आप को पहचानने की कोशिश की।

तीसरे पहर एकबार चमन लाल आया।

सुरेश बोला, "आज ही मैं आपके साथ बैठना चाहता हूँ। कल जाने की सोच रहा हूँ।"

—यह कैसे हो सकता है साब! आप मेरी फैक्टरी नहीं देखेंगे? किस तरह काम चला रहा हूँ, एकबार देखेंगे नहीं?

—समय निकाल कर और कभी आकर देखूंगा।

—उँ, हुँ, ऐसा नहीं हो सकता साब। आपके लिये मैंने दोपहर में निर्मला के साथ बैठकर प्रोग्राम बनाया है।

सुरेश आराम कुर्सी पर बैठा था। पास ही टेबुल थी। वह सिगरेट पीते-पीते बीच-बीच में अन्यमनस्क हो उठता था। चमन लाल की बात सुन कर बोला, "आप और निर्मला देवी ने मिल कर प्रोग्राम बना लिया और मुझे पता तक नहीं।"

—आपने यह तो पूछा ही नहीं कि निर्मला कौन है?

—निर्मला देवी के बारे में आप कई बार बता चुके हैं।

—कॉलेज में पढ़ी-लिखी लड़की मेरी पत्नी है। बड़ी चुस्त-चालाक लड़की है।

सुरेश को इस तरह की वात पसन्द न आयी। पत्नी के सम्बन्ध में इस तरह का मजाक सुनना वह जरा भी पसन्द नहीं करता। बोला, "और कभी होगा।" बताइये, काम पर किस समय बैठेंगे ?

—आप जब कहें।

—फैक्टरी कितने बजे तक खुली रहती है ?

—आज-कल दोनों शिफ्ट काम हो रहा है।

—मैं सोचता हूँ, यह सब बात ऑफिस में होनी चाहिये।

—जैसी आपकी मरजी।

—आप तैयार हो जाइये।

—चाय बन रही है पीकर निकलयेगा।

—फिर चाय ? सिर्फ चाय, और कुछ नहीं।

चमन लाल हँस पड़ा। बोला, "आपने दुनिया नहीं देखी सर, अफसोस की बात है।"

—क्या मतलब !

—सिर्फ काम-ही-काम।

—मैं तो यह कह कर आया नहीं हूँ कि यहाँ कुछ दिन रुकूंगा। कल ही वापस जाने की वात है। इसलिये कोई बहाना बनाकर रुकना ठीक न होगा।

—बिल्कुल ठीक कहते हैं सर।

चमन लाल ने चाय पीने का अनुरोध किया, "चलिये सर, एकबार मेरे गरीबखाना में चलिये।"

चमन लाल लगभग चालीस साल का है। लेकिन अपनी तोंद और चर्बी के कारण वह पचास का दीखता है। काला-कलूटा। सामने के दो दाँत सोना में बंधे हैं। घर पर वह धोती पहनता है। पेंट खूब कस कर पहनना पसन्द करता है। सिर पर मिरजापुरी टोपी। हमेशा जर्दा वाला पान खाने के कारण सारे दाँत काले पड़ गये हैं। हाँ, अभी तक बाल नहीं पका है। साही कांटे जैसे खड़े बाल। चलते-चलते सुरेश ने मानो चमन लाल को नये ढंग से देखा।

दोनों तरफ दो माली हमेशा काम करते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की देख-भाल करते हैं, नये-नये फूल लगाते हैं। बड़े-बड़े लाल गुलाब, लाल-पीले मेरुन

गुलाब, कोई-कोई पिंक गुलाब। गुलाब की सुगन्ध से उसकी नाक भरी जा रही थी।

सीढ़ी के सामने ही फौवारा है। फौवारे के चारों तरफ रंग-बिरंगी बत्तियाँ लगी हैं। रात में जलाने पर प्रकाश की किरणें पानी के अन्दर रंगों की बहार लुटाती हैं। उस समय चमन लाल की सुन्दरी पत्नी शायद बहुत एकाकीपन महसूस करती है। सुन्दरी व पढ़ी-लिखी पत्नी है। रवीन्द्र संगीत बहुत अच्छा गाती है। और भी बहुत कुछ सुरेश ने चमन लाल से सुना है। जिस युवती को देख कर सुरेश का मन चंचल हो उठा था, अब समझ सका है कि वह कौन है। वह अब क्षण भर भी देर करना नहीं चाहता, वापस जाना चाहता है। इस उम्र में इतना चित्त-विकार अच्छा नहीं। बार-बार मन कहता है, इस युवती को कहीं देखा है, दूर से देखने के कारण पहचान नहीं पा रहा है। पास जाते ही मानो पहचान लेगा। सुरेश इस समय बड़ा उदास दीख रहा था।

चमन लाल बोला, "क्यों साहब, कैसी जगह है?"

—अच्छी, बहुत अच्छी।

दोनों साथ-साथ चल रहे थे। तीसरा पहर है। पहाड़ की चोटियों पर सूरज उतरता जा रहा है। सुरेश को सरदी-सी लग रही है। वह बोला, मि० चमन लाल ऐसी जगह इतना खर्च कर घर बनाया क्यों?

—यह जगह मुझे बहुत पसन्द है साहब। उसके बाद क्षण भर रुक कर बरामदे में जहाँ पर झाड़-फानूस झूल रहा है, पता नहीं वहाँ क्या देखा। मानो किसी की पदचाप कान लगाकर सुनी और फिर बोला, "यहाँ आते ही मेरी तकदीर बदल गयी साहब।"

चमन लाल के चेहरे पर हँसी देख कर सुरेश ने मन-ही-मन सोचा, बड़ा रसिक आदमी है। एक मुफस्सिल पहाड़ी इलाके में कल-कारखाने भी ज्यादा नहीं हैं। दो-चार चाय गोदाम हैं और सात-आठ तेल की मिलें हैं और है चमन लाल का तेल पैकिंग कारखाना। सिर्फ वही एक केजी, दो केजी के टीन में पैकिंग का काम करता है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण भारी बोझ लेकर ऊपर चढ़ने में कष्ट होता है। यही कारण है कि एक-केजी-दो-केजी पैकिंग की अच्छी खपत है।

लेकिन इतना बड़ा मकान, कीमती गाड़ी और भोग-विलास की इतनी सारी सामग्री का कारण क्या सिर्फ यही एक मामूली-सा कारखाना है! सुरेश को सन्देह हुआ। चमनलाल कलकत्ता पहुँचते ही कहा करता है, चलिये न साब,

एकबार मेरे गरीबखाने से हो आइये। उसकी बातचीत में ऐसी करुणा फूट पड़ती है, मानो कलकत्ता में आदमी जिन्दा नहीं रह सकता। कलकत्ता आते ही मानो चमन लाल का दम घुटने लगता है। वर्षों से सुरेश एक गन्दे शहर में पड़ा है। कलकत्ता से बाहर कहीं नहीं गया। बाहर जाने पर सुरेश, सुरेश न रह सकेगा; बल्कि कुछ और ही बन जायगा। चमन लाल कहा करता, "साब, एकबार अगर मेहरबानी करके मेरे गरीबखाने पर आएँ, तो फिर वापस आने की इच्छा नहीं होगी।

इस बरामदे के दक्षिण तरफ पहाड़ से एकदम सट कर रेलिंग है। काफी नीचे दो-चार मकान हैं। और हैं सूखे पेड़-पौधे। सुरेश को चक्कर-सा आ रहा है। मानो उसे कोई धक्का दे रहा है। यहाँ चमन लाल उसे क्यों ले आया है। उसने देखा, यहाँ खड़ा होते ही नीचे नदी एक रेखा-सी दीखती है। पहाड़ पर कहीं-कहीं बलखाती हुई पगडंडी चली गयी है।

सुरेश बैठा नहीं। वह रेलिंग के पास खड़ा रहा। पता नहीं क्यों यहाँ से दूर-दूर तक फैले पहाड़ देखना अच्छा लग रहा है। उसे एकाकीपन का स्वाद मिल रहा है।

चमन लाल बोला, "खाली आँखों अच्छी तरह दिखाई नहीं पड़ता साब।"

—क्या, सब कुछ तो देख रहा हूँ।

चमन लाल ने उंगली उठा कर दूर का एक पहाड़ दिखाया।

—कुछ देख रहे हैं साब ?

—नहीं।

—जरा, दायीं ओर सरक कर देखिये।

—कहाँ ?

—एक छोटी-सी रेखा दीखती है न।

रेलिंग पर छाती टिका कर सुरेश ने उधर जरा झुक कर देखा।

—एक मिनट। —उसने आवाज दी, "निर्मला !"

सुरेश समझ गया, चमन लाल अपनी पत्नी को पुकार रहा है।

कोई उत्तर न मिलने पर चमन लाल ने फिर आवाज लगायी, "निर्मला, सुन रही हो ?"

अन्दर रंग-विरंगे शीशे का कमरा। निर्मला वहीं से बोली, "मुझे कुछ कह रहे हो ?"

—तुम किसी के हाथ बाइनाकुलर भेज दोगी ?

गुलाब, कोई-कोई पिंक गुलाब। गुलाब की सुगन्ध से उसकी नाक भरी जा रही थी।

सीढ़ी के सामने ही फौवारा है। फौवारे के चारों तरफ रंग-बिरंगी बत्तियाँ लगी हैं। रात में जलाने पर प्रकाश की किरणें पानी के अन्दर रंगों की बहार लुटाती हैं। उस समय चमन लाल की सुन्दरी पत्नी शायद बहुत एकाकीपन महसूस करती है। सुन्दरी व पढ़ी-लिखी पत्नी है। रवीन्द्र संगीत बहुत अच्छा गाती है। और भी बहुत कुछ सुरेश ने चमन लाल से सुना है। जिस युवती को देख कर सुरेश का मन चंचल हो उठा था, अब समझ सका है कि वह कौन है। वह अब क्षण भर भी देर करना नहीं चाहता, वापस जाना चाहता है। इस उम्र में इतना चित्त-विकार अच्छा नहीं। बार-बार मन कहता है, इस युवती को कहीं देखा है, दूर से देखने के कारण पहचान नहीं पा रहा है। पास जाते ही मानो पहचान लेगा। सुरेश इस समय बड़ा उदास दीख रहा था।

चमन लाल बोला, "क्यों साहब, कैसी जगह है ?"

—अच्छी, बहुत अच्छी।

दोनों साथ-साथ चल रहे थे। तीसरा पहर है। पहाड़ की चोटियों पर सूरज उतरता जा रहा है। सुरेश को सरदी-सी लग रही है। वह बोला, मि० चमन लाल ऐसी जगह इतना खर्च कर घर बनाया क्यों ?

—यह जगह मुझे बहुत पसन्द है साहब। उसके बाद क्षण भर रुक कर बरामदे में जहाँ पर झाड़-फानूस झूल रहा है, पता नहीं वहाँ क्या देखा। मानो किसी की पदचाप कान लगाकर सुनी और फिर बोला, "यहाँ आते ही मेरी तकदीर बदल गयी साहब।"

चमन लाल के चेहरे पर हँसी देख कर सुरेश ने मन-ही-मन सोचा, बड़ा रसिक आदमी है। एक मुफस्सिल पहाड़ी इलाके में कल-कारखाने भी ज्यादा नहीं हैं। दो-चार चाय गोदाम हैं और सात-आठ तेल की मिलें हैं और है चमन लाल का तेल पैकिंग कारखाना। सिर्फ वही एक केजी, दो केजी के टीन में पैकिंग का काम करता है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण भारी बोझ लेकर ऊपर चढ़ने में कष्ट होता है। यही कारण है कि एक-केजी-दो-केजी पैकिंग की अच्छी खपत है।

लेकिन इतना बड़ा मकान, कीमती गाड़ी और भोग-विलास की इतनी सारी सामग्री का कारण क्या सिर्फ यही एक मामूली-सा कारखाना है ! सुरेश को सन्देह हुआ। चमनलाल कलकत्ता पहुँचते ही कहा करता है, चलिये न साब,

एकबार मेरे गरीबखाने से हो आइये। उसकी बातचीत में ऐसी करुणा फूट पड़ती है, मानो कलकत्ता में आदमी जिन्दा नहीं रह सकता। कलकत्ता आते ही मानो चमन लाल का दम घुटने लगता है। वर्षों से सुरेश एक गन्दे शहर में पड़ा है। कलकत्ता से बाहर कहीं नहीं गया। बाहर जाने पर सुरेश, सुरेश न रह सकेगा; बल्कि कुछ और ही बन जायगा। चमन लाल कहा करता, "साब, एकबार अगर मेहरबानी करके मेरे गरीबखाने पर आएँ, तो फिर वापस आने की इच्छा नहीं होगी।

इस बरामदे के दक्षिण तरफ पहाड़ से एकदम सट कर रेलिंग है। काफी नीचे दो-चार मकान हैं। और हैं सूखे पेड़-पौधे। सुरेश को चक्कर-सा आ रहा है। मानो उसे कोई धक्का दे रहा है। यहाँ चमन लाल उसे क्यों ले आया है। उसने देखा, यहाँ खड़ा होते ही नीचे नदी एक रेखा-सी दीखती है। पहाड़ पर कहीं-कहीं बलखाती हुई पगडंडी चली गयी है।

सुरेश बैठा नहीं। वह रेलिंग के पास खड़ा रहा। पता नहीं क्यों यहाँ से दूर-दूर तक फैले पहाड़ देखना अच्छा लग रहा है। उसे एकाकीपन का स्वाद मिल रहा है।

चमन लाल बोला, "खाली आँखों अच्छी तरह दिखाई नहीं पड़ता साब।"

—क्या, सब कुछ तो देख रहा हूँ।

चमन लाल ने उंगली उठा कर दूर का एक पहाड़ दिखाया।

—कुछ देख रहे हैं साब?

—नहीं।

—जरा, दायीं ओर सरक कर देखिये।

—कहाँ?

—एक छोटी-सी रेखा दीखती है न।

रेलिंग पर छाती टिका कर सुरेश ने उधर जरा झुक कर देखा।

—एक मिनट। —उसने आवाज दी, "निर्मला!"

सुरेश समझ गया, चमन लाल अपनी पत्नी को पुकार रहा है।

कोई उत्तर न मिलने पर चमन लाल ने फिर आवाज लगायी, "निर्मला, सुन रही हो?"

अन्दर रंग-बिरंगे शीशे का कमरा। निर्मला वहीं से बोली, "मुझे कुछ कह रहे हो?"

—तुम किसी के हाथ बाइनाकुलर भेज दोगी?

—भेज रहीं हूँ।

उसके बाद एक अजीब-सी चुप्पी। सुरेश ने देखा, चमन लाल टेबुल और बेंत की कुर्सियाँ करीने से लगा रहा है।

इस दिशा में वह सुरेश को पक्का कारोबारी लगा। और किसे बुलायेगा चमन लाल। खुद ही टेबुल की चादर ठीक कर दी। अभी-अभी वह जो एक बाइनाकुलर मंगवा भेजा है, और कलकतिया बाबू बाइनाकुलर से देखने के लिये खड़ा है, लगता है चमन लाल यह सब अभी भूल गया है। सुरेश बाबू की जरा-सी दया से वह जो मालामाल हो जायेगा; लंबे अर्से से जिसकी आशा लगाये बैठा था कि अवसर मिलते ही वह उसका भरपूर फायदा उठायेगा, अभी चमन लाल में उसका आभास तक देखने को नहीं मिलता। ऐसा लग रहा है मानो चमन लाल को उसकी उपस्थिति का पता तक न हो।

देरी होता देख चमन लाल ने खुद ही बाइनाकुलर लाकर सुरेश को दिया। बोला, "अब देखिये साब, सब कुछ साफ-साफ दिखायी पड़ेगा।"

उसके बाद चमन लाल सीढ़ी के सामने वाला दरवाजा खोल कर अन्दर चला गया।

—इतनी देर क्यों निर्मला ?

— मुझे अच्छा नहीं लग रहा।

—उनके साथ परिचय नहीं करोगी ?

चमन के चेहरे पर पता नहीं निर्मला ने क्या देखा। बोली, "मुझे क्यों घसीट रहे हो ?"

निर्मला के व्यवहार पर चमन लाल अवाक हो उठा। बोला, "तुम्हारा गाना यानी मैं कई बार उन्हें कह चुका हूँ कि तुम बहुत अच्छा गाती हो। बड़ा कड़ा आदमी है निर्मला। अपनी कम्पनी के अलावा और कुछ भी नहीं समझता।

निर्मला, बोली, "आज तो मुझे माफ करना ही होगा चमन।"

निर्मला से चमन को ऐसे व्यवहार की आशा न थी। वह उसे परेशान भी नहीं कर सकता। बोला, उन्हें साथ चाय पिलाने लाया था। राजी हुए हैं, यही नसीब की बात है।

—कहना मेरी तबीयत खराब है।

—सुरेश साब कुछ नहीं कहेंगे। तुम नहीं जाओगी; फिर भी कुछ नहीं बोलेंगे। तुम जाती, तो मेरे लिये अच्छा होता।

—सुरेश साहब को मैं पहचानती हूँ।

—तुम उन्हें पहचानती हो ?

—तुम जब उन्हें साथ ला रहे थे, फौवारे के पास मैंने देखा था।

—तुम उन्हें कैसे पहचानती हो ?

—बस, पहचानती हूँ। —कह कर वह रहस्यमय ढंग से हँसी।

—क्यों मज़ाक कर रही हो ?

—किससे ?

—मुझ से।

—और कुछ नहीं !

—मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।

—फिर मैं क्या करूँ।

—मुझे एकबार चूम लो।

—चूम कर क्या होगा, तुम्हें तो कुछ पता ही नहीं चलता।

—क्या मतलब।

—बिलकुल भुथरा गया है। —कह कर निर्मला ने चमन का गाल दबा दिया, "चमन, जिस बाबू को तुम पकड़ लाये हो, मैं उसे इतनी अच्छी तरह पहचानती हूँ कि मेरे जाने पर तुम्हारा सारा काम मिट्टी में मिल जायेगा।"

हाँ, चमन जानता है कि कभी-कभार निर्मला इतनी रहस्यमयी हो जाती है कि उसकी थाह पाना मुश्किल है।

—तुम झूठ बोल रही हो।

—आज तक बोली हूँ क्या ? कलकत्ता से जब भाग्य भरोसे तुम्हारे साथ चली आयी, उसके बाद से कभी झूठ बोली हूँ ?

—नहीं।

—तब यह सब बोल रहे हो !

—पता नहीं, मुझे क्यों ऐसा लग रहा है।

—तुम्हारा साहब अभी क्या करता है ?

—बाइनाकुलर पकड़ा दिया है। पहाड़ का नशा चढ़ने पर जल्दी जाना नहीं चाहेगा। दो-चार दिन रोकना चाहता हूँ। किसी और के आने पर रुपया खिला कर हाथ न कर लूँ, यही सोच कर साहब खुद ही चले आये हैं। वह मुझे जिबह करना चाहेंगे और मैं उन्हें। बाबू को अगर खुश कर पाता, चार पर्सेंट डिसकाउण्ट एलाउ करा पाता, तो मुझे बड़ा लाभ होता निर्मला।

चमन निर्मला की इज्जत करता है। उसका धन व ऐश्वर्य निर्मला के कारण ही है। इस बार भी उसे दो लाइसेंस मिले हैं। निर्मला को साथ लेकर वह

बीच-बीच में राजधानी जाता है। उसके बाद निर्मला का आतिथ्य-सत्कार, उसका खुला व्यवहार काम आता है। निर्मला सहज ही किसी को अपना बना ले सकती है। टीन पैकिंग की आवश्यकता दिखा कर वह हर साल इम्पोर्ट लाइसेंस निकाल कर बेच देता है। अगर सुरेश बाबू को मना सके, तो अच्छा-खासा डिसकाउण्ट मिल जायेगा। लेकिन निर्मला को क्या हुआ! वह राजी ही नहीं हो रही है। चाय पर बुलाया है। निर्मला चाय देगी, दो-चार बातें होंगी, और क्या! निर्मला की हँसी बड़ी प्यारी है। माथे पर हमेशा बड़ी-सी बिंदी लगाती है। हमेशा जूड़े पर घूंघट रखती है। मांग में ऐसा लाल सुर्ख सिंदूर लगाती है कि कभी-कभार चमन लाल को ताजा घाव-सा लगता है।

और निर्मला! सांचे में ढला बदन। बड़ी-बड़ी आँखें। अङ्ग-अङ्ग में छलकता यौवन। शैंपू किये घुंघराले बाल। तरह-तरह के क्लिपों से भरा बेतरतीब जूड़ा। घड़ी में वह नक्काशीदार चेन लगाती है। रंग-बिरंगे फूल व लताओं से चित्रित बंबई प्रिंटिंग की साड़ी पहनना पसन्द करती है। इस तरह लपेट कर नाभि के नीचे साड़ी पहनती है कि लगता है कहीं फैशन शो में शामिल होने जा रही हो। निर्मला इतनी सुन्दर है, इतनी आकर्षक है कि चमन कभी-कभी अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पाता। और सफेद संगमर्मर के महल में निर्मला जब अकेली चलती-फिरती है, तो ऐसा लगता है मानो कहीं झरने से टप-टप बूंदें गिर रही हों।

चमन फिर बोला, "तुम क्या सचमुच में सुरेश बाबू को पहचानती हो?"

—मुझे क्या पड़ी है कि तुम से झूठ बोलूं?

—लेकिन मैंने उन्हें कहा है न कि मेरी पत्नी बंगालिन है और रवीन्द्र संगीत बहुत अच्छा गाती है।

—चमन तुम खुद भी तो बंगाली बन गये हो। इतनी अच्छी बंगला बोलते हो कि अब तुम्हें मारवाड़ी कौन समझेगा।

—निर्मला तुम्हारे गाने पर सुरेश बाबू बहुत खुश होते।

निर्मला इस तरह हँसी कि चमन को और कुछ कहने का साहस न हुआ। वह दरवाजा खोल कर बरामदे पर आ गया और सुरेश के पास जा खड़ा हुआ। ऐसा लगा, मानो सुरेश उसका पुराना परिचित हो। उसके वहाँ खड़ा होने में कोई नवीनता नहीं।

निर्मला की ओर बिना कोई विशेष लक्ष्य किये ही सुरेश बोला, "चमन लाल आप क्या रोज बाइनाकुलर लिये यहाँ बैठे रहते हैं?"

—मैं नहीं साब, मेरी पत्नी बैठी रहती है। मुझे फुर्सत कहाँ, किसी-न-किसी काम पर मैं अक्सर बाहर चला जाता हूँ। कभी-कभी तो मुझे दो-तीन महीने तक बाहर ही रहना पड़ता है। उन दिनों बेचारी निर्मला अपने आप को बहुत अकेला अनुभव करती है। वह इसी बरामदे पर बैठी-बैठी अपना समय बिता देती है। चारों तरफ के पहाड़, जङ्गल, आदिवासियों का सूअर शिकार सब कुछ यहीं बैठी-बैठी बाइनाकुलर से देखती रहती है। आपको कैसा लग रहा है साब ?

—बहुत अच्छा।

—आइये, चाय आ रही है।

सुरेश ने पलट कर पीछे देखा। बैरा चाय लिये आ रहा है। अब वह एक सुन्दरी को देख रहा है। उस ओर से कोई आहट तक नहीं मिल रही है। उसने सोचा, न देख पाता, तो अच्छा होता। लेकिन उस सुन्दरी को न देख सकने के कारण वह मन-ही-मन बेचैन हो उठा था।

वह बोला, "मि० चमन लाल, आप से मुझे कोई खास काम नहीं है, मैं तो सिर्फ आपके रिजेक्शन का माल देख कर चला जाऊँगा। माल तो होगा ही।"

—नहीं साब। डैमेज्ड कंटेनर के भाव में बेच दिया है।

—तब आप डिसकाउण्ट कैसे आशा करते हैं ?

चमन ने अब दूसरी चाल चली। "साब, बम्बई से जेनिथ आया था। वे लोग सस्ते दाम पर माल सप्लाइ करना चाहते हैं।"

—उन लोगों का माल बड़ा घटिया किस्म का है, उनके साथ हमारी तुलना ही नहीं हो सकती।

—सर, मेरी सात-आठ तेल की मिलें हैं। पूरे उत्तर बंगाल में मेरा माल जाता है।

सुरेश जानता है, वह बहुत ज्यादा कमा नहीं सकेगा। जोरों की प्रतियोगिता शुरू हुई है। पहले इस कारोबार में उन लोगों का एकाधिकार था। लेकिन अब सरकारी कृपा से कितने ही लाइसेंस पाकर प्रतियोगिता में उतर पड़े हैं। बोला, "आप कितनी आशा करते हैं ?"

—छ: पर्सेंट।

—बहुत ज्यादा है, नहीं दे सकूंगा।

चमन ने सोचा, ज्यादा दर-भाव करने से कहीं ये लोग अपनी नयी योजना यहाँ शुरू न कर दें।

सुरेश की ऑफिस में वह सुन चुका था कि इस इलाके में कम्पनी फल पैकिंग का एक कारखाना खोलना चाहती है। और उस प्रस्ताव का समर्थन अभी उस पर ही निर्भर करता है। वह अगर ज्यादा मोल-भाव करेगा, तो सम्भव है सुरेश इसी क्षण बोल उठे, चमन यहाँ कोई अच्छी जगह दिला सकते हो।

उसके बाद जो होना होगा, वही होगा, उसके कारोबार में भी कम्पनी कूद पड़ेगी। सम्भव है, कम्पनी भी तेल खरीद कर पैकिंग करना शुरू कर दे। इतनी बड़ी कम्पनी के साथ वह प्रतियोगिता में टिक न सकेगा। उसे कारोबार बन्द करना पड़ेगा। अभी तो सुरेश बाबू ही उसका सब कुछ है। बोला, "फिर आपकी जो खुशी हो वही दीजिये साब।

चमन लाल को निर्मला पर बड़ा गुस्सा आ रहा है। वह यहाँ आकर बैठती, आदर-सत्कार करती, तो शायद काम हो जाता। आखिर शर्म लाज नाम की भी तो कोई चीज है। वह चाहे तो निर्मला के विरुद्ध बहुत कुछ कर सकता है; पर वह जानता है कि निर्मला के सामने खड़ा होते ही उसकी बोलती बन्द हो जाती।

चमन बोला, "साब, इतनी जल्दबाजी क्यों कर रहे हैं? एकबार जब सेवा करने का मौका मुझे मिल गया, तो मैं इतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं। दो-चार दिन यहाँ देख-सुन कर जाइये। यहाँ एक जङ्गल है। उस जङ्गल में भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़ हैं और प्रायः सभी एक जैसे लम्बे हैं, उनकी डालियाँ भी एक जैसी हैं। झुंड-के-झुंड सुनहले हिरन वहाँ चौकड़ियाँ भरते हैं। पास ही तिस्ता की एक छोटी-सी शाखा है। झुंड-के-झुंड हिरन जब वहाँ पानी पीने आते हैं, देखने लायक दृश्य होता है। निर्मला और मैंने कई बार पेड़ की ओट में छिप कर देखा है।

सुरेश ने प्रसङ्ग बदल दिया। "कल ट्रेन तो दस बजे है न, आप सुबह क्या व्यस्त रहेंगे?"

—नहीं। अभी तो सिर्फ आपको साथ लेकर जङ्गल, पहाड़ घूमना चाहता हूँ।

—ठीक है, एक दिन हम दिघरिया जायेंगे। कम्पनी वहाँ एक प्लाट खरीदना चाहती है। जब आ ही गया हूँ, तो एकबार देख जाऊँगा।

चमन का चेहरा फक पड़ गया। उसे मानो बोलने की इच्छा हो रही थी, साब, डिसकाउण्ट नहीं चाहिये। इस तरह डर-डर कर बोला, जैसे वह अभी-

अभी रास्ते का भिखारी बनने जा रहा हो, "प्लाट लेकर क्या होगा साहब ?"
—जैसे वह एकदम अनजान हो।

—कम्पनी यहाँ एक छोटा-मोटा पैंकिंग प्लाण्ट बैठाना चाहती है।

चमन मन-ही-मन बोला, "देखता हूँ, अब तक़दीर में दर-दर की ठोकर खाना ही लिखा है।"

रात का खाना खा कर निर्मला सोने जा रही थी कि चमन ने डर-डर कर सुरेश के प्लाट खरीदने का अभिप्राय बताया, "देखता हूँ, अब फुटपाथ पर उतरना पड़ेगा।"

निर्मला ने पलट कर देखा। चमन बड़ा मायूस दीख रहा है। पूछा, "क्या हुआ ?"

—तुम्हें नहीं बताया। सुन कर चिन्ता करोगी, इसलिये नहीं कहा। सुरेश बाबू सिर्फ चमन लाल के डिसकाउण्ट के लिये नहीं आये हैं। मैं भी सोचता था, इतना बड़ा आदमी दुनिया भर का काम छोड़ कर एक मामूली काम के लिये भला क्यों आयेगा। वे लोग यहाँ फ्रूट्स पैंकिंग का कारखाना खोलेंगे।

—वे लोग खोलना चाहते हैं, खोलने दो। तुम क्यों झूठमूठ की चिन्ता कर रहे हो।

—फ्रूट्स पैंकिंग में लाभ मिलते ही कंपनी और सब पैंकिंग में उतर पड़ेगी। वे लोग रातोंरात सारे मार्केट में छा जायेंगे।

—तुम्हारा नाम है चमन।

—इतनी बड़ी कम्पनी की गुड विल के सामने मेरी गुड विल !

निर्मला ने मन-ही-मन कुछ सोचा सुरेश बाबू तब यहाँ ढेर सारे काम लेकर आये हैं।

निर्मला सुनहरे रंग का गाउन पहने है। अन्दर कोई खास कपड़ा नहीं है। बिल्कुल हल्का-फुल्का लिबास। मानो उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग की एक-एक रेखा चौंक-चौंक कर प्रतिवाद करना चाहती है, गाउन से बाहर निकल पड़ना चाहती है। चमन लाल के चेहरे पर घनीभूत कातरता है। काफी दिनों से निर्मला इस तरह नहीं सजी है। ऊँचा करके जूड़ा बाँधा है। जूड़े में बेला की माला लिपटी हुई है। जरीदार गाउन पर प्रकाश की लाल-नील किरणें फिसल रही

हैं, गले में एक हार है, सिर्फ एक हार। दोनों हाथ में मीना की हुई हाथी दाँत की दो-दो चूड़ियाँ, आँखों के कोने में काजल की लम्बी रेखा।

चमन बोला, "समझ में नहीं आता, क्या करूँ।

निर्मला ने समझा, चमन एक बार और उससे अनुरोध करने आया है। क्योंकि ऐसी बातों में वह निर्मला पर बहुत विश्वास करता है। कितना मधुर स्वभाव है निर्मला का ! वह चाहे तो चुटकी बजाते ही सुरेश की सारी योजना मिट्टी में मिला सकती है। अभी निर्मला का इतना महिमामय मुख-मण्डल, इतनी सुन्दर आँखें और अङ्ग-अङ्ग में तड़पता अधीर आवेग—चमन यह सब कुछ भी नहीं देख रहा है। सुकोमल शरीर में उठता प्यार का ज्वार, आँखों में दहकती कामना से चमन सर्वथा अनभिज्ञ प्रतीत हो रहा है।

निर्मला बोली, "बैठो।"—कह कर उसने रेकार्ड प्लेयर चला दिया।

रेकार्ड प्लेयर में गाना शुरु हो गया। एक सोफा पर निर्मला झुक कर बैठ गयी। उसके कन्धे और पीठ के काफी हिस्से अब दीख रहे हैं ! चमन उसके पास आ बैठा। निर्मला को बाँहों में कस लिया। निर्मला ने फिर चमन का गाल दबा दिया। उसने खुद को ऐसा प्रकट किया, मानो अभी यह सब अच्छा न लग रहा हो। फिर इतना साज-सिङ्गार क्यों ! चमन ने सोचा था, जिस तरह निर्मला प्रतिदिन दो-चार पेग लेती है और चमन साथ देता है, शायद आज भी वह दो-चार पेग लेगी और चमन को साथ देना पड़ेगा।

लेकिन चमन ने देखा, निर्मला गाना में खोयी है। यह निर्मला का प्रिय गीत है। चमन ने देखा है, निर्मला का मन जब कभी इस तरह के जीवन से कष्ट पाता है, वह रेकार्ड प्लेयर लगा कर चुपचाप यही एक गाना सुनती रहती है। नियमित रूप से दो पेग लेने की रूटिन तक भूल जाती है।

निर्मला तब क्या सुरेश बाबू को देख कर कष्ट पा रही है ? क्यों, ऐसा भला होगा क्यों ? वर्तमान जीवन प्रणाली से क्या वह अनभिज्ञ है। उसने पूछा, "सुरेश बाबू को तुम कैसे पहचानती हो ?"

अब तक गाना खत्म हो गया है। निर्मला उठ खड़ी हुई। सिर्फ संक्षेप में बोली, "मुझे नींद आ रही है। तुम डरो मत, सुरेश बाबू आज भर तो हैं ही।"

—सो तो हैं।

—कल सुबह मिलूंगी और तुम देखोगे कि वह काम के बहाने और दो-चार दिन रुक जायेंगे।

—सच कह रही हो ?

—तुम चिंता न करो चमन।—कह कर निर्मला ने फिर चमन का गाल दवा दिया।

आह, निर्मला के अंग-अंग में कितनी मादक सुगंध है! कितनी कोशिश कर उसने निर्मला के लिये यह महल जैसा मकान बनाया है; फिर निर्मला जो क्या चाहती है, वह समझ नहीं पाता। उसने देखा है, जितनी बार स्वेच्छा से उसने निर्मला को बांहों में लेना चाहा है, वह अपने चेहरे पर अनोखी मुस्कान विखेर कर इतनी आकर्षक बन उठी है कि चमन को उसे कष्ट पहुँचाने की इच्छा नहीं हुई है। किसी-किसी दिन चमन अपने पर नियंत्रण न रख पाता है। वह आगे बढ़ता है; पर रुक जाता है। उसे ऐसा लगता है मानो उसके सामने आग का एक गोला दहक रहा है। उसके बाद सब कुछ निर्मला की इच्छा पर निर्भर करता है। चमन की इच्छा की कोई कीमत नहीं। इच्छा न रहने पर निर्मला सिर्फ उसका गाल दवा देती है। उसके बाद चमन सुबोध बालक की तरह कोने वाले कमरे में जाकर सो जाता है। या जब वह यहाँ रहता है, कभी-कभार गाड़ी लेकर अकेला ही दूर गाँव चला जाता है। वहाँ उसके आदमी हैं। वहाँ उसका घर है। वहाँ शराब के नशे में वह गरीब देहाती युवतियों की जवानी में निर्मला के दुःख ढूंढ़ता हैं, निर्मला को पहचानने की कोशिश करता है।

इसलिये इस समय चमन ने निर्मला को परेशान नहीं किया। एक भोले-भाले बच्चे की तरह कॉरिडोर पार कर वह अपने सोने वाले कमरे में चला गया।

निर्मला ने दरवाजा बंद कर लिया। हाँ, पीछे का दरवाजा खुला ही रहा। वहाँ इच्छा होने पर वह चुपचाप अकेली बैठी रह सकती है। दरवाजा और खिड़कियाँ बंद होने के कारण सर्दी नहीं लग रही है। एयर कंडीशन होने के कारण कमरे गरम हैं। और पता नहीं क्यों अभी सफेद चाँदनी देखने के लिये, पहाड़ की चोटियों पर जो सफेद चाँदनी खेल रही है, उसे देखने के लिये निर्मला का मन व्याकुल हो रहा है।

यहाँ बैठने पर वह गेस्ट हाऊस देख सकेगी। सुरेश तो शायद उसी कमरे में टिका है। उसके सिरहाने के पास वाली खिड़की खुली हुई है क्या! यानी अभी तक सुरेश साहब सोये नहीं हैं। खिड़की से निकल कर एक रहस्यमयी रोशनी बालकोनी के नीचे वाले फौवारे पर पड़ रही थी। रात के दस बजने पर सिर्फ गेट की रोशनी जलती रहती है। दायीं ओर की रेलिंग की रोशनी नीले रंग की है, वह भी जलती रहती है। और सभी रोशनियाँ बुझा दी जाती हैं। और पूरी इमारत उस समय पहाड़ पर मृत पेड़ की भाँति चुप खड़ी रहती है। आभास तक नहीं मिलता कि इतनी बड़ी इमारत में कोई रहता है।

कभी-कभार निर्मला को यह अन्धेरा बड़ा अच्छा लगता है। बचपन से ही वह एक अद्भुत रहस्य के पीछे भाग रही है। उन दिनों इसी सुरेश साहब की बुआ के पास रहती थी। सुरेश साहब की बुआ, रिश्ते में निर्मला की मौसी लगती थीं। निर्मला ननिहाल में पली है। सुरेश के साथ बिताये गये उन दिनों की बातें याद आने पर अब उसे हंसी आती है। उस हंसी के पीछे छिपी वेदना गहरे खेत-सी प्रतीत होती है। निर्मला ने सोचा, वाह, आखिरकार साहब तुम ही निकले! तुम्हारा बड़ा नाम है। तुम बड़े सच्चे हो, साहसी हो। बड़े भले हो तुम। तुम्हारी सचाई और ईमानदारी पर कम्पनी का बहुत कुछ निर्भर करता है। मन-ही-मन बुदबुदा कर वह खिलखिला कर हंस पड़ी। सचाई और ईमानदारी जैसे शब्द सुनते ही उसे इन दिनों जोरों की हंसी आती है। सुरेश साहब, सचाई और ईमानदारी कापुरुषों के लक्षण हैं। वे कुछ करने से डरते हैं; इसलिये सचाई और ईमानदारी की दुहाई देकर खुश रहना चाहते हैं!

निर्मला के अट्टहास से बगल वाले कमरे में चमन की नींद टूट गयी। निर्मला हंस रही है। कभी-कभार ऐसा होता है। निर्मला को जब वह कलकत्ता से ला रहा था, उस समय भी ट्रेन के रिजर्व डब्बे में इसी तरह कहकहा मार कर हंसी थी। पूछने पर बोली थी, डरो मत चमन। तुम मुझे बड़े अच्छे लगते हो। जिस जीवन को पीछे छोड़ आयी हूं, उसकी नैतिकता व निष्ठा की याद आने पर कभी-कभार मुझे जोरों की हंसी आती है। तुम डरो नहीं।

—चमन जानता है कि यह निर्मला की सिर्फ जबानी बात नहीं है। वह चमन के वैभव को बढ़ाने की जी जान से चेष्टा करती है।

—तुम इतने अच्छे क्यों लगते हो, जानते हो?

—कैसे जानूंगा?

—तुम जो हो, वही हो, यानी तुम्हारा अन्दर-बाहर एक-सा है।

चमन चुप था।

निर्मला को ऐसा लगा था कि वह उसकी बात समझ न सका। बोली थी, जीवन भर क्या मुझे तुम्हारी पत्नी बन कर रहना होगा?

—हाँ।

—हमारी शादी नहीं होगी?

—नहीं।

—तुम क्या अपने लिये इतना सब करते हो?

—कह सकती हो।

—मनुष्य का यही स्वभाव है। वह अपने लिये ही सब कुछ करता है।

—हाँ, यही स्वभाव है।

—पर ऐसा दीखता तो नहीं।

—नहीं दीखता ?

—दीखने पर इसे मैं पाप समझती हूँ।

—मैं भी।

—लेकिन मनुष्य का और भी एक स्वभाव है।

—जैसे ?

—जैसे मनुष्य कुछ करते ही सोचता है, वह अपने लिये नहीं; बल्कि दूसरों के लिए कर रहा है। उसके कितने सारे कर्त्तव्य हैं। वह अच्छा बनने की कोशिश करता है। अन्ततः दूसरों को यही दिखाने की कोशिश करता है।

—शायद होगा। यह सब मैं नहीं समझता।

—नहीं समझते हो, इसलिये तो तुम मुझे अच्छे लगते हो। इसीलिये मैं सब कुछ कर रही हूँ चमन। तुम बड़े सीधे हो।

चमन ने फिर कोई प्रश्न नहीं किया था। उसे बड़ी नींद आ रही थी।

वही हंसी सुरेश भी लेटे-लेटे सुन रहा है। उसे डर लग रहा है, इस चाँदनी रात में इस तरह कौन हंस रही है। सुना है, फूट-फूट कर रोने के पहले कोई-कोई युवती ऐसी हो हंसी हंसती है। इस अट्टहास के बाद क्या वह चुपचाप अकेली-अकेली फफक-फफक कर रो रही है ? वह बिस्तर पर उठ बैठा। खिड़की के पलड़े खुले हुए थे। उसने शीशा भी खोल दिया। शीशा के दरवाजे पर परदा झूल रहा है। दायीं ओर वाली खिड़की पहले से ही खुली हुई थी। सर्दी महसूस हो रही है। इस सर्दी में भी उसे प्यास लग रही है। उसने तिपाई पर रखे गिलास से पानी पिया। उसके बाद चुपचाप बैठ कर कुछ सोचने लगा। सोचने पर उसे लगा कि युवती की यह आवाज उसकी जानी-पहचानी है। ठीक ऐसी ही हंसी उसने और कभी सुनी थी और चौंक पड़ा था। सुरेश दरवाजा खोल कर बाहर बरामदे पर आ गया। देखा, वहाँ कोई नहीं है। कुहासा-सी सफेद चाँदनी में पहाड़ी जंगल डूब गया है। सफेद रंग की यह खूबसूरत इमारत रहस्यमयी-सी प्रतीत हो रही है।

और उसी समय सुरेश को लगा कि उधर का दरवाजा भी खोला जा रहा है। और काले रंग की चादर में खुद को छिपाये कोई लान पार कर रहा है। तुरंत उसने अपने आप को छिपा लिया। देखना चाहता है, रहस्य कहाँ तक

जाता है। उसने देखा, लान पार कर गेट की ओर नहीं जा रहा है। वह तो इधर ही आ रहा है। आश्चर्य है, उसका खुला दरवाजा देख कर रहस्यमूर्ति क्षण भर को अचकचायी। चमन ने क्या उसके पीछे आदमी लगाया है? काली चादर में ढका आदमी औरत है या मर्द, कुछ पता नहीं चलता। उस समय ओट से निकल कर वह मानो आत्म-रक्षा के लिये भागने का रास्ता ढूंढ़ रहा है। संभव है, अगर कमरे में कागजात न होते, तो नीचे उतर कर वह भाग पड़ता।

खिड़की के नीचे जो थोड़ी-सी आड़ है, वहाँ वह आ खड़ा हुआ। वहाँ एक कामिनी का पेड़ है। पेड़ के कारण वह तो दिखाई नहीं पड़ेगा; लेकिन कमरे के अन्दर की हर चीज वह देख सकेगा। साँस बंद किये कुछ देखने की सोच कर वह खड़ा था। उसने देखा, कमरे के अन्दर जाकर काला बुरक़ा जैसी चादर उतार कर जो खड़ी है, वह उसकी जानी-पहचानी है। चमन की पत्नी निर्मला या कोई और! लेकिन यहाँ इस तरह अकेली-अकेली आना! दुविधा ने मानो सुरेश के पाँव जकड़ दिये हैं। अंजली को वह यहाँ इस रूप में देखेगा, सपने में भी नहीं सोचा था।

अंजली ने इस बार खिड़की से झांका। सुरेश उसकी नज़र से बच न सका। छाया की तरह उसे खड़ा देख कर पुकारा, वहाँ क्यों खड़े हो? पहचान नहीं रहे हो, क्या? डर लगता है?

सुरेश डरपोक-सा मुँह बनाये कुछेक क्षण खड़ा रहा। उसके बाद कमरे में न आकर वह खिड़की के पास आ खड़ा हुआ। बोला, मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ न?

अंजली की दोनों आँखें पहले जैसी ही रहस्यमयी हैं। स्पर्श की सीमा में पाकर उसने धीरे से सुरेश को चिकोटी काटी। बोली, क्यों मैं सपना लग रही हूँ?

—नहीं।

—तब अन्दर आ जाओ। सर्दी लगेगी।

सुरेश अन्दर आ गया। बोला, दोपहर में एकबार दूर से तुम्हें देखा था, लेकिन ठीक-ठीक पहचान न सका था। अच्छा यह तो बताओ, चमन लाल की पत्नी निर्मला तुम्हीं हो या निर्मला नाम की और कोई है?

—इतनी खोजबीन क्यों? जरूरत ही भला क्या है?

—यूं ही।

—यूं ही नहीं महाशय ! दरअसल डर लग रहा है। चमन की पत्नी रात में अभिसार को निकली है, देखते ही गोली दाग देगा। यही बात है न ?

—नहीं, ऐसी बात नहीं।

—फिर ?

—अभी मैं तुम्हें ठीक-ठीक समझा नहीं सकता अंजली। मुझे केवल प्यास लग रही है। मैं फिर पानी पिऊंगा। मेरा सब कुछ गड़बड़ हो रहा है।

सचमुच में उसने पानी पिया। बड़ी देर तक कुछ न बोला। पलंग पर कुछेक क्षण चुपचाप बैठा-बैठा अंजली का मोम-सा पालिश किया चेहरा देखता रहा। अब अंजली तीस पार कर गयी है। यौवन के स्पर्श से उज्ज्वल एक बालिका का परिचित चेहरा वह खोज नहीं पा रहा है। प्रथम यौवन में अंजली तन्वंगी थी। उन दिनों उसकी दोनों आँखों में ही मानो उसका सब कुछ था। बुआजी अंजली को कोई खास पसन्द नहीं करती थीं। वह एक गरीब घराने की लड़की थी। बुआजी के सम्पन्न परिवार में वह गरीब की तरह ही रखी गयी थी। इसके लिये अंजली को कोई शिकायत नहीं थी। चुपचाप घर का काम करती। फूफाजी ने स्कूल में उसका नाम लिखा दिया था। दिन में बुआजी की फरमाइशें पूरी करती और रात में पढ़ती-लिखती।

सुरेश भी उसी साल पढ़ने के लिये गाँव से कलकत्ता आया। जादवपुर में दाख़िला लिया। पढ़ने-लिखने में अच्छा था। बुद्धिमान और सुशील विद्यार्थी के रूप में उसकी ख्याति थी। बुआजी को सुरेश पर बड़ा गर्व था। दो मंजिले पर एक पूरा कमरा सुरेश को दे दिया गया था। घर के नौकर-नौकरानियों से सुरेश बहुत कम बात करता। अंजली नाम की कोई लड़की इस मकान के किसी कोने में रहती है, इस पर उसका कोई ध्यान नहीं था। बस, कभी-कभार वह इतना ही देख पाता कि एक किशोरी लंबी चोटी झुलाती हुई आँखें नीची किये चली जा रही है। सुबह में गणित के किसी प्रश्न का उत्तर न मिलने पर जब वह चहलकदमी करता होता, उस समय देख पाता ढेर सारी किताबें दोनों हाथों से छाती में चिपकाये एक तरुणी स्कूल जा रही है। यह उसे अच्छा नहीं लगता था। वह जानता था कि बुआ उसे प्यार करती हैं। एक दिन उसने बुआजी से कह भी दिया, यह तुम अन्याय कर रही हो बुआ।

—क्या अन्याय कर रही हूँ ?

बुआजी सचमुच में उसकी बात नहीं समझ सकी थीं। इसलिये पूछा था।

—तुम अंजली को इस तरह रखती हो।

बुआजी ने पहले कोई जवाब नहीं दिया था। उसके बाद कुछ सोचकर बोली थीं, उसकी शादी का सब कुछ हमें ही करना होगा सुरेश। बेचारी एकदम अनाथ है। बाप-माँ को पहले ही खा चुकी है। तुम्हारी जान-पहचान में कोई लड़का हो, तो बताओ न, झटपट शादी कर दूं। मैट्रिक ही काफी है। बस, कहीं कोई काम करता हो, कम-से-कम सौ रुपये वेतन पाता हो।

सुरेश मन-ही-मन हँसा था। समझ गया था, लड़की इस परिवार पर बोझ है। उसे पिता से जेब खर्च के लिये एक मोटी रक़म मिलती थी। एक दिन अंजली स्कूल जा रही थी। उसका मुरझाया चेहरा देखकर सुरेश का तरुण हृदय व्यथित हो उठा था। सहसा वह पुकार उठा था, अंजली सुनो।

अंजली धीरे-धीरे सहमती हुई उसके सामने आ खड़ी हुई थी। छः महीने हो गये; पर अंजली ने कभी सुरेश को आँख उठाकर नहीं देखा था। दोनों एक ही मकान में छः महीने से रह रहे थे; पर ऐसा प्रतीत होता था कि किसी अनजान जगह में मिलने पर वह सुरेश को पहचान नहीं सकेगी।

अंजली उसके बुलाने पर डर गयी थी। मानो अनजाने में उससे कोई अपराध हो गया हो। लाख कोशिश कर भी वह आँखें न उठा सकी थी।

सुरेश ने कहा था, ये लो, तुम दस रुपये रखो।

अंजली को लगा था कि सुरेश उसका अपमान कर रहा है। शायद इसीलिये पहली बार उसने आँखें उठा कर सुरेश की ओर देखा था। बोली थी, रुपये लेकर मैं क्या करूंगी?

उसे कहने की इच्छा थी, तुम्हारा चेहरा देख कर मुझे बड़ा दुःख होता है। तुम्हारा मुरझाया चेहरा देख कर मुझे ऐसा लगता है कि बुआजी तुम्हें भरपेट खाना भी नहीं देतीं। तुम स्कूल में कुछ खरीद कर खाना। लेकिन मन की बात न कह कर सिर्फ इतना ही कहा था, अपने पास रख लो, आवश्यकतानुसार ख़र्च करना।

सुरेश के स्वर में किंचित आदेश का स्वर था। अंजली जानती थी, उसे लेकर बुआ और भतीजे में थोड़ा मतांतर हुआ है। लेकिन उसके कारण बुआजी को किसी प्रकार की शंका करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। उन्होंने अंजली को इतनी मामूली लड़की समझ रखा था कि वह सपने में भी नहीं सोच सकती थीं कि उनके भतीजे की नज़र उस पर पड़ सकती है। अंजली उन दिनों कोई

खास सुन्दर नहीं थी। वह हमेशा असहाय-सी दीखती थी। इसी प्रकार सुरेश नामक तरुण के प्रति अंजली के हृदय में एक कैसा न स्नेह उत्पन्न हो गया था।

वह सुरेश को अब पराया नहीं समझ सकती थी। जब-तब उससे मदद लिया करती। धीरे-धीरे वह सुरेश पर अपना अधिकार समझने लगी। रात में पढ़ते वक्त यदि कोई बात उसकी समझ में न आती, किसी प्रश्न का उत्तर पुस्तक में न खोज पाती, तो धीरे-धीरे दबे पाँव आकर देखती कि सुरेश क्या कर रहा है ? कभी-कभी सुरेश पढ़ते-पढ़ते सो जाता। उस समय वह उसे नहीं जगाती। मसहरी ठीक कर रोशनी बुझा देती और दरवाजा भिड़ा कर वापस चली आती। और यदि वह जगा होता, तो एक आज्ञाकारिणी छात्रा की भाँति सुरेश के सामने जा खड़ी होती। ध्यानपूर्वक सुरेश से अपना पाठ समझ कर वापस चली आती।

और इसी तरह पता नहीं क्यों कर एक दिन अंजली को क्या जो हो गया ! अब वह सब याद आने पर उसे हँसी आती है। वह समझ भी न सकी कि क्यों कर उसका डर प्यार में बदल गया।

अंजली बोली, इतना क्या सोचते हो ?

—कुछ भी तो नहीं।

—मुझे पहचानने में तुम्हें कोई कठिनाई नहीं हुई ?

—नहीं।

—इतनी आसानी से पहचान लिये ?

—आसानी से कहाँ ?

—देखते ही।

—भूलने जैसी कोई बात थी क्या ?

—क्या पता, पुरुषों का मन ठहरा।

अंजली ताने कस रही है।

सुरेश बोला, खड़ी क्यों हो ?

—बैठूंगी नहीं।

—फिर आयी क्यों ?

—तुम्हें देखने। मैं तुम्हें याद हूं या नहीं, देखने आयी।

—चमनलाल के साथ तुम्हारा कैसे परिचय हुआ ?

—कैसे परिचय हुआ न पूछ कर, यह पूछो कि शादी कैसे हुई ?

और कुछ सुनेगा सोचकर सुरेश चुप रहा।

अंजली काली पोशाक उतार कर बोली, लेकिन तुम मुझे पहचानोगे, यह मैं सोच भी नहीं सकी थी।

—क्यों ?

—मैं क्या अब वैसी ही हूँ ? मेरा रूप क्या वैसा ही है ! तुम्हारी आँखें भी क्या अब वैसी ही हैं ?

सुरेश को कहने की इच्छा थी, नहीं अब वैसा नहीं है। पहले जैसा अब कुछ भी न रहा। तुम एकदम बदल जाती; फिर भी मैं पहचान लेता। तुम चाहे जितना भी क्यों न बदल जाओ, तुम्हारी ये आँखें यानी इन दो आँखों के साथ तुम जहाँ कहीं भी जाओ, मुझे पहचानने में मदद करतीं।

सुरेश ने सिर्फ कहा, तुम जहाँ भी रहती, जिस रूप में रहती, मैं तुम्हें देखते ही पहचान लेता।

—सच !

यह 'सच' शब्द अंजली को बड़ा प्रिय था। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है, अंजली की तरह 'सच' का उच्चारण कोई नहीं कर सकता। सुरेश मन-ही-मन कष्ट महसूस कर रहा है। वह उसे प्रकट नहीं कर पा रहा है। प्रकट कर पाता तो अच्छा होता। वह कल्पना भी न कर सका था कि इस तरह यहाँ अंजली से मुलाकात होगी। ऐसा आँख-मुँह या साज-सिंगार ! फिर भी वह अंजली को नहीं कह पाता है कि अंजली तुम जाओ, मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। तुम इस तरह बैठी रहोगी, तो मुझे बड़ा कष्ट होगा।

अंजली ने पूछा, तुम कैसे हो ?

—अच्छा।

—तुम्हारी पत्नी और लड़की ?

—मजे में।

—तुम्हारे चेहरे पर अब पहले जैसा बचपना नहीं झलकता।

—उम्र भी तो हो गयी।

सुरेश ने मुँह उठा कर देखा। अंजली का एक-एक शब्द मानो व्यंग्य का तीखा तीर है अथवा अभी भी उसके हृदय में सुरेश के प्रति एक अद्‌भुत प्यार पलता है। अथवा अंजली उसे सिर्फ दुःख पहुँचाने आयी है। या वह कहना चाहती है, तुमलोगों ने तो मुझे डस्टबीन में फेंक दिया था, मैं अपने बुद्धिबल से कहाँ आ पहुँची हूँ, जरा आँख उठा कर देखो। इच्छा करने पर और भी आगे बढ़ सकती हूँ। लेकिन जानते हो सुरेश, मुझे ज्यादा आगे बढ़ना अच्छा नहीं

लगता। मैंने कभी भी आगे बढ़ना नहीं चाहा था। तुम लोगों ने मिल कर मुझे कितनी दूर फेंक दिया!

शायद इन्हीं कारणों से सुरेश अंजली से आँखें नहीं मिला पाता है। शायद इन्हीं कारणों से वह चुप बैठा है। अथवा बार-बार गिलास से पानी पी रहा है। पहाड़ की चोटियों पर या पेड़ों की फुनगियों पर सर्दी दौड़ रही है। उसे सर्दी लग रही है। हालांकि हृदय में दुःख की आग धधक रही है। वह जो भूल गया था, पहाड़ पर आने पर सब कुछ याद आ गया है।

सहसा पुरानी यादें हथौड़े की तरह उस पर चोट करने लगी हैं।

वह बोला, तुम अब जाओ अंजली, मैं सोऊँगा।

मैं तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करूँगी, सो जाओ।—अंजली ने कहा।

सुरेश अंजली के मुँह की ओर देख कर ठिठक गया। इतने दिनों बाद मुलाकात हुई और सुरेश ने एकबार भी नहीं पूछा, अंजली, तुम कैसी हो? वह एक स्वार्थी की भाँति बोल कर मन-ही-मन संकुचित हो उठा है। दरअसल उसे अन्दर से कोई बल नहीं मिल रहा है। अन्दर-ही-अन्दर वह कमजोर हो गया है। वह नहीं चाहता कि उसकी कमजोरी पकड़ी जाय। लेकिन अंजली के मुँह की ओर देख कर उसे कुछ पूछने की इच्छा नहीं हुई। नहीं वह कुछ बोलना नहीं चाहता; बल्कि वह चाहता है कि अंजली थोड़ी देर और बैठे, बातें करे और उसके व्यथा क्लिष्ट मुखमण्डल पर पुरानी स्मृतियाँ, बाल्यावस्था की मधुर स्मृतियाँ फूट पड़ें। उसके हृदय में एक अजीब-सी टीस पैदा होने लगी।

—बैठ जाओ न अंजली। कैसी हो?

—मजे में हूँ सुरेश।

—तुम्हारा सुखी रहना मुझे अच्छा लगता है।

—मैं दुःखी रहूँ, तुम नहीं चाहते, यही न?

—हाँ, सुखी रहने की अपेक्षा। पता नहीं आज मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि तुम्हारे सुखी रहने पर मैं भी सुखी रहूँगा।

—चमनलाल मुझे कोई तकलीफ नहीं देता; बल्कि मेरी ही फरमाइशें पूरी करने में बेचारा परेशान रहता है।

इतना कह कर वह कहकहा मार कर हँसने लगी। मानो उसे जो सुरेश ने बैठने कहा है, उसके सुखी रहने से सुरेश को खुशी होगी, इसलिये वह इतने जोरों से हँस पा रही है।

अंजली बोली, कितनी बार सोचा है, तुम्हें एक पत्र लिखूँ।

—फिर लिखा क्यों नहीं ?

—पता कहाँ से पाती ?

—बुआ जी से।

—तुम्हारी बुआजी मुझे बहुत प्यार करती थीं न !

—प्यार-व्यार की बात नहीं हो रही है। पता माँगती तो जरूर मिलता।

अंजली दुःख की हँसी हँसी।

सुरेश भली-भाँति जानता है कि वैसी घटना घटने के बाद पता माँगने का मुँह अंजली का नहीं था। सुरेश भी उस समय अपना पता नहीं दे सकता था। और दो साल पहले इस स्थिति में पता माँगा भी नहीं जा सकता। उस घटना के बाद वह बुआ के घर फिर कभी नहीं गया। हाँ, उसकी शादी में फूफाजी आये थे। सुरेश तब तक प्रतिष्ठित हो चुका था, अच्छी नौकरी करता था, चाहता तो अनायास ही अंजली की खोज-खबर ले सकता था। लेकिन आश्चर्य है, अंजली की उसे याद तक न आयी। अभी अंजली एक जुगनू की तरह जल रही है। सुरेश इतना खो गया है कि वह क्या बोल रही है या उसे क्या बोलना चाहिये, एकदम भूल गया है। वह और कुछ न बोला। परिणामस्वरूप दोनों चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

—सपने में भी नहीं सोचा था कि हम दोनों इस तरह मिलेंगे सुरेश।

—तुम चाहती तो न मिलती।

—अब मैं यही सोच रही हूँ।

—चमनलाल तुम्हारे बारे में कई बार बता चुका है। यदि मैं जानता होता कि निर्मला तुम्हीं हो, तो नहीं आता।

—क्यो नहीं आते सुरेश ?

—मिलने पर दुःख बढ़ता है। अभी यह महसूस कर रहा हूँ।

सुरेश को लगा कि वह कुछ ज्यादा भावुक बनता जा रहा है। पुरुषों में इतनी भावुकता अच्छी नहीं। मन-ही-मन खुद को सख्त बनाने के लिये बोला, जाओ, सो जाओ। काफी रात हो गयी, हाथ बढ़ाने पर तुम्हें पास न पाकर चमन गुस्सा जायेगा।

अंजली के तन-बदन में मानो हजारों कांटे चुभने लगे हैं। उत्तर में वह बहुत कुछ कह सकती थी। लेकिन नहीं, सुरेश को आराम की जरूरत है। उठती हुई वह बोली, दो-चार दिन तो रहोगे ही ?

—नहीं। काम होने पर कल ही चला जाऊँगा।

—और काम न होने पर ?

—काम न होने पर क्या होगा, अभी नहीं कह सकता।

अंजली फिर बोली, "तुम इस तरह यहाँ आओगे, मैं कल्पना भी न कर सकी थी।

सुरेश बोला, "चलो अच्छा ही हुआ, मुलाकात हो गयी।"

—यानी तुम मुझे याद करते थे ?

सुरेश की समझ में न आया कि वह क्या जवाब दे। शादी के बाद आदमी बहुत कुछ भूल जाता है। यह कहना गलत होगा कि शादी के बाद वह अंजली को भूल गया था। उसकी पत्नी सुन्दरी है। शादी के दिन की लीला का चेहरा आज भी उसे याद है। कितना चमक रहा था उसका चेहरा। रंग-बिरंगे फूलों से कोहबर सजाया गया था। रंग-बिरंगे बल्ब जल रहे थे। जरीदार बनारसी साड़ी में लीला गजब ढा रही थी। लाल चप्पल। कपाल में सिन्दूर का टीका। माँग में सिन्दूर की लम्बी रेखा। उस रात लीला अनमोल-सी प्रतीत हो रही थी। आँखों के दोनों ओर काजल की लम्बी रेखा। लीला की आँखें झुकी हुई थीं। उसे केवल लीला का मुँह देखने की इच्छा हो रही थी। भीड़ में वह ठीक से देख नहीं पाया था। पत्नी की ओर बार-बार देखने से लोग बेशर्म कहेंगे। यह सोच कर मन-ही-मन उसे डर लग रहा था कि किसी समय उसने जो अंजली नामक लड़की से प्यार किया था, उसका मुँह देखने से अगर किसी को यह पता चल जाय ! खैर, लीला तक को पता न चला। यही कारण है कि लीला अपने मैके में एक रात भी नहीं बिता सकती। लीला को ऐसा लगता है कि सुरेश उसके बिना बेचैन है। लीला के बिना सुरेश एक क्षण भी नहीं रह पाता। पलंग पर जाने के बाद भी जब तक लीला नहीं आती, वह सो नहीं पाता। लीला के आते ही वह उसके पास सो जाता है। इस निर्जन रात में वह और अंजली आमने-सामने बैठे हैं। मन बड़ा अन्यमनस्क हो उठा है। अंजली को देखने के बाद लीला याद नहीं आती। पता नहीं अन्दर क्या हो रहा है। वह चाहता है कि अंजली चली जाय। अंजली के जाने पर वह सचमुच में खुश होगा।

—अंजली तुम्हें सर्दी नहीं लगती ?

—नहीं।

—लेकिन मुझे जोरों की लग रही है।

—एक कंबल ला देती हूँ।

—कोई जरूरत नहीं। कंवल है।

—तब सर्दी की बात क्यों करते हो ?

—और कोई बात मुझे अच्छी नहीं लगती।

—यहाँ कुछ ज्यादा सर्दी है।

—महसूस कर रहा हूँ।

—तुम्हें मैं कैसी लग रही हूँ सुरेश ?

—तुम काफी सुन्दर हो गयी हो।

—पहले से भी ?

—हाँ।

—झूठ बोलते हो।

—झूठ बोलने से लाभ ?

—लाभ-हानि नहीं समझती। मैं पहले जैसी सुन्दर होती, तो तुम्हारे साथ चल देती।

—तुम अभी भी कहीं जाना चाहती हो ?

—मनपसंद आदमी मिलने से सभी जाना चाहते हैं।

—यानी चमन लाल तुम्हें पसंद नहीं ?

—नहीं बताऊंगी।

—क्यों ?

—कुछ बोलना ठीक न होगा।—कह कर अंजली ने खिड़की से झांक कर कुछ देखा। सदर दरवाजा दूर है। दो दरवान पहरे पर हैं। एक सोता है, तो दूसरा जग कर पहरा देता है। चमन के दरवाजे के पास सफेद रोशनी फैली हुई है। रोशनी जली होने पर वह समझ सकती है कि दरवाजा खुला है या बंद। कोई देख ले, तो बड़ी बदनामी होगी; अंजली ने ऐसा ही कुछ अपने चेहरे पर प्रकट करना चाहा। हालांकि वह जानती है कि चमन क्या चाहता है।

सुरेश बोला, सुबह मैं नहीं जा रहा हूँ। तुम अब जाओ, मैं सोऊंगा। सुबह फिर मिलेंगे। मानो इस बार वह दरवाजा बंद करने के लिये उठ खड़ा हुआ।

अंजली बिना कुछ कहे सहसा चल दी।

सुरेश दरवाजा बंद करने गया; पर कर न सका। खड़े-खड़े देखने को आँखें ललचा रही थीं। जब तक अंजली फौवारा पार कर सफेद डोम जैसी रोशनी के नीचे जा खड़ी नहीं हुई, तब तक वह दरवाजा खोले खड़ा रहा। झुटपुटे

आराम से अंजली ने दो एक बार याद कर दिये होंगे, हाथ के इशारे से दरवाजा बंद करने को कहा है, सोने में गहरा रहने को मना किया है; फिर भी पता नहीं किस कारण से दरवाजा खोले वह पड़ा रहा।

कब तक वह दरवाजा खोले पड़ा रहा, पता नहीं। मैं पहले जैसी सुन्दर होती, तो तुम्हारे साथ चल देती।—अंजली की यह बात सुन कर वह कुछ अन्यमनस्क हो गया था। अंजली के बारे में वह इतना ही जानता है कि उसकी पहली शादी एक डेंटिस्ट से हुई थी। वह अब मरा या जिन्दा है, उसे कुछ पता नहीं। यहाँ अंजली चमन लाल की पत्नी है। चमन लाल का कारोबार काफी फैला हुआ है। कई कल-कारखाने हैं। वह भिन्न-भिन्न ढंग से अपना भविष्य बना रहा है। अपनी इस नवीन इमारत, आउट-हाउस, पेपर मिल आदि के कारण वह इस इलाके में धन कुबेर समझा जाता है। और खास कर पहाड़ के ऊपर इतनी बड़ी इमारत, पानी का फौवारा! नीचे देखने में उसे कितना डर लगता है! उसने मन-ही-मन निश्चय किया, एक दिन से ज्यादा यहाँ नहीं रहेगा। इसी समय में ही वह अपना काम पूरा कर लेगा।

अंजली के बारे पर पता नहीं क्यों वह यहाँ पड़ा-पड़ा यह सब सोच रहा है! चमन शायद अंजली को निर्जीव ही समझता है। कलकत्ता पहुँचते ही कहता है, साहब, एकबार मेरे घर आइये न। आपके आने से मजा आ जायेगा।......बार-बार आग्रह करने पर भी सुरेश नहीं आया है। इस बार भी सुरेश नहीं आता। फिर भी यहाँ और किस तरह अकारण ही कम्पनी का नुकसान हो सकता है, सोच कर चला आया है। चमन लाल से डीलर टेन्डर के बारे में बातचीत कर और डिस्काउंट की दर निश्चित कर, वह जितनी जल्द हो सके यहाँ से चल देगा। क्योंकि वह समझ रहा है, ये पहाड़, पहाड़ पर बना संगमरमर का विशाल महल, नीचे के टेढ़े-मेढ़े रास्ते और चारों तरफ लहलहाते रंग-बिरंगे फूल-पौधे उसे अत्यधिक भावुक बना सकते हैं। क्या [illegible] मैं वैसा हो जाय!

—कोई जरूरत नहीं। कंबल है।

—तब सर्दी की बात क्यों करते हो ?

—और कोई बात मुझे अच्छी नहीं लगती।

—यहाँ कुछ ज्यादा सर्दी है।

—महसूस कर रहा हूँ।

—तुम्हें मैं कैसी लग रही हूँ सुरेश ?

—तुम काफी सुन्दर हो गयी हो।

—पहले से भी ?

—हाँ।

—झूठ बोलते हो।

—झूठ बोलने से लाभ ?

—लाभ-हानि नहीं समझती। मैं पहले जैसी सुन्दर होती, तो तुम्हारे साथ चल देती।

—तुम अभी भी कहीं जाना चाहती हो ?

—मनपसंद आदमी मिलने से सभी जाना चाहते हैं।

—यानी चमन लाल तुम्हें पसंद नहीं ?

—नहीं बताऊंगी।

—क्यों ?

—कुछ बोलना ठीक न होगा।—कह कर अंजली ने खिड़की से झांक कर कुछ देखा। सदर दरवाजा दूर है। दो दरवान पहरे पर हैं। एक सोता है, तो दूसरा जग कर पहरा देता है। चमन के दरवाजे के पास सफेद रोशनी फैली हुई है। रोशनी जली होने पर वह समझ सकती है कि दरवाजा खुला है या बंद। कोई देख ले, तो बड़ी बदनामी होगी; अंजली ने ऐसा ही कुछ अपने चेहरे पर प्रकट करना चाहा। हालांकि वह जानती है कि चमन क्या चाहता है।

सुरेश बोला, सुबह मैं नहीं जा रहा हूँ। तुम अब जाओ, मैं सोऊंगा। सुबह फिर मिलेंगे। मानो इस बार वह दरवाजा बंद करने के लिये उठ खड़ा हुआ।

अंजली बिना कुछ कहे सहसा चल दी।

सुरेश दरवाजा बंद करने गया; पर कर न सका। खड़े-खड़े देखने को आँखें ललचा रही थीं। जब तक अंजली फौवारा पार कर सफेद डोम जैसी रोशनी के नीचे जा खड़ी नहीं हुई, तब तक वह दरवाजा खोले खड़ा रहा। झुटपुटे

प्रकाश में अंजली ने दो एक बार पलट कर उसे देखा, हाथ के इशारे से दरवाजा बंद करने को कहा है, सर्दी में खड़ा रहने को मना किया है; फिर भी पता नहीं किस लालच से दरवाजा खोले वह खड़ा रहा।

कब तक वह दरवाजा खोले खड़ा रहा, पता नहीं। मैं पहले जैसी सुन्दर होती, तो तुम्हारे साथ चल देती।—अंजली की यह बात सुन कर वह कुछ अन्यमनस्क हो गया था। अंजली के बारे में वह इतना ही जानता है कि उसकी पहली शादी एक प्रेसमैन से हुई थी। वह मर गया या जिन्दा है, उसे कुछ पता नहीं। यहाँ अंजली चमन लाल की पत्नी है। चमन लाल का कारोबार काफी फैला हुआ है। कई कल-कारखाने हैं। वह भिन्न-भिन्न ढंग से अपना भविष्य बना रहा है। अपनी इस सफेद इमारत, आउट-हाउज, पैंकिंग मिल आदि के कारण वह इस इलाके में धन कुबेर समझा जाता है। और खास कर पहाड़ के ऊपर इतनी बड़ी इमारत, पानी का फौवारा! नीचे देखने में उसे कितना डर लगता है! उसने मन-ही-मन निश्चय किया, एक दिन से ज्यादा यहाँ नहीं रहेगा। इतने समय में ही वह अपना काम पूरा कर लेगा।

अंजली के जाने पर पता नहीं क्यों वह यहाँ खड़ा-खड़ा यह सब सोच रहा है! चमन शायद अंजली को निर्मला ही समझता है। कलकत्ता पहुँचते ही कहता है, साहब, एकबार मेरे घर आइये न। आपके आने से मजा आ जायेगा।······बार-बार आग्रह करने पर भी सुरेश नहीं आया है। इस बार भी सुरेश नहीं आता। फिर भी कहाँ और किस तरह अकारण ही कम्पनी का नुकसान हो सकता है, सोच कर चला आया है। चमन लाल से डैमेज टान के बारे में बातचीत कर और डिसकाउंट की दर निश्चित कर वह जितनी जल्द हो सके यहाँ से चल देगा। क्योंकि वह समझ रहा है, ये पहाड़, पहाड़ पर बना संगमर्मर का विशाल महल, नीचे के टेढ़े-मेढ़े रास्ते और चारों तरफ लहलहाते रंग-बिरंगे फूल-पौधे उसे अत्यधिक भावुक बना सकते हैं। क्या पता, अन्त में क्या हो जाय!

दरवाजा बंद करते समय उसने देखा, सफेद रोशनी बुझ गयी है, सिर्फ फौवारा के पास एक पीली-सी रोशनी जल रही है। दरवाजा बंद कर पलंग पर लेटते वक्त उसे लगा कि खिड़की हिल रही है। अंजली क्या फिर किसी दूसरे रास्ते से आ रही है? क्या उसने जाकर देखा है कि चमन सोया हुआ है और चमन को सोया देख कर फिर वापस आ रही है! उसने ऐसा ही सोच कर खिड़की खोल कर देखा, नहीं, कोई नहीं है। उसके मन में एक अजीब-सा डर

सिर उठाये खड़ा है। किसी ने मानो खिड़के पर दस्तक दी हैं। हवा से भी ऐसा हो सकता है। हवा के कारण खिड़की हिल सकती है। अथवा इस अपरिचित जगह में यदि कोई भौतिक घटना घटी हो ? अंजली के साथ यहाँ मुलाकात होना भी क्या एक वैसी ही घटना नहीं है ?

उसका डर बढ़ता जा रहा है। अंजली को वह पहचानता है। बार-बार बालकोनी में अंजली का चेहरा अगर उसे दीख जाय या यह अगर कोई भूतहा काण्ड हो जाय ? पहली रात। चमन, उसकी स्त्री, और इसी रात चमन के व्यवहार में कहाँ क्या अस्वाभाविकता रह सकती है—इस पर विचार करने पर उसे लगा कि चमन ने कोई अस्वाभाविक व्यवहार नहीं किया है। बल्कि अंजली ही एक काली चादर ओढ़ कर इस कमरे में आयी थी। ठीक बुरका की तरह उसने उस चादर का इस्तेमाल किया है। झुटपुटी चाँदनी में पेड़ के नीचे खड़ा-खड़ा वह पहले डर गया था। क्योंकि एक अपरिचित युवती को इस तरह कमरे में घुसते देख वह डर गया था।

खिड़की से बाहर कूद कर पेड़ के नीचे खड़े होते ही उसने यह घटना देखी थी। अंजली है या नहीं पहचानने में कठिनाई हुई थी, विश्वास करने में दुःख हुआ था। अन्दर आने पर वह सब कुछ समझ सका था। अब लगता है, अंजली को भगा कर मानो उसने मूर्खता की है। उसे सब कुछ जान लेना चाहिये था। यहाँ वह किस प्रकार आयी। दूसरे तरीके से भी आ सकती है। यदि आये तो उसका भय और भी बढ़ेगा। वह किसी तरह भी इस घटना को स्वाभाविक नहीं मान पाता है। यहाँ आते ही चमन के साथ डैमेज-कंटेनर का मसला तय कर पाता, तो सारा झमेला ही खत्म हो जाता। अब उसे अफसोस हो रहा है।

सुरेश को अपने आप पर काफी गुस्सा आ रहा था। चमन के घर पर उसे उसकी पूर्व प्रेमिका अंजली मिल जायेगी, यह सोच कर वह यहाँ नहीं आया था। मनुष्य के रूप में सुरेश ने हमेशा सच्चरित्र रहना चाहा है। सिर्फ एक जगह अभी भी एक कांटा खच से चुभ जाता है। उसके समक्ष यदि घटना भौतिक स्वप्न हो जाय, तब अच्छा हो। हाँ, बहुत अच्छा हो। क्योंकि वह अब सोच नहीं पा रहा है। लेकिन उसी समय सुरेश को याद आया, अंजली ने उसे चिकोटी काटी थी। बोली थी, मैं भूतनी नहीं सुरेश साहब, अंजली हूँ। मुझे देख कर डरने से कैसे कर चलेगा !

रेकार्ड प्लेयर खुला पड़ा था। अंजली ने सारे रेकार्ड संजो कर रखे।

सुरेश साहब के कमरे में जाने के पहले उसने अपने सारे प्रिय गीत बजाये थे। एक बार वह और सुरेश भाग कर पिक्चर देखने गये थे। शायद उसी पिक्चर के रेकार्ड उसने बजाये थे। कितने पुराने गाने हैं; फिर भी ये गाने उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं। एक दिन वह और सुरेश रेलिंग के पास खड़े थे। एक चनाचूर वाला जा रहा था। बुआजी घर पर नहीं थीं। दोनों चनाचूर वाले को जाते देख रहे थे। सुरेश का उस पर विशेष ध्यान नहीं था। पड़ोस में रेडियो बज रहा था। सुरेश मानो गाना भी नहीं सुन रहा था। वह पैजामा और हाफशर्ट में था। अंजली एक मामूली साड़ी पहने थी। साड़ी छोटी थी। सुरेश उसकी ओर देख नहीं सकता था।

अंजली को वह गाना अभी भी याद है। पड़ोस के घर की वहू लेटी हुई है। पति कुर्सी पर बैठा पर्दा खींच देता है। पान से दोनों होंठ लाल हैं। दोनों की दो-चार बात सुनायी पड़ती है। आश्चर्य है, अंजली उस दिन सुरेश को लेकर वैसा ही एक सपना देख रही थी। वह चाहती थी कि सुरेश कुछ बोले। कहे, जाओ तो अंजली, चनाचूर वाले को बुला लाओ।

अंजली इससे ज्यादा आशा नहीं कर सकी थी। सिर्फ जब सपने देखती है वही गाना याद हो आता है—पड़ोसी घर की बहू अपने पति को पास बैठा कर ग्रामोफोन पर जो गाना सुना करती थी। उसने कई बार देखा है, दोनों चुपचाप एक दूसरे के सामने बैठे हैं। हवा में पर्दा उड़ते ही अंजली की नजर उस घर पर जा पड़ती। वह नीचे के एक कमरे में रहती थी। उसके पास एक बुलडाग रहता था। अमिता बहन का बुलडाग। अमिता बहन बार-बार कानपुर से लिखा करती, पिताजी, टाइगर के भात में ज्यादा हल्दी नहीं दीजियेगा। सप्ताह में तीन बार बुआ मछली को दीजियेगा। फूफाजी अमिता बहन से कुत्तों के बारे में ज्यादा जानते हैं; फिर भी वह अपनी हर चिट्ठी में हिदायत लिख भेजती थीं। कुत्ता के कमरे के बगल ही पूजा-घर था और उसके बाद था एक पृथक फ्लैट। उसमें एक मद्रासी रहता था।

अंजली पलंग पर जा बैठी। पता नहीं उसे यह सब क्यों याद आ रहा है। जरा-सा लचक कर उसने सारे रेकार्ड उलट-पलट कर देखे। देखते-देखते उसे याद हो आया, उस दिन सुरेश ने पूछा था, तुम्हारे स्कूल में कब से छुट्टी हो रही है?

हुं, चनाचूर वाला को बुलाने कहता, तो कोई बात थी, पूछ रहा है, स्कूल में कब से छुट्टी होगी? जवाब दिया, नहीं जानती।

—बुआजी के साथ तो तुम भी जा सकती थी।

—कहाँ ?

—तारकेश्वर।

—मुझे अच्छा नहीं लगता।

सुरेश आँखें तरेर कर बोला था, तुम्हें अच्छा लगे या बुरा, इस घर में इसकी परवाह भला करता कौन है !

अंजली ने कोई जवाब नहीं दिया था। उसे सुरेश के सामने उस तरह खड़ा रहना अच्छा नहीं लग रहा था। वह यहाँ आती ही नहीं। उसे सुरेश ने बुलाया है। कभी-कभार ऐसा होता है। जिस किसी समय सुरेश बुला भेजता है। घर पर अन्नदा है। हुँ, अन्नदा से बुला भेजा है, और अब गुमसुम खड़ा है। सोचा था, चनाचूर वाला को पास बुला कर अंजली से चनाचूर खरीद लाने कहेगा। वह बड़ा ही आलसी किस्म का आदमी है। हाँ, अंजली के चनाचूर लाने पर वह अकेले नहीं खाता। उसे सुरेश अपनी चारपाई पर बैठने कहता और दोनों मिल कर चनाचूर खाते। कभी-कभी वह बोल उठता, बुआजी तुम्हें बड़ी तकलीफ देती हैं।

—नहीं तो।

—हुँ, घर में एक कुत्ता पाल रखा है और उसकी देख-माल तुम्हें करनी पड़ती है।

—मैं नहीं करती, तो कोई और करता।

किसी-किसी दिन सुरेश सहसा उसके कमरे में आ घुसता, आ गया अंजली, बुआजी पूजा-घर में हैं।

अंजली कुछ घबरा जाती। क्योंकि बुआजी को अपने मैके पर बड़ा गर्व था। मैके की चर्चा उठते ही वह सब कुछ भूल जातीं। मैके वालों की प्रशंसा करते नहीं अघातीं। अंजली की दुर्दशा के लिये उसके पिता जिम्मेवार हैं। अंजली की माँ बुआजी की अपनी बहन नहीं थी। दूर के रिश्ते की ममेरी बहन थी। ममेरी बहन की लड़की के लिये वह और क्या कर सकती हैं। अंजली को इसके लिये कोई शिकायत नहीं थी।

वह अपने आप से बोली, सुरेश साहब, तुम्हीं सारी बर्बादी की जड़ थे। —कह कर अंजली ने बेड स्विच दबा कर एक नीला बल्ब जलाया।—सुरेश साहब, तुम्हीं ने मुझे सपना देखना सिखाया।

अंजली दुःख के दिन नीली रोशनी जलाती है। आज उसे बड़ा दुःख है।

वह लेटी है। सुन्दर एक लाल रंग की साड़ी बदल ली है। एड़ी तक साड़ी खींच कर सोने से क्या होगा। सब कुछ मानों उलट-पलट जाता है—उसका सब कुछ उलट-पलट रहा है। वह किसी चीज का खयाल नहीं कर रही है। अन्दर की आग फिर से जल उठी है। उसकी समझ में अभी कुछ भी नहीं आ रहा है कि वह क्या चाहती है। सब कुछ उसके हाथ में है। इच्छा हो, तो सुरेश से वह अपनी इच्छा पूरी कर सकती है। चमन यही चाहता है। तीसरे पहर से ही चमन उसे परेशान किये था। चमन का एक बहुत बड़ा नुकसान बच सकता है। सुरेश साहब कम्पनी की ओर से आये हैं। ईमानदार आदमी हैं। वह जो फैसला करेंगे, कम्पनी मान लेगी। वह चाहे तो सुरेश साहब से बहुत कुछ करा सकती है। लेकिन पहला प्यार! कहीं वह बंध-सी गयी है। सुरेश उसे कभी-कभार कहता, अंजली, तुम हमेशा घर में क्यों पड़ी रहती हो? थोड़ा घूमो-फिरो। तीसरे पहर पार्क जा सकती है। स्कूल से आने के बाद पता नहीं इस अन्धेरे कमरे में पड़ी-पड़ी तुम क्या करती रहती हो!

मैं कुछ भी नहीं करती थी सुरेश साहब। तुम्हारे सामने बाहर जाते मुझे शर्म आती थी। और किसी तरह की शर्म मुझे उस घर में नहीं थी। बुआजी मुझे ज्यादा कपड़े नहीं देती थी। खर्च बढ़ जाता। तुम तो जानते हो सुरेश, लड़कियों की लाज-शरम कपड़ों में ही सीमित है। इसलिये मैं हमेशा तुम्हारी आँखों से दूर-दूर रहना चाहती थी। तुम ने देखा होगा, जब कभी सीढ़ी के पास तुम पर नजर पड़ती, मैं कितना सिमट जाती थी। मुझे और कोई शर्म नहीं थी, बस, तुम्हारे सामने वैसी पोशाक में जाने से शर्माती थी।

लेकिन अब हँसी आती है। पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा क्या-क्या सोचती रहती थी। शरीर को एक दुर्लभ वस्तु समझती थी। और चाँदी कि डिबिया में रखी कीमती अंगूठी की तरह मैं अपने आप को छिपा कर रखना चाहती थी। और कभी-कभी मुझ में विचित्र इच्छा जन्म लेती थी। जैसे एक दिन जोरों की बारिश हो रही थी, रास्ते पर पानी जम गया था और मुझे इच्छा हो रही थी कि तुम्हें साथ लेकर कहीं चल दूं। ऐसी ही और भी कितनी ही इच्छाएँ मुझे व्याकुल किये रहती थीं। जब तुम चुपचाप बिस्तर पर पड़े रहते या सोते होते, तब मेरी इच्छा होती कि चुपचाप बैठी-बैठी मैं तुम्हारे बालों में उँगलियाँ फेरूं। जब तुम कॉलेज से वापस आते और बुआजी तुम्हारे कमरे में आमलेट और चाय पहुँचातीं, उस समय मेरी इच्छा होती कि आमलेट और चाय मैं तुम्हें दे आऊँ। जब कभी जोरों की बारिश होती रहती, मेरी इच्छा होती कि खिड़की

पर तुम्हारी बगल में खड़ी-खड़ी मैं उस दिन वाला गाना सुनती रहूँ। लेकिन सुरेश साहब मैंने अपनी कोई भी इच्छा तुम्हारे सामने प्रकट नहीं की थी।

जिस दिन तुम मेरे कारण बुआजी से झगड़ पड़े थे, वह दिन मुझे सबसे ज्यादा याद आता है। शायद मैं सब कुछ भूल जाऊँगी; लेकिन सुरेश साहब उस दिन तुमने मुझे जो कुछ दिया, तुम नहीं जानते। आँखें बन्द करते ही मुझे लगता है, कहीं कोई नहीं है, मेरे हृदय की गहराइयों में सिर्फ तुम हो, तुम। तुम्हारा वह दीप्त मुखमण्डल मैंने और कभी नहीं देखा। तुम्हारे चेहरे पर प्यार और ममता का सागर उमड़ रहा था। मैं अपने कमरे में किसी किताब पर औंधी पड़ी थी। मेरी पीठ पर ब्लाउज फटा हुआ था और पीठ नंगी थी। वह ब्लाउज पहन कर कहीं जाया नहीं जा सकता। देखकर तुम चीख पड़े थे। तुमने अपनी बुआ को वंश का गुण-गान करने मना किया था, तुमलोग कंजूस प्रकृति के आदमी नहीं हो। तुम्हारे कण्ठ की आकुलता मुझे बार-बार याद आती है। अच्छा सुरेश, आँखें बन्द करते ही आज भी मुझे वह दिन क्यों याद आता है! और जानते हो, उस दिन से मैंने तुम्हें फिर कभी पराया नहीं समझा। शाम के समय अन्नदा ने दो साड़ियाँ लाकर दीं। हालांकि थीं तो सस्ती; पर तुम नहीं जानते मेरे लिये कितनी अनमोल थीं। आदमकद शीशे के सामने खड़ी होकर सोचती थी, हम दोनों एक साथ कैसे दिखेंगे! या हम दोनों साथ-साथ चलें, तो कैसे दिखेंगे। मुझे बड़ा बुरा लग रहा था। तुम इतने सुन्दर हो, मैं यदि थोड़ा और भी सुन्दर होती! मेरा शरीर अगर और थोड़ा भरा होता! दरिद्रता की लज्जा में मेरा उपेक्षित; पर उत्कण्ठित नारीत्व तब तक विकासोन्मुख नहीं हुआ था। तुम्हारी दृष्टि में मैं बड़ी दुबली थी। लेकिन अब!

आश्चर्य! अंजली अचानक उठ क्यों पड़ी! सारी बत्तियाँ जला दीं। खिड़की बन्द कर दिये। जेवर और कपड़े उतार कर शीशे के सामने जा खड़ी हुई। गर्वित स्वर में अब सुरेश से कहेगी, देखो मैं वही लड़की हूँ। उस समय की अंजली और आज की अंजली में कहीं कोई मेल है? भरा पूरा शरीर, सुडौल जाँघें, मांसल भुजाएँ और गदरायी छातियाँ! तुम यदि मुझे अभी देख पाते! मैं जानती हूँ, तब तुम अपने जीवन के सबसे बड़े सत्य को तिलांजलि दे देते। तुम रिश्वत नहीं लेते, तुम सत्यवादी हरिश्चन्द्र हो, तुम्हारे कारण ही कम्पनी का इतना नाम है। मैं क्षण भर में सब कुछ मिटा सकती हूँ। चमनलाल यही चाहता है। वह चाहता है कि मैं तुम्हारे पास बैठूं, तुम्हारा आदर-सत्कार करूँ। जिस तरह वह मुझे लेकर जहाँ-तहाँ घूमता रहा है, मुझे भुना कर मोटी-

मोटी रक़म का लाइन्सेंस निकाला है, ठीक उसी तरह आज भी वह चाहता है कि वह तुम से मेरी पूरी-पूरी कीमत वसूल कर ले। क्षण भर चुप रह कर फिर अपने आप से बोली, बहुत ज्यादा भाषण दे रही हूँ।

और जानते हो सुरेश साहब, सुना है, चमनलाल की पत्नी है। उसने अपनी पत्नी को सती-साध्वी बना कर रखा है। उसके पेट में इतनी चर्बी है कि तुम चिराग जला कर भी प्यार करने की कोई जगह नहीं ढूंढ पाओगे। उसका सारा शरीर एक जैसा है। उसे देखने पर तुम्हें उबकाई आयगी। जानते हो, फिर भी चमन समाज में उसका परिचय अपनी पत्नी कह कर देता है। चमन उँगलियों पर गिन कर बता सकता है कि उसके साथ उसने कितनी रातें बितायी हैं। देखते नहीं, चमन खुद भी कैसा हो गया है। रुपया, सिर्फ रुपया। खड़े बाल, लाल-लाल आँखें, काला-कलूटा ठिगना कद। उसे देखने से डर लगता है; पर है बड़ा भला, कापुरुष होने पर जैसा होता है। तुम्हें पता है सुरेश साहब, मेरे पास जो कुछ है, तुम्हारे सात पुरुखों में न होगा। जो कुछ देख रहे हो, सब कुछ मैं अपने नाम लिखा सकती हूँ। हाथी के दांत के पलंग पर मैं सो सकती हूँ। आज देहरादून, कल पूना, परसों खजुराहो, जब जहाँ जी चाहे घूम सकती हूँ। मैं अब सब कुछ कर सकती हूँ, मेरे लिये अब कुछ भी दुर्लभ नहीं है। यौवन की हर सामग्री भरी पड़ी है। तुम्हें सब कुछ दिखाने की इच्छा होती है; पर पता नहीं मेरा मन मुझे बार-बार यह क्यों कहता है कि तुम्हें दिखाने पर मैं तुम्हारी नजरों में छोटी हो जाऊँगी।

अंजली अपने पलंग पर वापस आ गयी। कपड़े और जेवर ठीक से पहनना भूल गयी है। सर्दी लगने के कारण एक हरे रङ्ग का कम्बल ओढ़ लिया। दोनों घुटने छाती से सटाकर पड़ी रही। शायद उसे जोरों की सर्दी लग रही है। लगता है, वह बच्चों की तरह लेटी-लेटी सिसकियाँ भर रही है।

नीली रोशनी में कमरे की हर चीज आकर्षक हो उठी है। कमरे के वातावरण में एक अजीब-सी रौनक है। पलङ्ग की पालिश पर नीली रोशनी फिसल रही है। अंजली के कोमल पाँवों में आलता झिलमिला रहा है।

सुबह-सुबह जब वह आया था, याद नहीं उसी समय या उसके थोड़ी देर बाद बालकोनी पर खड़ी हो कर उसने जो देखा था, देख कर भी विश्वास नहीं कर पा रही थी। पहचानने में भूल भी तो हो सकती है, सुरेश ही जो सुरेश साहब है, यह भला कौन कह सकता है! उसे किसी तरह भी विश्वास नहीं आ रहा था। तीसरे पहर वह चाय पर नहीं गयी थी, सुरेश साहब, अगर सुरेश ही

निकल जाय ? यह क्या, सुरेश साहब तो सुरेश ही निकला। उसके इस जीवन के बारे में जान कर सुरेश को घृणा होगी। वह सुरेश को अपना चेहरा दिखाना नहीं चाहती; पर सुरेश से बिना मिले रह भी नहीं सकती। एक अजीब-सी परेशानी है। एक अजीब-सा दर्द है जो रह-रह कर उसे तड़पा देता है। काश, सुरेश न होकर वह कोई और होता !

और रात में बुरक़ा जैसी काली चादर लपेट कर वह सीधे सुरेश के कमरे में जा उपस्थित हुई। सुरेश से उसे बहुत कुछ कहना था। सीधी-सादी बात है, वह क्या करती है, खुद ही नहीं जानती। बस, एक सनक सवार होती है और जो जी में आता है, कर गुजरती है। अभी जो कुछ सोचती है, बाद में याद नहीं रख पाती। ऐसा क्यों हुआ ? कहीं पागल तो नहीं हो जायगी ?

अंजली ने उठकर बत्ती बुझा दी।

आँखें बहुत जल रही हैं। सारी रात उसने आँखों में काटी है। सिर्फ कमरे में चहलकदमी करती रही है। कभी-कभी लगता कि जोरों की गर्मी लग रही है, पसीना आ रहा है। कभी-कभी लगता कि जोरों की सर्दी पड़ रही है, सर्दी में वह जम जायेगी। वह मानो आत्म-रक्षा के लिये इस एयरकंडिशन कमरे में बंद है, कहीं बाहर नहीं जा पा रही है। वह सारी रात इसी कमरे में बंद रहेगी। एक समय उसे ऐसा लगा कि वह घुटन भरे अन्धेरे में खड़ी है। इस तरह घुटन भरे अन्धेरे में रहने से उसे बड़ा डर लगता है। मानो कोई उसे गला घोंट कर मारने आ रहा है। उसका प्रेसमैन पति गोविंद गला घोंट कर उसकी हत्या करने आ रहा है ! उसने झटपट खिड़की खोल कर देखा, सुबह हो गयी है। नीचे पाइन का जङ्गल कुहासा में डूबा हुआ है। आकाश का रंग नीला है। पहाड़ी लड़कियाँ पीठ पर टोकरी बांधे बाजार जाने को निकल पड़ी हैं।

हरे-भरे पेड़-पौधों और प्रभातकालीन मनोरम शान्त प्रकृति को देख अंजली पिछली रात को एकदम भुला देना चाहती है। ठंढी हवा अभी कितनी मधुर लग रही है ! दरवाजा खोल कर वह बाहर बरामदे में आ गयी। देखा, सुरेश साहब का कमरा खुला है। काफी नीचे वह अकेले ही पहाड़ी रास्ते पर टहल रहा है। पता नहीं सुरेश के लिये अञ्जली का मन उदास क्यों हो गया।

समन ने उठ कर देखा, रोज की तरह आज भी निर्मला तड़के ही उठी है। एक रैपर ओढ़े वह चुपचाप बालकोनी पर खड़ी है। इस तरह और इस सुबह के

समय चुपचाप खड़ी रहने वाली लड़की निर्मला नहीं है। इस घर से निर्मला को बड़ा प्यार है। सुबह होते ही वह नौकरों से हर कमरे के खिड़की-दरवाजे साफ करवाती है। फौवारा के पास मालियों के साथ फुलवारी में थोड़ा-बहुत काम करती है। किस पौधे में कितनी खाद डालनी है, किस खाद से कौन फूल कितना बड़ा होगा, निर्मला भली-भाँति जानती है। परिणामस्वरूप सुबह बुलाने पर भी निर्मला पास नहीं मिलती। हालांकि निर्मला जानती है कि वह कब बाहर जायेगा। वह जानती है कि उसे क्या खाना पसंद है। आठ बजते-न-बजते चमन बाहर निकल पड़ता है। इसलिये निर्मला झटपट खाना तैयार कर देती है।

यानी निर्मला यहाँ की हर चीज में इस तरह समायी हुई है कि वह परायी समझी ही नहीं जा सकती। प्रत्येक पेड़ के साथ, प्रत्येक कमरे के साथ वह जुड़ी हुई है। पहाड़ी रास्तों पर वह कितनी ही बार अकेली निकल पड़ती है। नीचे उतरने पर ज्योंही कोई सरोवर दीखता, निर्मला पानी में पांव डूबा कर बैठ जाती है। बैठी-बैठी अन्यमनस्क हो गयी है। इस पहाड़ी उपत्यका के बाद ही पाइन का जंगल शुरू होता है। पहाड़ी लड़कियों की तरह जब वह पहाड़ और जंगलों में फुदकती फिरती है, उस समय भला कौन कह सकता है कि पहाड़ी जीवन के अलावा भी बंगाल में उसका और कोई जीवन था। आज सुबह से ही सफेद रंग की साड़ी पहने, सिर पर किंचित घूंघट काढ़े वह बालकोनी पर चुप-चाप खड़ी थी। चमन को अभी उसके पास जाते भी डर लगता था। हालांकि उसकी मुस्कान में तृप्ति की झलक थी।

कल से ही निर्मला ऐसी हो गयी है। वह साधारणतः ऐसा नहीं करती। बल्कि ऐसी बातों में वही ज्यादा उत्साह दिखाती है। उसने दुनिया देखी है, उसे कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब जैसे अभिनय की आवश्यकता पड़ती है, वह वैसा ही अभिनय करती है। सुरेश साहब के समक्ष उसे चमन की सती-साध्वी पत्नी का अभिनय करना है, पर सुरेश साहब को देखते ही वह बदल गयी है। अपनी बातचीत और अभिनय में एक अद्भुत प्यार प्रकट करना चाहती है। चमन जितना सोचता है, उतना ही उदासीन होता जाता है। वह बड़ा डर रहा है। यदि उसकी योजनाओं पर पानी फिर गया, तो इस अञ्चल में वह इतना बड़ा महाजन नहीं रह जायगा।

सुरेश साहब ने कहा है, दिघरिया जायेंगे। वहाँ सुरेश साहब की कंपनी एक नया प्लांट बैठाना चाहती है। सुरेश साहब को कह-सुन कर यदि उस योजना पर पानी फेरा जा सके, तो वह बच जायेगा। यहाँ नया प्लांट बैठने से

निकल जाय ? यह क्या, सुरेश साहब तो सुरेश ही निकला। उसके इस जीवन के बारे में जान कर सुरेश को घृणा होगी। वह सुरेश को अपना चेहरा दिखाना नहीं चाहती; पर सुरेश से बिना मिले रह भी नहीं सकती। एक अजीब-सी परेशानी है। एक अजीब-सा दर्द है जो रह-रह कर उसे तड़पा देता है। काश, सुरेश न होकर वह कोई और होता !

और रात में बुरक़ा जैसी काली चादर लपेट कर वह सीधे सुरेश के कमरे में जा उपस्थित हुई। सुरेश से उसे बहुत कुछ कहना था। सीधी-सादी बात है, वह क्या करती है, खुद ही नहीं जानती। बस, एक सनक सवार होती है और जो जी में आता है, कर गुजरती है। अभी जो कुछ सोचती है, बाद में याद नहीं रख पाती। ऐसा क्यों हुआ ? कहीं पागल तो नहीं हो जायगी ?

अंजली ने उठकर बत्ती बुझा दी।

आँखें बहुत जल रही हैं। सारी रात उसने आँखों में काटी है। सिर्फ कमरे में चहलकदमी करती रही है। कभी-कभी लगता कि जोरों की गर्मी लग रही है, पसीना आ रहा है। कभी-कभी लगता कि जोरों की सर्दी पड़ रही है, सर्दी में वह जम जायेगी। वह मानो आत्म-रक्षा के लिये इस एयरकंडीशन कमरे में बंद है, कहीं बाहर नहीं जा पा रही है। वह सारी रात इसी कमरे में बंद रहेगी। एक समय उसे ऐसा लगा कि वह घुटन भरे अन्धेरे में खड़ी है। इस तरह घुटन भरे अन्धेरे में रहने से उसे बड़ा डर लगता है। मानो कोई उसे गला घोंट कर मारने आ रहा है। उसका प्रेसमैन पति गोविंद गला घोंट कर उसकी हत्या करने आ रहा है ! उसने झटपट खिड़की खोल कर देखा, सुबह हो गयी है। नीचे पाइन का जङ्गल कुहासा में डूबा हुआ है। आकाश का रंग नीला है। पहाड़ी लड़कियाँ पीठ पर टोकरी बांधे बाजार जाने को निकल पड़ी हैं।

हरे-भरे पेड़-पौधों और प्रभातकालीन मनोरम शान्त प्रकृति को देख अंजली पिछली रात को एकदम भुठला देना चाहती है। ठंठी हवा अभी कितनी मधुर लग रही है ! दरवाजा खोल कर वह बाहर बरामदे में आ गयी। देखा, सुरेश साहब का कमरा खुला है। काफी नीचे वह अकेले ही पहाड़ी रास्ते पर टहल रहा है। पता नहीं सुरेश के लिये अञ्जली का मन उदास क्यों हो गया।

चमन ने उठ कर देखा, रोज की तरह आज भी निर्मला तड़के ही उठी है। एक रैपर ओढ़े वह चुपचाप बालकोनी पर खड़ी है। इस तरह और इस सुबह के

समय चुपचाप खड़ी रहने वाली लड़की निर्मला नहीं है। इस घर से निर्मला को बड़ा प्यार है। सुबह होते ही वह नौकरों से हर कमरे के खिड़की-दरवाजे साफ करवाती है। फौवारा के पास मालियों के साथ फुलवारी में थोड़ा-बहुत काम करती है। किस पौधे में कितनी खाद डालनी है, किस खाद से कौन फूल कितना बड़ा होगा, निर्मला भली-भाँति जानती है। परिणामस्वरूप सुबह बुलाने पर भी निर्मला पास नहीं मिलती। हालांकि निर्मला जानती है कि वह कब बाहर जायेगा। वह जानती है कि उसे क्या खाना पसंद है। आठ बजते-न-बजते चमन बाहर निकल पड़ता है। इसलिये निर्मला झटपट खाना तैयार कर देती है।

यानी निर्मला यहाँ की हर चीज में इस तरह समायी हुई है कि वह परायी समझी ही नहीं जा सकती। प्रत्येक पेड़ के साथ, प्रत्येक कमरे के साथ वह जुड़ी हुई है। पहाड़ी रास्तों पर वह कितनी ही बार अकेली निकल पड़ती है। नीचे उतरने पर ज्योंही कोई सरोवर दीखता, निर्मला पानी में पांव डूबा कर बैठ जाती है। बैठी-बैठी अन्यमनस्क हो गयी है। इस पहाड़ी उपत्यका के बाद ही पाइन का जंगल शुरू होता है। पहाड़ी लड़कियों की तरह जब वह पहाड़ और जंगलों में फुदकती फिरती है, उस समय भला कौन कह सकता है कि पहाड़ी जीवन के अलावा भी बंगाल में उसका और कोई जीवन था। आज सुबह से ही सफेद रंग की साड़ी पहने, सिर पर किंचित घूंघट काढ़े वह बालकोनी पर चुप-चाप खड़ी थी। चमन को अभी उसके पास जाते भी डर लगता था। हालांकि उसकी मुस्कान में तृप्ति की झलक थी।

कल से ही निर्मला ऐसी हो गयी है। वह साधारणतः ऐसा नहीं करती। बल्कि ऐसी बातों में वही ज्यादा उत्साह दिखाती है। उसने दुनिया देखी है, उसे कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब जैसे अभिनय की आवश्यकता पड़ती है, वह वैसा ही अभिनय करती है। सुरेश साहब के समक्ष उसे चमन की सती-साध्वी पत्नी का अभिनय करना है, पर सुरेश साहब को देखते ही वह बदल गयी है। अपनी बातचीत और अभिनय में एक अद्‌भुत प्यार प्रकट करना चाहती है। चमन जितना सोचता है, उतना ही उदासीन होता जाता है। वह बड़ा डर रहा है। यदि उसकी योजनाओं पर पानी फिर गया, तो इस अञ्चल में वह इतना बड़ा महाजन नहीं रह जायगा।

सुरेश साहब ने कहा है, दिघरिया जायेंगे। वहाँ सुरेश साहब की कंपनी एक नया प्लांट बैठाना चाहती है। सुरेश साहब को कह-सुन कर यदि इस योजना पर पानी फेरा जा सके, तो वह बच जायेगा। यहाँ नया प्लांट बैठने से

चमन मिट्टी में मिल जायेगा। उसे प्रतियोगिता में उतरना पड़ेगा और इतनी बड़ी कंपनी का प्रतियोगी होना कोई मजाक तो नहीं। भगवान जाने, क्या होगा !

चमन ने करीब जाकर देखा, काफी नीचे सुरेश साहब पहाड़ी रास्तों पर चल रहे हैं। काले रङ्ग का सूट पहने हैं और सिर पर फैल्ट कैप है।

पीछे से उसने पुकारा, निर्मला।

निर्मला चुप रही। आँख उठा कर देखा तक नहीं।

चमन बोला, सुरेश साहब, क्या रोज सुबह टहलते हैं ?

—नहीं जानती।

—तुमने तो कहा था कि तुम उन्हें पहचानती हो। उनकी हर आदत से तुम वाकिफ हो। वह क्या-क्या पसन्द करते हैं, तुम जानती हो।

निर्मला अभी क्या जवाब दे, कुछ समझ नहीं पाती। वह कुछ भी नहीं बोली। उसके चेहरे से ऐसा भाव प्रकट हो रहा है, मानो वह कुछ भी नहीं देख रही है, कुछ भी नहीं समझ रही है।

—तुम सब कुछ जानती हो, इसलिये तुम्हें ज्यादा कठिनाई नहीं होगी।

इसी समय कहीं शीशा फूटने की आवाज हुई। और चमन का दिल धड़क उठा। शीशा फूटने की आवाज पर भी निर्मला पूर्ववत् रही। उसकी पसन्द के कीमती शीशे के वर्त्तन हैं। उसके कोई बच्चा नहीं है, वह अकेली है। चमन के काम पर जाने पर या कलकत्ता जाने पर वह अकेली ही रहती है। रेकार्ड प्लेयर, आर्कडियन और घर सजाने-संवारने में उसका समय कट जाता है। और मन खराब होने पर पेड़ तले चुपचाप बैठी रहती है। इस उम्र में और है ही क्या ? उसके प्रेसनैन पति गोविन्द को सन्देह था कि उसके शरीर में बाढ़ है। दुबला-पतला दमा का रोगी गोविन्द की याद आते ही अङ्ग-प्रत्यङ्ग सिहर उठता है। सुरेश के आने पर एक-एक कर सब कुछ याद आने लगा है।

और यही जो चमन पास खड़ा है, संभव है, अभी-अभी गिड़गिड़ा कर कहेगा, जाओ न निर्मला, उन्हें गाना सुनना बहुत पसन्द है। उनके आने पर हम एक साथ चाय पियेंगे। उन्हें मैंने कितनी बार कहा है कि तुम रवीन्द्र सङ्गीत जानती हो। यही सब कहेगा और सुरेश साहब को हाथ में करने की कोशिश करेगा। इसलिये आज सुबह उसे कुछ भी पुरानी याद आने पर वह खुद को बड़ी अकेली महसूस करती है। उस समय उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह अपने आप को हर चीज से अलग-थलग महसूस करने लगती है। ऐसा होता है, इसलिये वह अपने आप में सीमित हो जाती है। उसे किसी से बात करना अच्छा नहीं लगता।

चमन बोला, तुम बड़ी थकी-थकी-सी दीख रही हो निर्मला।

—ठीक से सो नहीं सकी हूँ।

—मशीन में गड़बड़ी तो नहीं थी ?

—नहीं।

—तब ?

—पता नहीं क्या हुआ।

—आज क्या उन्हें चाय पर बुलाऊँ ?

—नहीं।

—नहीं क्यों ?

—कह तो दिया, नहीं।

—तुम बड़ी जिद्दी हो निर्मला।

—मुझे अच्छा नहीं लग रहा है चमन।

—वह तुम्हारे परिचित हैं। तुम्हें तो कोई खास कठिनाई नहीं उठानी पड़ेगी और न ज्यादा परिश्रम ही करना पड़ेगा।

परिश्रम का अर्थ एक कुत्सित दृश्य के रूप में उसकी आँखों के सामने नाच उठा, कपाल पर बल पड़ गये और मुखमण्डल पर घृणा की रेखाएँ उभर आयीं। ऐसी शान्त सुबह में इस प्रकार की बातें सुनते ही मन घृणा से भर उठता है। लेकिन रुपयों का दीवाना चमन इतनी सुन्दर सुबह को मिट्टी में मिला रहा है।

आज इस स्थिति में उसे उस दिन की घटना बेहद याद आ रही है। सुरेश के कमरे में वह खुद था और साथ थी अंजली। दोनों का प्यार कहीं पकड़ा न जाय, कितना डर रहा था सुरेश उस दिन ! और तो और एक सरल-सुबोध शिशु की भाँति अकारण अपराध का बोझ अपने कन्धे पर उठा लिया; पर एक शब्द भी न बोल सका। बुआ जी के सामने मानो उसकी बोलती बन्द हो गयी, कह न सका कि मैं अंजली को प्यार करता हूँ। इसलिये अंजली रात में मेरे कमरे में आती है। हमदोनों खिड़की के पास खड़े हो चुपचाप आसमान देखते हैं। और कुछ नहीं करते। जाने से पहले हम दोनों सिर्फ एक-दूसरे का पवित्र चुम्बन लेते हैं, और कुछ नहीं, और उस समय सचमुच में विश्वास नहीं आता कि संसार में दुःख भी कोई शब्द है। हम दोनों उस समय सुषमा मण्डित वसुन्धरा के अङ्ग बन जाते हैं। हमने कोई अपराध नहीं किया। एक खिलती कली के चारों ओर सूर्य की किरणें थिरकती ही हैं, इसमें भला आश्चर्य ही क्या है !

इसलिये इस मनोरम प्रभात में परिश्रम की बात सुनते ही निर्मला को जोरों की हँसी आयी। वह इतने जोरों से कहकहा मारना चाहती थी कि उसकी

आवाज पहाड़ की चोटियों और तराई में गूंज उठे। और तलहटी में जो प्रभात-कालीन पृथ्वी की सुषमा देखता फिर रहा है उसके चारों ओर कहकहा यदि किंकिणी सदृश खनखना उठे, तो मानो एक अनन्त परिहास की सृष्टि होगी। और यह भी तो संभव है कि सुरेश यह समझ बैठे कि पहाड़ की चोटी पर खड़ा इस तरह कौन हँस रहा है। हँसी सुनते समय अन्यमनस्क होते ही किसी खड्ड में गिर सकता है। पता नहीं क्या सोच कर उसने खुद को संभाल लिया। सिर्फ बोली, जानती हूँ ज्यादा परिश्रम नहीं करना पड़ेगा; फिर भी मुझ से नहीं होगा चमन।

—ऐसी बात नहीं करते रानी।

—और सुबह-सुबह मुँह से ऐसी बात निकालना तुम्हें अच्छा लगता है चमन?

—क्या करूं निर्मला, गले में जो कांटा अटका है। वह आज नौ बजे मेरा कारखाना देखने जायगा।

—तो फिर मैं क्या कर सकती हूँ?

—यह कहो, तुम क्या नहीं कर सकती! तुम इतना कुछ कर सकी हो और एक छोटा-सा काम नहीं कर सकोगी?

—वह मेरा परिचित है चमन, उसके लिये मैं नयी-नवेली तो हूँ नहीं जो मुझ पर लट्टू हो जाय; बल्कि मुझे तो डर है कि वह कहीं खफा न हो जाय।

निर्मला ने चमन को दूसरी दिशा में मोड़ना चाहा।

—निर्मला मैं आदमी पहचानता हूँ। पुरुषों की नस-नस से मैं वाकिफ हूँ। कौन कितना खरा है, यह भी मैं जानता हूँ। तुम्हारे सामने कौन कितना बड़ा मर्द है, यह भी मुझे पता है।

—यानी सब मुझ से हार जाता है!

—आज तक तो ऐसा कोई नहीं दीखा जो तुम से न हारा हो।

—कोई-कोई नहीं भी हारता है चमन।

—न चाहने पर किसी को नहीं हराया जा सकता। चाहने पर सभी हराये जा सकते हैं।

—अभी बहस करना मुझे जरा भी अच्छा नहीं लग रहा है। वापसी में एकबार शहर से हो आना। मेरी कुछ चीज लानी है।

—ले आऊँगा। तुम मेरी बातों का जवाब नहीं दे रही हो। वह अभी-अभी ऊपर आकर हाथ मुँह धोएगा। उसे चाय पर अन्दर बुलाऊँ?

—नहीं।

—निर्मला मेरा सर्वनाश हो जायेगा।

—कह तो चुकी, मुझ से नहीं होगा।

—तब क्या होगा! वह तो आज ही चला जायगा।

—वह आज नहीं जायगा।

—क्या कहती हो!

—बिलकुल ठीक कह रही हूँ।

—कैसे जाना कि आज नहीं जायगा।

—कल रात मैं उसके कमरे में गयी थी।

—निर्मला तुम कितनी अच्छी हो, कितनी सुन्दर!—चमन खुशी से झूम उठा।

पता नहीं सुरेश को चलना क्यों अच्छा नहीं लग रहा था। ठंडी हवा लग रही थी न! नीचे उतर कर उसने ऊपर की ओर देखा। चक्करदार रास्ता तय कर वह नीचे उतर आया है। पहाड़ को काट-काट कर रास्ता बनाया गया है। विशालकाय अजगर सदृश चक्करदार रास्ते रंग-बिरंगे फूल-पौधे संजोये लेटे हैं। उतरते वक्त फूल-पौधों की ताजी गन्ध मिल रही थी। दायीं ओर एक कुटिया है और बायीं ओर छोटा-मोटा पहाड़ी गाँव। भेड़ों का झुंड तराई में उतर रहा है। गायें घास चर रही हैं। तड़के ही सब जग गये हैं। यहाँ के लोग उसका चलना देखते ही भाँप लेते हैं कि वह परदेशी है।

यहाँ टुरिस्ट भी आते हैं! यह टुरिस्टों के आने का समय नहीं है, वे गरमी में आते हैं। अभी चारों तरफ कुछ-न-कुछ कुटिया खाली पड़ी हैं। कुटिया वायु परिवर्त्तन पर आये लोगों के लिये बनी हैं। ट्रेन से आते वक्त वह इस तरफ से नहीं गुजरा है। वह रास्ता उत्तर की ओर है। चमन लाल के पैकिंग प्लांट में जाकर वह रास्ता खत्म हो गया है। पैकिंग प्लांट के आसपास चमन ने सफेद रंग के कुछ क्वार्टर बनवा दिये हैं। उस तरफ जाने पर शायद वह और भी ज्यादा आदमी देख पाता।

इधर बड़ा सुनसान है। नाम तो कुटिया दिया गया है; पर अन्दर में ऐसी व्यवस्था है कि लगता है कुटियों का निर्माण साहब क्लास के बाबुओं के लिये किया गया है। हर कुटिया के सामने लान है। लान में रंग-बिरंगे फूल के पेड़-पौधे हैं। किसी-किसी पेड़ में असंख्य फूल खिले हैं। कीलदार तारों का

अंजली में निकटता प्राप्त करने की इच्छा तीव्र थी। उसके हर काम में अंजली मौजूद रहती थी। उसके मुखमण्डल पर हमेशा करुणा की छाप होती थी। इस करुण चेहरे के कारण ही सुरेश के हृदय में उसके प्रति स्नेह था। और अंजली के लिये सब कुछ सपना-सा था, सुरेश उसके सपनों का राजकुमार था। उसके करीब जाना, उसे स्पर्श करना अंजली को अच्छा लगता था। सुरेश के सामीप्य से उसका सारा शरीर पुलकित हो उठता था। यह सब सुरेश आँखें बन्द करते ही मानो महसूस कर पाता था। आश्चर्य है, फिर भी सुरेश आखिर तक क्यों खड़ा न रह सका! अंजली को लेकर बदनामी होते ही वह बुआ जी के घर से भाग खड़ा हुआ। भाग कर अपने शरीर से सारी बदनामी धो पोंछने के लिये वह एकदम अच्छा लड़का बन गया।

आते वक्त अंजली को एक पता दे आया था ताकि कोई कठिनाई उपस्थित होने पर अंजली उससे सम्पर्क स्थापित कर सके। सारी व्यवस्था के पीछे एक ही बात थी कि लोग यह न समझें कि वह बदनामी के डर से भाग गया है। खास कर वह अंजली के सामने यह स्वीकार करना नहीं चाहता था। समय सब कुछ भुला देता है, सब कुछ पुनः सहज हो उठता है, ऐसी भावना मन में आते ही मनुष्य निश्चिन्त हो जाता है। एक मेस में जगह पाकर वह मन-ही-मन बोल उठा था, बच गया। वह समझता था, पता जब अंजली को दे आया हूँ, तो वह लुक-छिप कर उससे मिलने आया करेगी। स्कूल से वापस आते वक्त यदि मिलेगी, तो किसी पेड़ या किसी छांव के नीचे दोनों का समय मजे में कट जायेगा।

आश्चर्य है, अंजली एक दिन भी न मिली। एक चिट्ठी तक नहीं दी। क्या वह भी स्कूल के मैदान के उस पार खड़ा रहा! या सुरेश अंजली के लिये पहले जैसा आकर्षण महसूस नहीं करता था। अभी वह इन पहाड़ी रास्तों में खुद को टटोल रहा है। वह जानना चाहता है अंजली से उसे कितना पाना था और अंजली को उसे कितना देना था। अंजली पर उसका कितना अधिकार था, और अंजली का उस पर कितना अधिकार था। इस समय वह यह सोच कर अवाक हो उठता है कि अंजली के न आने से उसे कोई खास दुःख नहीं हुआ था। क्योंकि अंजली के प्रति उसके हृदय में करुणा थी, प्यार था या नहीं, कहना मुश्किल है। अगर प्यार होता, तो नवयुवक सुरेश इस तरह घर छोड़ कर नही भागता। अंजली ने न मिल कर अच्छा ही किया, एक ऐसा भाव मन में पालता हुआ विद्यालय का अच्छा विद्यार्थी होने के नाते वह किताबी

कीड़ा बन गया था। खुद को बड़ा भला लड़का समझ कर बुआजी से मिलने में शर्माता रहा है।

लेकिन रात में अंजली का रूप देखकर वह आश्चर्यित हो उठा था। अंजली सफेद मोम की गुड़िया नहीं, मक्खन की सजीव प्रतिमा दीखती है। सारी-की-सारी शिरायें-उपशिरायें पानी की रेखाओं की तरह शरीर के अन्दर खिलवाड़ कर रही हैं। आँखों में उष्ण व कोमल प्यार छलक रहा है। चेहरे पर दुःख व विषाद का चिन्ह तक नहीं। हर बार मानो वह अरबी घोड़े की तरह उसके कमरे में आ खड़ी होती। देखो, मैं कैसी हूं, मैं क्या तुम्हें अच्छी नहीं लग रही ? अब मैं रात का फेंका गया सुबह का बासी फूल नहीं। अब मैं सुबह का तरोताजा सूरज हूँ। जो भी मुझे छूयेगा, जल जायेगा, जल कर भस्म हो जायेगा।

क्या सब सोचता हुआ, सुरेश काफी दूर निकल आया है। जलप्रपात की आवाज सुनायी पड़ रही है। सूरज धीरे-धीरे चढ़ता जा रहा है। उसने सोचा, लौटते वक्त एक तांगा पर लौट जायेगा और आज ही जो कुछ करना है, कर लेगा। क्योंकि वह समझ रहा है कि अंजली एक दुर्निवार आकर्षण फैला रही है जो सहज ही उसे सांसारिक आचार-व्यवहार से खींच कर नीचे गिरा सकता है। अभ्यासवश वह भला आदमी बन गया है। पत्नी के समक्ष वह आदर्श पति है और आफिस में एक कर्त्तव्यपरायण अधिकारी। यहाँ आने का उद्देश्य भी कम्पनी का हित-साधन है। कर्त्तव्यपरायण और ईमानदार अधिकारी के रूप में कम्पनी को किसी भी प्रकार की क्षति से बचाना उसका धर्म है। कितना डिसकाउंट देना है, कितना देना चाहिये पर विचार करना है। दिघरिया प्लांट को प्रस्तावित योजना के हर पहलू पर भी वह भली-भाँति विचार कर लेना चाहता है। सहसा उसने देखा, एक बड़ी सुन्दर चिड़िया उड़ कर एक पेड़ की टहनी पर जा बैठी। उस चिड़िया को भली-भाँति देख लेने की इच्छा हुई।

लंबे अर्से से उसने इस तरह नदी-नाले, पहाड़-जङ्गल, फूल-पौधे नहीं देखे हैं। उसे इच्छा हुई थोड़ा बैठ जाय। हरी घास पर बैठने की उसे इच्छा हुई। थोड़ा-थोड़ा कुहासा छाया हुआ था। मखमली घास पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। सामने ही एक पत्थर पड़ा था। वह पत्थर पर बैठ गया। काले रङ्ग का पत्थर। तीसरे पहर अंजली फिर मिल सकती है। रात में अंजली छिप कर उसके कमरे में आयी थी। काम खतम कर जब वह तीसरे पहर वापस आयगा,

शायद उस समय चाय किसी के हाथ भेज देगी और उस समय चमन घर पर न होगा। मौका मिलते ही आ जा सकती है। चमन ने उसे कई बार यहाँ आने को कहा है। उसकी पत्नी निर्मला का रवीन्द्र सङ्गीत पर अच्छा अधिकार है। वह नहीं जानता था; क्योंकि उसने अंजली को कभी गाते नहीं सुना। अंजली ने भला गाना कब सीखा! यह सब सोचना उसे अच्छा लगने लगा। वह दुर्बल हो जा सकता है। उसकी दुर्बलता से चमन अनुचित लाभ उठा सकता है। नहीं, गाना सुनना ठीक न होगा। और यह तो पता ही है कि चमन कुछ ऐसा ही चाहेगा। अर्थात् चमन यदि खाने की टेबुल पर या चाय पर अंजली को भी साथ बैठा ले और कहे, सुरेश साहब को एक गाना सुनाओ। संभव है गाना सुन कर वह डगमगा जाय।

उस चिड़िया की उसने फिर तलाश की। पैरों तले सुबह की धूप बिखरी है। मखमली घास पर रेशमी धूप बिखरी है। हरे कीड़े-मकोड़े घास पर खेल रहे हैं। वह मन-ही-मन बोला, अंजली, तब तुम मजे में ही हो। मैं भी मजे में हूँ। फिर भी मुझे लगता है कि आज मैं अच्छा नहीं हूँ। पता नहीं, मुझे ऐसा क्यों लगता है। ऐसा तो मेरे साथ कभी होता नहीं।

जब मैं गंभीर बना दफ्तर में बैठा रहता हूँ, कोई मुझे परेशान करने का साहस नहीं करता, मुझ से बात नहीं कर पाता। सुना है, मेरे चेहरे पर हमेशा गर्व की छाप विराजमान रहती है—सच्चाई का गर्व, कर्त्तव्य का अभिमान। मेरे अन्दर भी जो एक दुःखी आदमी छिपा है, किसी को इसका आभास तक नहीं मिलता। मैं खुद भी नहीं समझ पाता। आज लगता है, मैं अपने दुःखी आदमी को लाख कोशिश कर भी छिपा कर नहीं रख सकता। चमन को अगर पता चल गया, तो वह एक-एक पाई वसूल कर लेगा। उसने मेरी बड़ी खुशामद की है। और यदि उसे यह पता चल जाय कि तुम्हारे कहने पर मैं उसके लिये बहुत कुछ कर सकता हूँ, उसके दौलतखाने की चमक-दमक मेरी उदारता पर निर्भर है, तब वह क्या करेगा उसे यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। अंजली तुम रात में क्यों आयी, मेरे कमरे में।

सुरेश बड़ा अन्यमनस्क हो गया है। जितना सोचता है कि यह सब नहीं सोचेगा, उतना ही उलझता जाता है। अपरिचित जगह आया है। यदि पता न जानता, तो वह लौट भी नहीं सकता था। पहाड़ों की सुन्दरता देखने लायक है। इन पहाड़ों पर आने से वापस जाने की किसी की इच्छा नहीं होती। हरे-भरे पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे पक्षियों और रेशमी धूप को लिये यहाँ आने वालों को अटकाये रहते हैं, कहीं जाने नहीं देते।

टप-टप पानी पड़ रहा है। झरना-झर रहा है। कभी उसकी गति तेज होती है और कभी धीमी। वर्षा की बूंदों की तरह कहीं-कहीं पत्तों पर पानी अटक जाता है। और जिस तरह वर्षा होने के बाद भी काफी देर तक वर्षा की बूंदें पेड़-पौधों से टप-टप कर गिरती हैं और एक उदास वातावरण की सृष्टि करती हैं, ठीक उसी प्रकार झरना का पानी भी एक अजीब-सी उदासी चारों ओर बिखेर रहा है। अंजली के साथ-उसका परिचय दो साल का है। अब वह समझ रहा है, दो साल के अन्दर ही अंजली उसकी काफी अपनी हो गयी थी।

सुरेश उठ खड़ा हुआ। पेड़ की डाल पर उसे वह चिड़िया देखने को न मिली। इसी पेड़ पर बैठी थी न! यह कौन-सी चिड़िया है? उसने अपने इलाके में ऐसी चिड़िया नहीं देखी थी। सुनहली पूंछ, सफेद आँखें, रुपहले पाँव। इस चिड़िया का अस्तित्व मानो दन्त कथाओं में ही शोभा पाता है। चाँदी के पेड़, सोना के पत्ते और मुक्ता के फल होने पर इस चिड़िया की शोभा बढ़ती। वह सोच न सका था कि इस तरह चिड़िया उसके आँखों के सामने गुम हो जायेगी। जिन झाड़ियों के आस-पास छोटी-मोटी धाराओं में पानी बह रहा है, वह उस ओर चल पड़ा। झाड़ियों में घुस कर वह कितनी देर तक खोजता रहा, वह नहीं जानता। न मिलने पर वापस आ गया। यह क्या, उसी पत्थर पर अंजली बैठी है!

—तुम!

—अपरिचित जगह में रास्ता भूल जाओगे, यह सोच कर चली आई।

—उसके चेहरे पर विचित्र हँसी खेल गयी।

—मैं सहज ही रास्ता नहीं भूलता। ठीक वापस जा सकता हूँ।

—शायद तुम जा सकते हो; पर मेरा मन नहीं माना। और फिर यह स्थान भी बड़ा भयंकर है। चारों तरफ जहरीले साँपों का राज्य है। पत्थर के नीचे छोटे-मोटे बिल देख रहे हो न—कौन-सा साँप का है, कौन-सा खरगोश का, कोई नहीं जानता।

—कोई नहीं जानता?

—कम-से-कम हमलोग नहीं जानते।

—यानी कोई-कोई जानता है।

—यहाँ की पहाड़ी लड़कियाँ बता सकती हैं। वे बिल देखते ही पहचान जाती हैं कि कौन-सा बिल किस जीव का है।

—साँप तो अपने बिल में नहीं रहता।

—साँप कोई बिल नहीं बना सकता सुरेश।

—जानता हूँ, दूसरों के बिल में रहता है।

—इतना जानने पर भी तुम इस जंगल में क्यों आये ?

—तुम्हें जङ्गल कहाँ दीख रहा है ?

—यह घास का मैदान है। और तुम जिस मखमली घास को रौंदते हुए चले आये, नहीं जानते उसके नीचे जहरीले कीड़े-मकोड़े हैं कि उनका एक डंक तुम्हारे शरीर को नीला बना देगा।

—सच !

—हाँ सुरेश।

—फिर तुम क्यों चली आयी !

—मुझे ये पहचानते हैं। मैं इन्हें कोई क्षति नहीं पहुँचाती, ये जानते हैं।

उत्तर में सुरेश बहुत कुछ कह सकता था। ये जानते हैं, इसलिये उसे डसेंगे नहीं, उसे नहीं जानते हैं, इसलिये उसे डसेंगे, यह सब बकवास है। यहाँ आने पर वह सिर्फ बकवास ही कर रही है, काम की एक भी बात नहीं बोलती। उसे तरह-तरह के संदेह हो रहे हैं। अंजली चमन की पत्नी है; हालांकि वह ऐसा व्यवहार कर रही है जैसे चमन उसका कोई नहीं हो। अगर ऐसा न होता तो सुबह-सुबह उसके पीछे-पीछे यहाँ आने के पहले वह हजार बार सोचती, चमन क्या सोचेगा। उसका चेहरा देख कर तो पता ही नहीं लगता कि चमन से उसे जरा भी डर है। चमन भली-भाँति जानता है कि वह बड़ा कड़ा आदमी है। चमन उसके साथ बकवास करने का साहस नहीं कर सकता ! कुल मिला कर सुरेश को यह सब बड़ा बुरा लग रहा था। जितनी परिचित हो, पुरानी दोस्ती के नाते जितना ही निकट आये; फिर भी इस तरह नीचे उतर आना अच्छा नहीं है। बोला, मेरे पीछे-पीछे आने की क्या जरूरत थी ?

वह पत्थर पर बैठी घास चबा रही है। अबोध शिशु-सा चेहरा बना लिया है। आँखों में अजीव-सी उदासी छायी है। सुरेश का एक भी शब्द मानों उसके कानों में नहीं जा रहा है। सुरेश का हाथ थामे, पत्थर की गिट्टियों से भरे रास्ते पर चल कर अगर वह उस झरने तक पहुँच जाय तो मानो वह बच जायेगी। सुरेश बोला, मैं यह सब पसंद नहीं करता अंजली।

पर अंजली के स्निग्ध मुख-मंडल पर कोई रेखा न उभरी, केवल एकबार उसकी आँखें ऊपर की ओर उठीं। सफेद सिल्क में वह बड़ी फब रही है। रंग-

विरंगे शंख पाड़ पर अङ्कित हैं—कोई नीला, कोई सफेद तो कोई हरा। आंचल में रंग-विरंगे फूल-पत्ते अङ्कित हैं। अंजली ने जरा-सा घूंघट काढ़ा ही था कि लगा किसी दौड़ते हुए हिरन की पदचाप सुनाई पड़ रही है। यह जङ्गल का हिरन है या मन का, यह ठीक-ठीक समझ न सका। सिर्फ करीव जा कर वोला, तुम्हारा यहाँ इस तरह वैठा रहना अच्छा नहीं अंजली।

अंजली उठ खड़ी हुई। वोली, चलो।

—कहाँ ?

—घर।

—फिर इधर क्यों ?

—इधर से एक सीधा रास्ता गया है।

—लेकिन इधर तो जङ्गल है, चलूंगा कैसे ?

—रास्ता है।

—मुझे नहीं दीख रहा है, अंजली।

—पास पहुँचने पर देख पाओगे।

—लेकिन इधर तो पहाड़ खड़ा है।

—खड़ा है, इसलिये तो रास्ता सीधा है।

—मैं इतनी चढ़ाई नहीं चढ़ सकूंगा।

—मैं तो हूँ।

—तुम भी नहीं सकोगी अंजली।

—एक वार देखो तो, सकती हूँ या नहीं।

—मुझे साहस नहीं होता।

—आओ।—इस वार अंजली ने मानो जवर्दस्ती हाथ पकड़ लिया।—तुम जीवन भर डरपोक ही वने रहे सुरेश।

—तुम तो कहोगी ही।

—तुम्हारे वारे में मैं सव कुछ जानती हूँ सुरेश। तुम कम्पनी के वड़े विश्वासी आदमी हो।

—किसने कहा ?

—कलकत्ता से आने पर चमन सिर्फ तुम्हारी ही वात करता है।

—तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि मैं तुम्हारा परिचित हूँ ?

इस प्रश्न का उत्तर न देकर अंजली उँगली दिखाती हुई वोली, वह देखो, पहाड़ की चोटी कितनी सुन्दर दीख रही है।

सुरेश ने सिर उठा कर देखा।

—कहाँ, तुमने कोई जवाब नहीं दिया ?

—अच्छा सुरेश, तुम जो मुझे छोड़ कर भाग आये थे, तुम्हें कोई कष्ट नहीं हुआ था ?

बिलकुल बच्चों जैसा प्रश्न। वह झूठ बोल सकता है, हाँ, बहुत हुआ था।

—लेकिन ऐसा कहना झूठ होगा। वह बड़ा भला लड़का है, स्वभाव और चरित्र से वेरी गुड व्वाय। गुड़ व्वाय का नाम खोने को वह राजी नहीं था। उसे याद नहीं आता कि उसके दिल में कितना दुःख था। बोला, अब वह सब याद नहीं।

—हाँ, याद रखने जैसी बात भी तो नहीं।

—तुम मुझे कहाँ ले जा रही हो। इतने घने जङ्गलों को पार कर जाऊँगा कैसे। पेड़-पौधे इतने घने हैं कि रास्ता नहीं दीखता।

—डर लगता है ?

—हाँ।

—मैं तो हूँ।

—मैं यहाँ काम से आया हूँ अंजली। मुझे जल्दी वापस जाना चाहिए। तुम मुझे किस भूल-भुलैया में ले आई।

—डरो नहीं साहब। वह शहर गया है।

सुरेश ने चौंक कर उसकी ओर देखा और बोल उठा, क्या मतलब ?

—मुझे कह गया है, खास काम से शहर जाना पड़ रहा है, सुरेश साहब से कहना बुरा न मानें। तुम्हारे नाम एक चिट्ठी छोड़ गया है।

—चमन को इतना साहस नहीं था।

—अब उसका साहस बढ़ गया है। संभल कर चलो, सामने गड्ढ़ा है। जरा-सा पैर फिसला और हजारों फीट नीचे।

—नहीं, मेरे पैर नहीं फिसलते।

—न फिसलना ही अच्छा है।

—लेकिन चमन जानता है कि मुझे कल जाना ही होगा।

—तुम चलना नहीं जानते साहब। कल तुम्हारे नहीं जाने से कुछ बिगड़ेगा नहीं। यहाँ तुम इच्छानुसार रह सकते है।

—मुझे बहुत काम है। मेरे नहीं रहने से ऑफिस में बड़ी असुविधा होगी।

—होने दो न। कम-से-कम एकबार तो बैड ब्वाय बनकर देखो कितना मजा आता है।

दोनों चल रहे हैं। पेड़-पौधे, लता-गुल्म जो कुछ सामने आता है, दोनों हाथों से हटा कर आगे बढ़ते जा रहे हैं। कहीं-कहीं पहाड़ इतना सीधा खड़ा है कि वह चढ़ नहीं पा रहा है और अंजली झटपट चढ़ जाती है। अंजली ऊपर में एक नीले रङ्ग के पेड़ तले बैठी हुई कहती है, क्यों साहब, चढ़ नहीं पा रहे हो, उतर कर साथ ले आऊँ क्या ?

—नहीं, मैं खुद चढ़ जाऊँगा।

—देखो, पाँव फिसलते ही हजारों फीट नीचे।

—जानता हूँ।

—नहीं, तुम नहीं जानते। पहाड़ की चढ़ाई तय करना तुम नहीं जानते।

सुरेश को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। उसका हाथ पकड़े वह ऊपर आ रहा है। उसे पता नहीं, अंजली उसे कहाँ ले आयी। उसने देखा, दोनों काफी ऊपर चढ़ आये हैं।

वह बोला, अंजली मैं जा रहा हूँ। मेरे न जाने से तुम हिलोगी नहीं।

अंजली समझ गयी, सुरेश काफी थक गया है। सुखी आदमी है, कभी शारीरिक परिश्रम नहीं करता। शारीरिक परिश्रम नहीं करने के कारण उसके चेहरे पर अभी तक नौजवान जैसी ताजगी है; हालांकि अन्दर-ही-अन्दर बहुत कमजोर है। अंजली को मजाक करने की इच्छा हुई; लेकिन कर न सकी। क्योंकि पुराना संबंध आँखों के सामने तैर गया। उसने सोचा था, इस बार प्रतिशोध लूंगी, चमन की बन कर उसके चरित्र को अतल गहराइयों में डुबो दूंगी, उसकी गुड ब्वायगिरि चूर-चूर कर डालूंगी; पर कुछ न कर सकी। मन में साहस बटोरना चाहा; पर असफल रही। चमन लाल कह गया है, मैं जा रहा हूँ। रात मे वापस आऊँगा, आशा है, अच्छी खबर दोगी। तुम्हारा बैंक बैलेंस और भी बढ़ेगा निर्मला। यही सब सोच कर वह आगे बढ़ आयी है। लेकिन जो कुछ करने से वह मोहित हो सकता है, उसके मन में भूचाल मच सकता है, वैसा कुछ नहीं कर सकी। अब वह चुपचाप उसके आगे बढ़ने का इन्तजार कर रही है।

ऊपर आकर सुरेश बोला, सोचता हूँ, कभी लीला को साथ लाऊँगा। बड़ी अच्छी जगह है, उसे काफी पसन्द आयेगी।

—चलो आयेगी ! लेकिन मेरी याद आने पर तुम्हें आने की इच्छा नहीं होगी।

—तुम चमन की पत्नी हो। लीला साथ आये, तो तुम्हें डर क्यों लगता है ?

—कारण है। एकबार साथ लाकर दिखाओ न।

—यह कौन-सी लता है अंजली ?

—कौन-सी लता ?

—वही जो पीले रंग की है।

—तुम गाँव के रहने वाले हो और उस लता का नाम नहीं जानते ?

—गाँव में सिर्फ बचपन गुजरा है। और फिर हमारे गाँव में आसपास ऐसी लता मैंने कभी नहीं देखी।

—स्वर्णलता।

—बड़ी सुन्दर है।—कह कर आगे बढ़ा और लता का एक टुकड़ा तोड़ लाया।

अंजली बोली, जानते हो, तुम्हारा यह सब बचपना देख कर, अभी लगता ही नहीं कि तुम इतनी बड़ी कम्पनी के उच्चाधिकारी हो।

सुरेश ने आँखें बंद कर कुछ सोचा। उसने मुक्ति ही एक गहरी सांस ली। बोला, सच कहती हो अंजली, कितने दिनों से मैं मानो आफिस की चहारदीवारी और कलकत्ता के शोरगुल में कैद पड़ा था। इस बार सहज मुक्ति स्वयं सामने आ खड़ी हुई। तुम जब तक कहोगी, मैं रहूंगा। अब मुझे याद आ रहा है, उस रात सपने में मैं तुम्हारे लिये बहुत-बहुत रोया था। सपने में रोने से प्यार क्या सच्चा नहीं होता, सफल नहीं होता ?

यह सब याद आने पर शांत नहीं रहा जा सकता। वापस आने पर सोच न पायी कि वह क्या करे। सुरेश की बातों में कितना दर्द छिपा है ! वापस आते ही उसने सोचा था, बाथरूम में घुस पड़ेगी। लेकिन सुरेश की आखिरी बातों ने उसे अश्चर्यित कर दिया है। नहीं; अभी कुछ सोचने का समय नहीं है, बहुत काम है। पैनट्रि में बावर्ची क्या कर रहा है ? सुरेश साहब के लिये चिकेन रोस्ट, चिकेन फ्राइ, ग्रीन पीज, सलाद यानी एकदम अंग्रेजी खाना बन रहा है। खाने के बाद एक कप कॉफी चलेगी। खाना तैयार होने में और कितनी देर है, अभी यह सब देखना जरूरी है।

वह झटपट उठ पड़ी। यह सब बाद में भी सोचा जायगा। इस तरह सुरेश को इतने निकट पाने का उसे कभी सौभाग्य होगा, उसने सपने में भी नहीं सोचा था। बाथरूम में जाने के पहले एकबार वह पैनट्रि के दरवाजे पर गयी।

—होने दो न। कम-से-कम एकबार तो बैड ब्वाय बनकर देखो कितना मजा आता है।

दोनों चल रहे हैं। पेड़-पौधे, लता-गुल्म जो कुछ सामने आता है, दोनों हाथों से हटा कर आगे बढ़ते जा रहे हैं। कहीं-कहीं पहाड़ इतना सीधा खड़ा है कि वह चढ़ नहीं पा रहा है और अंजली झटपट चढ़ जाती है। अंजली ऊपर में एक नीले रङ्ग के पेड़ तले बैठी हुई कहती है, क्यों साहब, चढ़ नहीं पा रहे हो, उतर कर साथ ले आऊँ क्या?

—नहीं, मैं खुद चढ़ जाऊँगा।

—देखो, पाँव फिसलते ही हजारों फीट नीचे।

—जानता हूँ।

—नहीं, तुम नहीं जानते। पहाड़ की चढ़ाई तय करना तुम नहीं जानते।

सुरेश को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। उसका हाथ पकड़े वह ऊपर आ रहा है। उसे पता नहीं, अंजली उसे कहाँ ले आयी। उसने देखा, दोनों काफी ऊपर चढ़ आये हैं।

वह बोला, अंजली मैं जा रहा हूँ। मेरे न जाने से तुम हिलोगी नहीं।

अंजली समझ गयी, सुरेश काफी थक गया है। सुखी आदमी है, कभी शारीरिक परिश्रम नहीं करता। शारीरिक परिश्रम नहीं करने के कारण उसके चेहरे पर अभी तक नौजवान जैसी ताजगी है; हालांकि अन्दर-ही-अन्दर बहुत कमजोर है। अंजली को मजाक करने की इच्छा हुई; लेकिन कर न सकी। क्योंकि पुराना संबंध आँखों के सामने तैर गया। उसने सोचा था, इस बार प्रतिशोध लूंगी, चमन की बन कर उसके चरित्र को अतल गहराइयों में डुबो दूंगी, उसकी गुड ब्वायगिरि चूर-चूर कर डालूंगी; पर कुछ न कर सकी। मन में साहस बटोरना चाहा; पर असफल रही। चमन लाल कह गया है, मैं जा रहा हूँ। रात में वापस आऊँगा, आशा है, अच्छी खबर दोगी। तुम्हारा बैंक बैलेंस और भी बढ़ेगा निर्मला। यही सब सोच कर वह आगे बढ़ आयी है। लेकिन जो कुछ करने से वह मोहित हो सकता है, उसके मन में भूचाल मच सकता है, वैसा कुछ नहीं कर सकी। अब वह चुपचाप उसके आगे बढ़ने का इन्तजार कर रही है।

ऊपर आकर सुरेश बोला, सोचता हूँ, कभी लीला को साथ लाऊँगा। बड़ी अच्छी जगह है, उसे काफी पसन्द आयेगी।

—चलो आयेगी! लेकिन मेरी याद आने पर तुम्हें आने की इच्छा नहीं होगी।

—तुम चमन की पत्नी हो। लीला साथ आये, तो तुम्हें डर क्यों लगता है ?

—कारण है। एकबार साथ लाकर दिखाओ न।

—यह कौन-सी लता है अंजली ?

—कौन-सी लता ?

—वही जो पीले रंग की है।

—तुम गाँव के रहने वाले हो और उस लता का नाम नहीं जानते ?

—गाँव में सिर्फ बचपन गुजरा है। और फिर हमारे गाँव में आसपास ऐसी लता मैंने कभी नहीं देखी।

—स्वर्णलता।

—बड़ी सुन्दर है।—कह कर आगे बढ़ा और लता का एक टुकड़ा तोड़ लाया।

अंजली बोली, जानते हो, तुम्हारा यह सब बचपना देख कर, अभी लगता ही नहीं कि तुम इतनी बड़ी कम्पनी के उच्चाधिकारी हो।

सुरेश ने आँखें बंद कर कुछ सोचा। उसने मुक्ति ही एक गहरी सांस ली। बोला, सच कहती हो अंजली, कितने दिनों से मैं मानो आफिस की चहारदीवारी और कलकत्ता के शोरगुल में कैद पड़ा था। इस बार सहज मुक्ति स्वयं सामने आ खड़ी हुई। तुम जब तक कहोगी, मैं रहूंगा। अब मुझे याद आ रहा है, उस रात सपने में मैं तुम्हारे लिये बहुत-बहुत रोया था। सपने में रोने से प्यार क्या सच्चा नहीं होता, सफल नहीं होता ?

यह सब याद आने पर शांत नहीं रहा जा सकता। वापस आने पर सोच न पायी कि वह क्या करे। सुरेश की बातों में कितना दर्द छिपा है! वापस आते ही उसने सोचा था, बाथरूम में घुस पड़ेगी। लेकिन सुरेश की आखिरी बातों ने उसे अश्चर्यित कर दिया है। नहीं; अभी कुछ सोचने का समय नहीं है, बहुत काम है। पैनट्रि में बावर्ची क्या कर रहा है ? सुरेश साहब के लिये चिकेन रोस्ट, चिकेन फ्राइ, ग्रीन पीज, सलाद यानी एकदम अंग्रेजी खाना बन रहा है। खाने के बाद एक कप कॉफी चलेगी। खाना तैयार होने में और कितनी देर है, अभी यह सब देखना जरूरी है।

वह झटपट उठ पड़ी। यह सब बाद में भी सोचा जायगा। इस तरह सुरेश को इतने निकट पाने का उसे कभी सौभाग्य होगा, उसने सपने में भी नहीं सोचा था। बाथरूम में जाने के पहले एकबार वह पैनट्रि के दरवाजे पर गयी।

—मैं आ रही हूँ अब्दुल, तब तक तुम मांस में मक्खन मिलाओ।

यह कह कर वह सीढ़ी वाले कमरे का दरवाज़ा पार कर बालकोनी के उस ओर चली गयी। दरवाजा ठेल कर अन्दर जाते ही शीशे में उसका चेहरा उभर आया। धूप में घूमने से आँखों के नीचे काला पड़ गया है। वह मानो लंबे अर्से बाद अपने आप को शीशे में देख रही है। शीशे के सामने थोड़ी देर खड़े रहने की इच्छा हो रही है। भली-भाँति चेहरा देखने की इच्छा हो रही है। बाल कपाल पर बिखरे हुए हैं। बचपन की भाँति अभी अपने आप से प्यार करने की बड़ी इच्छा हो रही है।

शीशे के सामने से हटने की इच्छा नहीं हो रही है। आँखों का आकर्षण कितना दुर्निवार होता है! शरीर का अद्भुत गठन, छाती की गोलाइयाँ, हाथ की सुकोमल मसृण रेखाएं जो पानी की रेखाओं की तरह नाचती फिरती हैं, शीशे के सामने खड़ी होकर वह यह सब देख पाती है, अपनी सुन्दरता को समझ पाती है।

वह बोली, अपने आप से बोली, नहीं, अभी नहीं। फिर आऊंगी। क्यों, ठीक है न? अभी अगर खड़ी-खड़ी तुम्हें देखती रही अंजली, तो देर हो जायगी। साहब के पेट में चूहे कूद रहे हैं, समझी। आज उसे बहुत दौड़ाया है। पहाड़ घूम कर आने के बाद अभी उसके पेट में क्या हो रहा है, मैं जानती हूँ। उसे बिना खिलाये-पिलाये मैं तुम्हारे सामने निश्चिन्त हो खड़ी नहीं रह सकती अंजली। अब मैं चली। उसने अपने आप से बिदाई मांगी।

वह बाथरूम से बाहर आ गयी। उसने पैर धोये। हाथ-मुँह धोकर वह अब्दुल के पास आ खड़ी हुई।

—लेटूस लाये हो?

—हाँ, मेम साब।

—कहाँ है?

उसने एक टब से लेटूस के पत्ते निकाल कर दिखाये।

—ताजा है न?

—हाँ, मेम साब।

—कितने दिनों से अंग्रेजी खाना नहीं बनाये हो?

—एक अर्सा बीत गया मेम साब।

—साहब बहुत बड़े आदमी हैं। खूब मन लगा कर बनाना।

—बेहतरीन होगा मेम साब।

—बहुत अच्छा। यह क्या कर रहे हो ?

—सूप बना रहा हूँ।

—हड्डियाँ निकाल लेना, नहीं तो सूप अच्छा नहीं होगा।

—आप बजा फर्माती हैं।

—टमाटर दोगे न ?

—हाँ।

—अच्छा होने पर इनाम मिलेगा।

—कौन देगा मेम साव।

—सुरेश बाबू देंगे।

खुशी से अब्दुल की भौंहें थिरक उठीं। बोला, सालसाल से बड़ा-बड़ा इनाम पाया है मेम साव। वो वार का जमाना था। हम शिप में सर्विस करता था।

इस बार अंजली एकदम बिगड़ गयी। अब्दुल का यह स्वभाव-सा बन गया। अंग्रेजी खाना बनाते वक्त वह अंग्रेजी मिश्रित उर्दू बोलता है। शायद इस तरह बोल कर वह प्रमाणित करना चाहता है कि वह कितने बड़े साहब के लिये खाना बना रहा है।

—मेम साव, हमारे साव का नाम टंडन साव था।

—ठीक है, टंडन साहब की कहानी बाद में सुनूंगी। कितनी बार तो सुना चुके हो, सुनते-सुनते कान थक गये हैं।

—नहीं मेम साव, आपने तो बस थोड़ा-थोड़ा सुना है, पूरा तो सुना ही नहीं सका हूँ। क्या दरिया-दिल···

—बस, बस बन्द करो। एक काम करो, उधर का गिलास पानी में डाल दो।

—इतनी जल्दी क्या है मेम साव ?

—जो कहती हूँ, करो।

इतना कह कर अंजली अपने कमरे में चली आयी। उसके बाद पुकारा, मोहिनी।—मोहिनी के करीब आने पर बोली, यह ले जाओ। गेस्ट-साहब साहब के बाथरूम में दे आओ।

कुछेक क्षण बाद ही मोहिनी वापस आ गयी।—वह सब कुछ मांग रहे हैं बीबी जी।

—बाथरूम दिखा दिया था।

—बोली थी, चलिये; पर वह बोले थोड़ी देर बाद।

—क्या कर रहे हैं ?

—पलङ्ग पर लेटे हैं।

अंजली मन-ही-मन हँसी। सीधे रास्ते से आने के लिये पहाड़ पर चढ़ना पड़ा है। यहाँ रहने के कारण अंजली के लिये पहाड़ पर उतरना-चढ़ना एक खेल-सा बन गया है। जब चमन नहीं रहता है, वह इसी पहाड़ से होकर जङ्गल पार कर झरने पर चली जाती है। उसके बाद झरने के पानी से बने निर्मल सरोवर में दो-चार रंग-बिरंगे पत्थर फेंकती है। पत्थर फेंकने पर जो आवाज होती है, उसे लगता है मानो अतल गहराइयों से असंख्य दु.ख एक साथ निकल कर रो पड़े हैं। वह पत्थर की आवाज पर या पत्थर फेंकने से जो पानी में वृत्त तैयार होता है, उसे देख-देख कर अन्यमनस्क-सी हो जाती है। वह तो जानती नहीं कि यह रास्ता किसी-किसी के लिये कितना भयंकर है, कितना दुर्लंघ्य है। इतनी सीधी चढ़ाई चढ़ कर सुरेश साहब के हाथ-पांव थक गये हैं। लगता है, वह एक बेजान लाश की तरह पड़ा होगा। समझ रहा होगा कि अंजली अभी भी कितना तेज भाग सकती है। सुरेश साहब की क्या मजाल, जो उसे दौड़ कर पकड़ ले।

स्वभावतः मनुष्य जो कुछ खोता है, उसे फिर पाना चाहता है, जो दुर्लभ है उसे प्राप्त करना चाहता है। अंजली भी यही सब सोच-सोच कर व्याकुल हो रही है।

दायीं ओर वाले बरामदे पर आकर अंजली ने झांका, वह दीखता है या नहीं! अगर इधर की खिड़की खोली जाय, तो सुरेश को देखा जा सकता है। सभी जानते हैं कि सुरेश साहब उसके रिश्तेदार हैं, वह चाहे तो अभी उसके कमरे में जा सकती है। उसे अन्दर जाने की बड़ी इच्छा हो रही है। पैताने में चुपचाप बैठे रहने की इच्छा हो रही है। और बीच-बीच में दो-चार बात। लेकिन अभी-अभी वह उसे साथ ले आयी है। अभी-अभी वह उसे छोड़ कर जो कुछ करना था यानी बावर्चीखाना देख आयी है। अभी किस बहाने उसके कमरे में जाय, मन-ही-मन वह कैसा संकोच महसूस कर रही है। मानो इतना कुछ उस लाइसेंसधारी आदमी के लिये किया जा रहा है। अभी चमन की याद आने पर उसे कोई खुशी नहीं होती। मन घृणा से भर उठता है।

वस्तुतः वह जो कुछ कर रही है, भावुकतावश ही कर रही है। चमन के परामर्श ने उसे बड़ा छोटा बना दिया है। अगर ऐसा न होता, तो वह जीवन भर सुरेश के साथ घूमती-फिरती। हँसती, मजाक करती, गप्प लड़ाती। सुदूर

में जो सब पहाड़ हैं, वहाँ उसे साथ ले जाती और चुपचाप बैठी रहती। जङ्गल के अन्दर घुसने पर शायद सुरेश डर जाता और उसका भयभीत चेहरा देख कर वह कहती, सुरेश मैं यहाँ हूँ, तुम आओ।

पास आने पर कहती, मैं इस पेड़ पर सहारा दिये खड़ी हूँ, तुम घूम-फिर कर अच्छी तरह देख लो। कितनी सुन्दर जगह है। तुम देखोगे, तो यहाँ के प्यार में बन्ध जाओगे। देखो, मैं पेड़ पर सहारा दिये खड़ी हूँ, तुम्हारे साथ नहीं घूम रही हूँ। आश्चर्य ! मुझे तो नींद आ रही है। इस तरह पेड़ पर सहारा दिये खड़ी रहने पर मुझे नींद आने लगती है, बता सकते हो ऐसा क्यों होता है ?

लेकिन वह यह सब कुछ भी नहीं कह सकेगी। क्योंकि उसका मन उसे बार-बार कहता है, वह सब कुछ चमन के खातिर कर रही है। यह बात मन में आते ही उसके हाथ-पाँव ढीले पड़ जाते हैं। नहीं सुरेश, मैं सब कुछ भावुकतावश कर रही हूँ। मुझे लगता है, जब तक तुम मेरे पास रहोगे, मैं एक-एक क्षण का उपयोग करूंगी। इस थोड़े समय में ही मैं अपने जीवन की सारी इच्छाएँ, सारे सपने पूरा कर लूंगी।

अपने आप से समझौता करती हुई वह जहाँ-का-तहाँ खड़ी है, हिल तक नहीं पाती। किस तरह सोया हुआ है बेचारा ? क्या पहाड़ी रास्ता तय करने से सचमुच में चेहरा धंस गया है ? थकने पर थोड़ा आराम करने के बाद ही बाथरूम जाना चाहिये। वह किस तरह उसके पास जा खड़ी होगी और कहेगी, तुम नहा आओ सुरेश। गरम-ठंडा जो चाहिये, सारा इन्तजाम है। इस तरह सोये रहने से आलसी बन जाओगे। तुम तो हमेशा से आलसी रहे हो। काश, दो मुट्ठी यदि खाने को मिल जाता, तो मुझे इतनी दूर आना ना पड़ता !

वह क्या सब सोच रही है। नीचे, बहुत नीचे पहाड़ी गाँव दीख रहा है। गाँव के छोटे-मोटे मकान देखते ही उसके मन में एक अजीब-सी इच्छा जन्म लेती है। मिट्टी के दो साफ-सुथरे छोटे-छोटे कमरों का घर, पति साइकिल चलाते हुए आयगा, वह शाम होते ही सज-धज कर दरवाजे पर जा खड़ी होगी और तब तक इन्तजार करेगी जब तक उसका अपना आदमी शहर से वापस न आ जाय। नहीं, इससे ज्यादा और कुछ उसने नहीं चाहा था। लेकिन हाय, भाग्य में तो सिर्फ रोना लिखा था। एक अन्धेरी गली, लैंपपोस्ट पर टेक दिये खड़े पति का चेहरा, और मुँह से निकलती हुई बदबू के अलावा वह और कुछ भी याद नहीं कर पाती। हाँ, कुछ अत्याचार के दृश्य उसकी आँखों के सामने

नाच उठते हैं। उसका मारना-पीटना, चीखना-चिल्लाना और अंजली का चू तक नहीं करना। असह्य अत्याचार में भी वह कभी रोयी नहीं थी।

पता नहीं अभी यह सब उसे क्यों याद आ रहा है! वह अपने अतीत को इतनी गहराई में दफना चुकी है कि उसे उभरना नहीं चाहिये। वह एकदम बंगाली स्त्री ही क्यों रह गयी! चमन के साथ उसने दुनिया देखी है। जरूरत पड़ने पर अकेली भी दिल्ली-पटना जाती रही है। वह चमन की ओर से बड़े-बड़ों के साथ उठी-बैठी है। शराब की पार्टी में शामिल हुई है। शरीर प्रदर्शन में उसने कमाल हासिल किया है। कभी-कभी शीशे के सामने ही अपने आप से पूछती है, तुम कौन हो? अंजली या निर्मला? बताओ, तुम्हारा असली परिचय क्या है? चिबुक पर उंगली रख कर बोली है, चुप क्यो हो, बोलती क्यों नहीं? ओ, संकोच हो रहा है! वाह री, सती-सावित्री! —कह कर निर्मला जोरों से हँस पड़ती है। इस हँसी से चमन बड़ा भयभीत हो उठता है। उसे भय होता है कि निर्मला कहीं हँसती-हँसती पागल न हो जाय।

चमन की आवाज तैर आती है छिः निर्मला क्या कर रही हो! अभी तक वह बेहोश नहीं हुआ और तुम हँस रही हो!

—मैं हँस रही हूँ!

—और क्या कर रही हो!

—यानी मैं हँस सकती हूँ!

—हाँ। हँस सकती हो, रो सकती हो, सब कुछ कर सकती हो; पर अभी चुप रहो। शिकार जाल में फंसता जा रहा है। काम हो जायगा। तुम अपनी गलती से बनता हुआ काम न बिगाड़ो रानी।

—तुम चाहते हो, काम न बिगाड़ूं?

—अगर उसे पता चल गया कि तुम मेरी पत्नी नहीं हो, तो सब मिट्टी में मिल जायेगा।

—और अगर उसे पता चल जाय कि मैं वेश्या हूँ, तब तुम्हारा काम नहीं होगा?

—नहीं होगा निर्मला।

—ठीक है, तब मैं तुम्हारी पत्नी ही बनी रहूंगी। हाँ, बताओ, अब मुझे क्या करना होगा?

—फिर जाओ। बातचीत करो। कह दो, वह घर पर नहीं हैं। वापस नहीं आयेंगे। बिना यह सब कहे, उसे साहस कैसे होगा ?

—फिर वह मुझ से क्या करेगा ?

—करेगा भला क्या ! बड़ा भला आदमी है।

—नहीं, भला नहीं है। वह मुझे चिबा-चिबा कर खायेगा।

—ओपफो निर्मला !

—तुम मुझे धमका रहे हो ? —निर्मला चमन पर अपनी आँखें जमा देती है। चमन आँख मिलाने का साहस नहीं कर पाता है। किसी तरह कह पाता है, नहीं, मैं धमका नहीं रहा हूँ। ठील नहीं हो सकेगा और क्या !

—नहीं होने से क्या होगा ?

—इतना बड़ा लाइसेन्स हाथ से निकल जायेगा। गुरन सिंह मजा लूटेगा।

—गुरन सिंह ?

—और नहीं तो कौन ?

—फिर मजा लूटने आया है ?

—यही तो सुन रहा हूँ।

—हाय, कितनी मिठास है तुम्हारी बोली में चमन ! तुम्हें बिना चूमे मैं नहीं जाऊँगी।

—चूम लो भाई।

और फिर वही लड़खड़ाते कदमों की हलकी-हलकी आवाज, पायल होने जैसी हल्की आवाज सुनायी पड़ती है। इस तरह की आवाज करती हुई कितनी आसानी से यह युवती अपने आप को हार सकती है। हरा सकती है।

खाने की टेबिल पर सुरेश बोला, मैं तुम्हें देख रहा था।

—कहाँ ?

—तुम बालकोनी पर खड़ी-खड़ी क्या सोच रही थी ?

—कब ?

—यही करीब ग्यारह बजे।

—सोच रही थी तुम्हें बुलाने तुम्हारे कमरे में जाऊँ या नहीं। तुम नहाने नहीं जा रहे थे। मोहिनी ने आकर कहा था कि तुम सोये हुए हो।

—काफी थक गया था।

—मैंने नहीं सोचा था कि इतनी-सी चढ़ाई चढ़ने पर तुम इतना थक जाओगे।

—आदत नहीं है न। —कह कर उसने देखा, अब्दुल खाना लगा रहा है। उसने पगड़ी बांधी है। कमर में तमगा है। ग्रीन पीज, सैंड विच, वेजिटेबल राइस, फिश चाप और सलाद। रंग-विरंगे चीनी मिट्टी के वर्त्तन।

—यह सब क्या हो रहा है!

—क्या हो रहा है?

—तुम तो मुझे एकदम साहब बना रही हो।

—चमन अक्सर तुम्हारी पार्टियों की चर्चा किया करता है।

—अच्छा!

—उस समय तो तुम्हें सुरेश साहब के रूप में जानती थी। तुम अपना वही सुरेश हो, कापुरुष सुरेश, भला क्यों कर जानती?

सुरेश जानता है कि अंजली यह सब मजाक में कह रही है। फिर भी इस मजाक में एक तीखा व्यंग्य छिपा है। वह समझता है और समझने के कारण ही हाथ में चम्मच लिये चुप बैठा है।

अंजली पुन: किंचित सहज होकर बोली, चमन मुझ से कह गया है, चमन साहब का लंच साहबों जैसा होना चाहिये।

—ऐसा कहा है!

—हाँ। बोला है, दोपहर में चावल खाने से उन्हें दफ्तर में नींद आती है।

—सो तो है। लेकिन मुझे यहाँ छोड़ कर वह तो काम पर निकल गया। आज मेरी ऑफिस कहाँ है? और फिर तुम्हें तो पता है न कि भात-दाल, मछली मुझे कितना पसन्द है! यह सब मैं उतना पसन्द नहीं करता।

अंजली बोली, तुम्हें तकलीफ होगी?

—तकलीफ भला क्या होगी! चमन ने तो मेरा पूरा दिन बेकार कर दिया है। भात-दाल और मछली खाकर आराम से खर्राटे भरता। यह सब खाने पर नींद नहीं आयेगी। छुट्टी का दिन भी ऑफिस का दिन प्रतीत होगा। —यह कह कर सुरेश जोरों से हँस पड़ा।

अंजली बोली, तुम अब पहले जैसे नहीं रहे सुरेश।

सुरेश चम्मच से थोड़ा-थोड़ा सूप ले रहा है। नैपकिन नीचे है। अब्दुल बाहर खड़ा है। सुरेश कोई उत्तर नहीं दे रहा है। अंजली बार-बार एक बात कह रही है। पहले जैसा कोई नहीं रहता। अब चेहरे पर कर्त्तव्य की छाप

दीखती है। अब अगर वह पहले जैसा होता, तो इतनी बड़ी कम्पनी का इतना बड़ा जिम्मेदार पदाधिकारी नहीं हो सकता। यही जो वह यहाँ आया है और चमन उसे यहाँ छोड़ कर चल दिया है, कोई और समय होता, तो पता नहीं क्या कर बैठता। लेकिन अंजली से कितने दिनों बाद मुलाकात हुई है! शायद फिर कभी मुलाकात नहीं होगी। क्योंकि अंजली का स्वभाव है अज्ञात रहना। इसलिये वह कुछ नहीं बोल रहा है; हालांकि मन-ही-मन अपने आप को कोस रहा है और शायद उसका ऐसा चेहरा देख कर ही अंजली समझ रही है कि अब वह पहले जैसा नहीं है। वह तो मानो पूछना तक भूल गया था, अब पूछ रहा है, तुम मेरे साथ खाने नहीं बैठी? कब खाओगी?

—बाद में खाऊँगी।

—क्यों, मेरे साथ खाओ न।

—चमन कुछ सोच सकता है।

सुरेश एकदम ठंडा पड़ गया। सच ही तो, वह किस प्रकार ऐसी बात मुँह से निकाल सका। बोलने के पहले उसने एकबार भी नहीं सोचा कि ऐसी बात कहनी चाहिये या नहीं। अंजली चमन की पत्नी है। चमन की अनुपस्थिति में उसे ऐसा अनुरोध नहीं करना चाहिये। हालांकि सुबह इस तरह की बात उसके मन में एक बार भी नहीं आयी थी। मन में नहीं आयी थी; क्योंकि अंजली ने ऐसा सोचने का अवसर ही नहीं दिया था। सुरेश चुपचाप खाये जा रहा था। दो-चार बात की, जो बोलना जरूरी है। वह पकड़ा गया है। रक्षा पाने के निमित्त बोला, तुम्हारी सेहत यहाँ अच्छी रहती है न?

—हाँ, देख ही रहे हो।

—देख रहा हूँ; फिर भी हमें कुछ बोलना चाहिये अंजली।

—लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि तुम से और क्या बात करूँ।

—तुम बड़े कापुरुष हो सुरेश।

—और कितनी बार कहोगी?

—क्यों न कहूँ? तुम तो कह सकते थे, चमन घर पर नहीं है, साथ खाने से कुछ नहीं होगा।

—तुम ने मुझे ऐसा क्यों कर सोच लिया?

अंजली समझ गयी, मजाक कुछ तीखा हो गया। मजाक तीखा हो गया या वह और कुछ सोच रहा है? वह क्या स्वेच्छा से ऐसा कर रही है, वह क्या उसकी बन कर कुछ नहीं कर रही है, या अपने लिये कर रही है?

अंजली बोली, सुरेश, तुम्हें चोट पहुँचेगी, नहीं जानती थी। दरअसल बात क्या है जानते हो, हम दोनों की बात कब की खत्म हो चुकी है। यही कारण है कि हमें बात करने को कुछ भी नहीं मिलता। इसलिये हम बना-बना कर बातें करते हैं।

खाने के बाद काफी की चुस्कियाँ लेते हुए सुरेश बोला, शायद ऐसा ही होगा।

—लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये था। तुमने मुझे वचन दिया था।

—दिया था।

—तुमने कहा था कि मुझ से शादी करोगे।

—कहा था।

—तुम ने कहा था कि मुझ से शादी करोगे; पर तुमने मेरी दुर्बलता का नाजायज फायदा नहीं उठाया था। तुम ने मुझे पवित्र रखना चाहा था।

—हाँ, चाहा था।

—फिर तुम एक सामान्य भय से भयभीत होकर क्यों चुप हो रहे सुरेश ?

—धीरे-धीरे अंजली, अब्दुल बरामदे पर है।

—सुने, हर कोई सुने। मुझे अब कोई डर नहीं है। अब मैं सारी दुनिया को ढिंढोरा पीट कर बता सकती हूँ, एक आदमी ने हमेशा मुझे सतीसाध्वी बनाये रखना चाहा है। अभी भी वह मुझे पवित्र बनाये रखना चाहता लेकिन सुरेश तुम विश्वास करो, अब मुझ में कुछ नहीं है। मैं एकदम क हूँ। —कह कर वह एक विचित्र हँसी-हँसी। —जबर्दस्त नाटक हो र सुरेश। तुम्हारा खाना हो चुका, जाओ आराम करो।

—और कुछ न कहोगी ?

—नहीं।

—जैसा नाटक तुमने किया है, वैसा मैंने भी किया है। सारी न सका हूँ। क्यों हमारी मुलाकात हो गयी ! तुम यदि दर्शक हो रात मुझे एक क्लाउन के अलावा और कुछ न समझती।

—सच !

—मैं अकारण झूठ नहीं बोलता।

फिर दोनों चुप। दीवारों पर महापुरुषों की तस्वीर। तस्वीर देख रहा है। पास ही एक कुर्सी पर सिर झुकाये उसके बालों की सुगंध सुरेश को मिल रही है। वह

इसलिये उसके कंधों की कोमल त्वचा सुरेश को आकुल बना रही है। ऐसा लगता है कि अंजली सिर झुकाये आँसू बहा रही है। ठीक-ठीक समझ में नहीं आता कि वह इस तरह सिर झुकाये क्यों बैठी है। रोने की आवाज सुनायी नहीं पड़ती। इस तरह सिर झुकाये बैठे रहने का और क्या कारण हो सकता है, सोचते ही ऐसा प्रतीत हुआ कि कहीं बारिश हो रही है। आसमान के छोटे-छोटे मेघ कहीं बारिश कर रहे हैं।

कमरे की निस्तब्धता भंग करने के उद्देश्य से सुरेश इस बार बोला, मेरी बड़ी इच्छा थी कि एक दिन तुम्हारे साथ जाऊँ। बुआ जी कभी भी हम दोनों को एक साथ जाने नहीं देती थीं। तुम्हें इस बात का बड़ा दुःख था।

अंजली पूर्ववत् मुँह झुकाये बैठी है। लगता है, अन्यमनस्क हो गयी है। पाँव के नाखून से फर्श पर लकीर खींचने की कोशिश कर रही है। शायद अन्यमनस्कता के कारण ही समझ नहीं पाती कि यह मिट्टी नहीं; बल्कि पत्थर है। मन के अन्दर का मिट्टी जैसा नरम अंश कब का कठोर हो चुका था, आज पुनः पुरानी बातें याद आने पर आर्द्र होता जा रहा है।

—क्या हुआ, कुछ बोलती क्यों नहीं ?

—बताओ, क्या बोलूं !

—कुछ भी।

—बाल-बच्चे होते, तो उनके विषय में बात की जा सकती।

—सर्दी में यहाँ कौन-कौन-सा फूल खिलता है ?

अंजली जानती है, यह महज बात करने के लिये बात है। फिर भी उसे थोड़ी राहत मिली। मुँह उठाते ही सुरेश कहीं देख न ले, यह सोच कर वह इस तरह मुँह पलट कर उठ खड़ी हुई कि सुरेश उसका चेहरा न देख सका। अंजली जब वापस आयी उसके चेहरे पर पानी की बूंदें झिलमिला रही थीं। बात करती-करती बड़े मोहक अन्दाज में आंचल से उसने अपना चेहरा पोंछ लिया। अब वह एकदम सहज दीख रही है।

—सर्दी में यहाँ रंग-बिरंगे गुलाब खिलते हैं।

—तुम्हारे बाग में काला गुलाब है ?

—यह क्यों पूछ रहे हो ?

—यूं ही। सुना है, काला गुलाब रेयर ही देखने को मिलता है। इसलिये पूछ रहा था।

—चलो, बाग में चलें। अपनी आँखों से सब कुछ देख लेना। काला

गुलाब है; पर खिलना नहीं चाहता। एक बार एक कली हुई थी; पर ओला पड़ने से टूट गयी। खिल न सकी।

—गुलाब तो मैंने आस्ट्रेलिया में देखा था। कम्पनी की ओर से एक कानफरेंस में मैं मेलबार्न गया था। सात-आठ दिन थो। मुझे मुफस्सिल में टिकाया गया था। शहर ट्रेन से जाना पड़ता था। जहाँ तक मुझे याद है, उस जगह का नाम एरोवेल है। मकान लकड़ी के हैं। नीले रङ्ग की खिड़कियाँ और रेलिंग पर लाल, पीले और सफेद गुलाब। उन लोगों ने गुलाब की इतनी अच्छी खेती किस तरह सीखी!

अंजली उठ खड़ी हुई। सुरेश भी उठा। दोनों कारिडार से गुजर रहे हैं। सुरेश समझ रहा है कि अंजली उसके करीब रहना चाहती है। जब तक इस तरह रह सके। उसने एक प्रिंटेड साड़ी पहन रखी है। साड़ी पर फूल और पत्ते अङ्कित है। पीठ पर रंग-बिरंगे फूल-पत्ते दीख रहे हैं। पाँव में आलता लगाने के कारण उसके पाँव भी लाल हैं। ओठों पर नाममात्र का लिपस्टिक। दोनों ओठ काफी सुन्दर दीख रहे हैं। वह चूंकि मुँह धो कर आयी थी; इसलिये ओठों का रङ्ग कुछ हल्का पड़ गया है। फिर भी दोनों तरफ को प्लास्टिक कलर दीवारें, दीवारों पर किये गये विभिन्न प्रकार की कारीगरी महोगनी के कीमती फर्नीचर की गंध, और पीतल के गमले में लगे कीमती मनी प्लांट ने अंजली को एक रहस्यमयी नारी बना रखा है। वह इस महल की महारानी है। उसकी एक आवाज पर नौकर-नौकरानियों की भीड़ लग जाती है। चलते-चलते सुरेश बोल उठा, तुम्हें शायद इस तरह मैं नहीं रख पाता अंजली।

—तुम ने तो कहा था कि फूल देखोगे; फिर यह सब बात क्यों?

—अधिकता देख कर पता नहीं मुझे क्यों यह कहने की इच्छा हुई।

—तुम इतने बड़े आदमी हो; फिर भी सिर्फ अधिकता देख कर निर्णय ले बैठे।

—स्त्रियों के लिये क्या यही सब कुछ है।

—किसने कहा!

—महापुरुषों ने।

—महापुरुषों ने ठीक नहीं कहा है।

—हम साधारण आदमी हैं, हम महापुरुषों का ही अनुसरण करते हैं।

—तुम लोग कर सकते हो, मैं न करती हूँ, न किया है। क्योंकि वे लोग बहुत सारी बात झूठ बोल गये हैं।

जाते-जाते सुरेश ने एक बार पलट कर अंजली की ओर देखा। अंजली

समझ रही है कि सुरेश उसे देख रहा है। वह जितना देख रहा है, अंजली मन-ही-मन उतना खुश हो रही है। उसका आकर्षण कोई कम नहीं है, समझ कर बोली, दो-चार दिन नहीं रह सकते ?

—रहने की इच्छा तो थी; पर चमन जिस तरह सेवा-सत्कार कर रहा है कि रहने को मन हामी नहीं भरता।

—रह जाते तो ये सारे पहाड़ घुमा-फिरा कर दिखाती। पहाड़ों पर इतने रंग-बिरंगे पक्षी हैं जो समतल मैदान में नहीं दीखते। उन पक्षियों का कोई नाम तक नहीं बता सकता। आदिवासी उन पक्षियों के नाम जानते हैं। हमलोग भी उन्हीं नामों से पुकारते हैं। क्षण भर रुक कर बोली, तुम्हें पक्षी दिखाने का मुझे बड़ा शौक था।

—और कभी आकर देखूंगा।

—तुम फिर नहीं आओगे सुरेश। तुम मुझे झूठी आशा दे रहे हो।

—शायद आऊँगा। लेकिन तुम्हारे पास नहीं। चमन कुछ सोच सकता है। मुझे जगह काफी पसन्द आयी है। कहा नहीं जा सकता, यहाँ एक काटेज भी बनवा सकता हूँ। छुट्टियाँ यहाँ आकर बिताऊँगा।

—ऐसी जगह और तुम्हें कहीं न मिलेगी। मेरे सारे दुःख इन पहाड़ों की गोद में धुल गये, सारी ग्लानि गल गयी। पहाड़ मनुष्य को भिन्न-भिन्न प्रकार से सान्त्वना देते हैं। चारों तरफ हरियाली-ही-हरियाली दीखती है। ऊँचे-नीचे बलखाते पहाड़ी पथ, छोटी-छोटी पहाड़ी चोटियाँ और रंग-बिरंगे पेड़-पौधे हमेशा एक आकर्षण दृश्य की सृष्टि किये रहते हैं। चारों तरफ अतुलनीय सुषमा, प्रकृति की अपार महिमा देखने को मिलती है। —कहकर अंजली ने जीभ काट ली। —तुम्हारे सामने मैं भाषण दे रही हूँ। अब तुम्हें थोड़ा विश्राम करना चाहिये। तुम्हें कष्ट देना अच्छा नहीं।

—सच।

—हाँ, मैं ऐसा ही समझती हूँ।

—ठीक है, तीसरे पहर फिर मुलाकात होगी।

तीसरे पहर सुरेश ने देखा, चमन लौट आया है। चमन की सफेद गाड़ी नीचे खड़ी है और आउट हाउज़ के पास दो कर्मचारी खड़े हैं। दोनों चमन की गाड़ी के निकट हैं। दरवान भाग कर गाड़ी का दरवाजा खोलता है। जिस

कमरे में सुरेश रहता है, उसके पास एक छोटा-सा पाइन का पेड़ है। नींद टूटने पर वह पाइन के पेड़ तले आ खड़ा हुआ था।

चारों तरफ धूप बिखरी हुई है—सुनहली धूप। हवा ज्यादा ठंडी नहीं है। मख़मली घास और पहाड़ों की सुन्दरता देखने लायक है। ऐसा लगता है, कोमलता मानो साकार हो उठी है, सुषमा सजीव हो उठी है। खड़े-खड़े वह यही सब देख रहा था और अंजली के एक सामान्य अनुरोध "दो-चार दिन नहीं रह सकते" पर विचार कर रहा था। अजीब बात है, यहाँ आने पर मानो वह अपनी जिम्मेवारियाँ भूल गया है। एक कैसा आलस्य उस पर छा गया है। लीला या इतु की याद तक नहीं आती। उन्हें छोड़ कर वह कभी भी ज्यादा दिन अकेले नहीं रहा है। शादी के बाद कान्फरेंस के सिलसिले में दो-चार बार बाहर जाना पड़ा है; फिर भी ज्यादा दिन बाहर नहीं रहा है। ज्यादा दिन होने पर लीला के सामने दुनिया भर का बहाना बनाना पड़ा है, तब कहीं छुटकारा मिला है।

हालांकि यहाँ आने पर लीला और इतु की याद भी नहीं आती। वे तो उसके जीवन में एक नियम-सी बन गयी हैं। वह जानता है कि चमन इसी बीच अपना सब कुछ ठीक कर आया है। आज अनियम में पड़ कर भी उसे अच्छा लग रहा है। मानो बहुत दिनों बाद वह अनियम का खेल खेल रहा है और बढ़ जायेगा। सुबह उठते ही अखबार चाटना, साबुन, सेविंग क्रीम और स्नान। चटपट कुछ स्नैक्स खाकर बाहर निकल पड़ना। गाड़ी के अन्दर एक नीरस जीव बना रहना। आफिस में गम्भीर बना रहना। फाइलों की खोज-खबर, रेट और कास्टिंग में पूरा दिन गुजर जाना। खिड़की खोलते ही वह समझ जाता है कि नदी के उस पार कल-कारखानों की चिमनियों के अन्दर दिन का सूरज डूबता जा रहा है, उसकी पत्नी लीला ने अब सजना-संवरना शुरू कर दिया है. इतु को सजा-धजा कर आया मुख्य सड़क पर या किसी पार्क में घुमाने ले जा रही है। ये सारे काम जब नियम-सा बन जाते हैं, तब अच्छा नहीं लगता। या अच्छा नहीं लगता का आभास उसे यहाँ आने पर मिल रहा है। यहाँ खड़ा होकर पहाड़ की चोटियों पर पक्षियों का कलरव सुनना उसे अच्छा लग रहा था।

'अच्छा नहीं लगता था' कहना गलत होगा, वह एक विचित्र आकर्षण में फंसता जा रहा था। वह जानता है, अंजली भी अभी बालकोनी पर खड़ी-खड़ी पुरानी बातें याद कर कष्ट पा रही है। या वह भी पक्षियों का कलरव सुन रही है।

और भी सोच रहा था, जङ्गल में भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षी हैं। यदि वह और अंजली जायँ और जङ्गल में चिड़िया खोजते फिरें तो क्या बुरा है! सुबह-ही-सुबह दोनों निकल पड़ेंगे। खाना साथ रहेगा। पानी रहेगा। दिन भर पहाड़ों पर घूम कर शाम से पहले वापस आ जायेंगे। यह सब सोचते-न-सोचते याद हो आया, अंजली चमन की पत्नी है। सुबह चमन को बिना बताये अंजली एक गलत काम कर बैठी है, फिर ऐसा होने पर बड़ा बुरा होगा और इसमें उसका दिल भी गवाह न देगा। फिर भी मन-ही-मन वह ऐसा क्यों सोच रहा है कि इन पहाड़ों में एक सुन्दरी युवती होगी, फूल-पत्ते अङ्कित रेशमी साड़ी में वह सिमटी होगी। पांव में आलता होगा, ऊँचा जूड़ा होगा। और कोई छोटा-सा अनजान सोता पार करते वक्त उसकी चञ्चलता में वह खो जायेगा। वह ऐसी कल्पना कर ही रहा था कि देखा, चमन वापस आ रहा है। उसकी गाड़ी मिशनरी हास्पिटल की बगल से भागती आ रही है। कालेज के टावर का घंटा बज रहा है—तीन, चार, पांच। घंटे की आवाज के साथ-साथ उसके हृदय में एक अजीब-सी आग धधक उठी, करीब पाने की इच्छा से वह छटपटा उठा और ठीक उसी समय आउट हाउज के पास चमन की विशाल गाड़ी धच से रुकी। दरवान दरवाजा खोल रहा है। दोनों कर्मचारियों से वह कुछ कह रहा है। दोनों थैले में नीचे से कुछ उठा कर ला रहे हैं। उठाने में बड़ी सावधानी बरती जा रही है।

दूर से चमन ने देखा, सुरेश पाइन के पेड़ तले खड़े हैं। सुरेश साहब को देख कर वह मुस्कराया और हाथ हिलाया। अभी उसे देख कर ऐसा लगता है कि वह सारी दुनिया विजय कर आया है।

पास आते ही थैले से एक बहुत बड़ी रोहु मछली निकाल कर बोला, निर्मला की बड़ी इच्छा है, आपको मछली खिलाये। यहाँ आसपास में मछली नहीं मिलती। सुबह-सुबह अच्छी मछली की तलाश में निकल पड़ा था।

मछली की तलाश में उसे कहाँ-कहाँ भटकना पड़ा है, यानी चमन और उसकी पत्नी सुरेश साहब को खुश करने के लिये क्या कुछ नहीं कर सकते, जान की बाजी तक लगा सकते हैं। यह सब जान कर सुरेश बोला, लेकिन चमन मेरे हाथ में समय बहुत कम है और काम कुछ न हुआ। तुम चले गये।

—मैं नहीं गया साहब, निर्मला ने मुझे जबर्दस्ती भेज दिया। अच्छी मछली न होने पर······।

—तुम और किसी को भेज सकते थे।

—उन लोगों की बात छोड़िये। वे बहुत करने, तो नालिपोला तक जाते। वहाँ की एक पहाड़ी नदी में कभी-कभार मछली मिल जाती है। नहीं मिलने पर वापस आ जाते।

—और फिर यह सब करने की जरूरत ही क्या है। मैं आफिस के काम से आया हूँ। तुम अगर इतना कुछ करने लगोगे, तो बड़ा बुरा दिखेगा।

चमन को पता है कि सुरेश साहब बड़े कड़े आदमी हैं। मुँह पर साफ-साफ बोल देते हैं। किसी को वह नहीं छोड़ते। चिकनी-चुपड़ी बात करना तो वह जानते ही नहीं, मन-ही-मन गुस्सा जायँ, तो बचने का कोई उपाय नहीं। यह सोच कर बोला, आप बुरा मानेंगे सर, तो निर्मला को बड़ा दुःख होगा।

सुरेश को कभी-कभार क्या हो जाता है! कुछेक क्षण पहले भी वह सोच रहा था, एकबार वह पहाड़ पर जायेगा, रंग-बिरंगी चिड़िया देखेगा, अंजली साथ होगी। अंडानुमा कीमती सफेद गाड़ी पहाड़ी रास्तों पर भागी जा रही है। दोनों किनारे असंख्य पेड़-पौधे और कीड़े-मकोड़े की गूंजती आवाज। वह गाड़ी चलायेगा या अंजली यदी गाड़ी चलाना जानती होगी, तो वही गाड़ी चलायेगी। कितने सारे आकर्षक दृश्य मन में तैरते रहते हैं। उस समय अपना एक और व्यक्तित्व दौड़ाता-फिरता है। चमन के वापस आते-न-आते ऐसा व्यवहार कर बैठा मानो वह चमन के व्यवहार से कितना नाराज हो गया है। और बोलते वक्त थोड़ा मुस्करा कर अपने व्यवहार पर कोमलता ढालनी चाही है। थोड़ा हल्का करने की जरूरत है। और जरूरत समझ कर ही बोला, फिर कभी छुट्टी लेकर आऊँगा, उस समय जितना जी चाहे खिलाना-पिलाना।

—आप नहीं आयेंगे सर।

—क्यों नहीं आऊँगा ?

—आप बड़े व्यस्त आदमी हैं।

—छुट्टियों में भली कैसी व्यस्तता !

—आप लोगों के हजारों काम हैं।

—ठीक है, काम रहने पर भी आऊँगा।

—अब मेरे लिये तुम इतनी चिन्ता न करो।

जो हाथ में बैग लिये आ रहे थे, चले गये। सुरेश बोला, तुम इतनी तकलीफ झेल कर यह सब लाये हो, और मैं तुम्हें डांट रहा हूँ। मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा है। कह कर वह जोरों से हँस पड़ा।

शायद सुरेश ने सोचा, चमन ने चाहे जो कुछ किया हो, वह यहाँ जिस भी

काम से आया हो, सबसे बड़ी बात यह है कि चमन कम्पनी का कस्टमर है। उसे भी खुश रखना होगा। हालांकि उसकी कम्पनी का कोई योग्य प्रतिद्वन्द्वी नहीं है, सभी कस्टमर कम्पनी की खुशामद करते हैं; फिर भी व्यवसायिक नियम के अनुसार चमन के प्रति कड़ा व्यवहार आपत्तिजनक है। —यह सब सोच कर ही वह कहकहा मार कर हँस पड़ा। सुरेश साहब के प्रति चमन में जो सामान्य भय था, ऐसी हँसी सुन कर वह टूट गया।

चमन उसकी हँसी का साथ देता हुआ हँसते-हँसते चला गया। सुरेश अपने कमरे में वापस आ गया।

थोड़ी देर बाद ही मोहिनी आयी। बोली, चाय पर चमन लाल जी आपका इन्तजार कर रहे हैं। यानी चाय पर अन्दर बुलाया गया है। उसने ट्राउजर पहना। सफेद बुशर्ट और चप्पल पहन कर शीशे के सामने जब खड़ा हुआ, देखा मोहिनी तब तक नहीं गयी है। दरवाजे पर खड़ी है। चेहरा पर कृत्रिम गंभीरता देखने के लिये शीशा देखना बड़ा कष्टप्रद होता है। शीशा में मोहिनी ने उसका मुँह देख लिया है। यह उसे अच्छा नहीं लग रहा है। उसकी कमजोरी पकड़ सकती है, सोच कर बोला, तुम जाओ, मैं आ रहा हूँ।

—साथ लिवा जाने को कहा है।

—ओफ्फो!

उसने थोड़ा क्रीम चेहरे पर मला। सर्दी के कारण सारा शरीर बड़ा रूखा-रूखा-सा लगता है। क्रीम लगाने से चेहरा कैसा नरम और सजीव हो उठा! दिन में सोने के कारण आँखों के नीचे थोड़ा सूज-सा गया है। अब चमन उसे देखते ही समझ जायेगा कि वह केवल रूखा-सूखा आदमी नहीं; बल्कि उसके चेहरे पर भी कमनीयता है, आफिस के सुरेश साहब और इस सुरेश में जमीन-आसमान का फर्क है। मन में चञ्चलता होने के कारण बाहर निकलने से पहले सुरेश थोड़ा गंभीर बन गया।

मोहिनी आगे-आगे जा रही है। बगीचे का फौवारा अभी उतना तेज नहीं है। यहाँ चमन ने किस तरह इतना सुन्दर फौवारा बनवाया है! दिन ढलने पर पानी उतना ऊपर नहीं उठता। तीसरे पहर की पीली पृथ्वी की तरह फौवारा का चेहरा भी विषाद से पीला हो उठता है। चलते-चलते वह ऐसा महसूस कर रहा है।

बालकोनी के इस तरफ पहाड़ सीधा खड़ा है। रेलिंग पर खड़े होने से नीचे देखा नहीं जाता। सिर चकराने लगता है। ऐसा लगता है कि कोई पीछे

से ठेल रहा हो। वह बालकोनी तक पहुँचा ही था कि चमन उठ खड़ा हुआ।

—मैंने झटपट बाथरूम का काम पूरा किया। मोहिनी आपको बुलाने गयी। मेरी प्रतीक्षा न कर निर्मला ने मोहिनी को भेज दिया था।

खुद न जाकर मोहिनी को भेज कर उसने गलत काम किया है, उसके व्यवहार से ऐसा ही आभास मिलता था।

काम की हुई बेंत की कुर्सियाँ। बीच में बेंत की तिपाई। नीले रङ्ग की तीन कुर्सियों के सामने तीन तिपाई। साफ पता चलता है कि निर्मला उनके साथ चाय लेगी। निर्मला रेलिंग के पास बैठेगी, इसलिये उसकी कुर्सी रेलिंग के बिलकुल करीब है। चाय आयी; पर निर्मला नहीं आयी। चमन बुलाने गया; फिर भी नहीं आयी। सुरेश को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि चाय पर अंजली क्यों नहीं आती ! एक साथ चाय पीने में उसे इतनी शर्म क्यों आ रही है ! दोपहर में पास बैठ कर उसे खिलाया है। हाँ, उस समय चमन नहीं था। चमन के न रहने पर उसे साहस होता है, खुल कर चल-फिर सकती है। और चमन के सामने वह एकदम परदानशीन बन जाती है।

सुरेश साहब को इन्तजार करने कह कर चमन अन्दर गया। ऐसा लगा कि वह अंजली से यहाँ आने का अनुरोध कर रहा है। सुरेश को बड़ा आश्चर्य हुआ। दोपहर के समय उसे खिलाने में अंजली का आग्रह याद कर वह मन-ही-मन हँसा। उसे लगा, अंजली सब कुछ चमन से छिपा कर करती है। पता नहीं क्यों अंजली पर उसे बड़ा गुस्सा आया। चमन चाहता है, परिचय हो, घनिष्ठता हो। और फिर वह भी तो जानती है कि चमन उसे कई बार कह चुका है, निर्मला रवीन्द्र सङ्गीत में दक्ष है। फिर अंजली यहाँ आने से इतना डर क्यों रही है ? उसने सोचा मौका मिलने पर अकेले में पूछेगा।

चमन वापस आकर बोला, नहीं आयी। अचानक तबीयत खराब हो गयी है !

झट गुस्सा उठना सुरेश का स्वभाव है। वह मानो चीख पड़ना चाहता था, तुम्हारी पत्नी एक अच्छी-खासी अभिनेत्री है चमन। वह सब कुछ कर सकती है। लेकिन वह चीखा नहीं; बल्कि चाय की चुस्की लेकर शांत स्वर में बोला, आज रात जोरों की सर्दी पड़ेगी।

सुरेश का इतना कहना था कि थोड़ा झुक कर चमन बोल उठा, सर कुछ और न सोचें, तो इस सर्दी में जमेगा बड़ा अच्छा।

सुरेश समझ गया कि चमन क्या कहना चाहता है। बोला, मैं तो इन चीजों से दूर हूँ चमन।

चमन का चेहरा थोड़ा मुरझा गया। यूं ही वह काला-कलूटा है। ठिगना कद। चर्बी का बाहुल्य। सामने वाले दो दाँत सोने में बंधे होने के कारण उसके हँसने या सहम जाने का पता नहीं चलता। साही के कांटों जैसे खड़े बाल। आवश्यकता से अधिक तेल लगाने का स्वभाव होने के कारण माथे के बीच में पीतल की चकती जैसा चाँद चमकता रहता है। मोटा बेल्ट लगाने के कारण पेट का स्थूल अंश सामने आ जाता है और इससे वह और भी ठिगना दीखने लगता है। इतना कुछ करने पर भी अंजली उसके साथ बाहर निकलना पसन्द नहीं करती।

चमन बोला, निर्मला बड़ी शौकीन लड़की है, एकदम अप-टू-डेट और मैं ठहरा गंवार। इसलिये मेरे सामने आने में शर्माती होगी।

सुरेश ने कहना चाहा, यह तो कोई ठीक बात नहीं। लेकिन वह कुछ बोला नहीं, चुप रहा। यहाँ वह एक पदस्थ व्यक्ति है। अंजली जो उसकी अपनी है, बहुत अपनी, चमन नहीं जानता। निश्चय ही अंजली ने यह सब नहीं बताया होगा। अगर वह बता देती, तो वह बड़ी मुश्किल में फंस जाता। जान लेने पर चमन उससे नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करता। बीच-बीच में उनके मन में ऐसी शङ्काएँ उठती रही हैं। इस पहलू पर विचार कर मन-ही-मन अंजली की प्रशंसा कर रहा है। लेकिन अंजली चिड़िया दिखाने ले जायगी बोली थी, समझ में नहीं आता अब यह कैसे होगा।

और इधर अंजली अपने कमरे में फफक-फफक कर रो रही है। क्यों रो रही है, यह खुद भी नहीं समझ पाती। चमन ने नाना रूप में उसका उपयोग किया है। चमन और भी कई रूप में उसका उपयोग करेगा, या चमन अक्सर जैसा कहा करता है, आकर कहेगा, साहब को रवीन्द्र सङ्गीत सुनाओ। किसे वह सुनायेगी! वह तो अपने आप में है नहीं। फिर भी उसे हमेशा अभिनय करना होगा कि वह चमन की पत्नी है और पत्नी होने के कारण चमन का उस पर पूरा अधिकार है। चमन उसके साथ सब कुछ कर सकता है, उससे सब कुछ करा सकता है। वह चाहे और जो कुछ कर सके; पर सुरेश के सामने चमन की पत्नी का अभिनय न कर सकेगी। वह ऐसा ही कुछ सोच कर कैसा चुप हो गया। सुन्दर, सजीव एवं सबल वृक्ष-सा एक व्यक्ति अभी बरामदे पर बैठा है। वह तो सिर्फ उसे देखने भर की इच्छा रखता है। उसे ज्यादा लोभ दिखाने से लाभ! अंजली मन-ही-मन क्षत-विक्षत हो रही थी। जैसा उसके साथ अक्सर होता है, जब वह सोच नहीं पाती कि क्या करना चाहिये, उस समय बच्चों की

उसने सब कुछ खोया। वह अपने देश का सब कुछ छोड़ चुका है। सिर्फ नदुन्दो यह अभी भी नहीं खाता। मोहिनी खाना लगा गयी है।

सुरेश को यह बड़ा बुरा लग रहा था। एक अजीब-सा सूनापन फैलता आ रहा है। उसे खाना अच्छा नहीं लग रहा है। सब कुछ बड़ा सूखा-सूखा-सा प्रतीत हो रहा है। चमन मन-ही-मन क्षुब्ध हो रहा है। कल रात बाबू जी के कमरे में निर्मला गयी थी। दोपहर में सामने बैठा कर खिलाया है। एक तरह से काम हासिल ही कर चुकी थी। पता नहीं तीसरे पहर से उसे क्या हो गया है! मुँह फुलाये है, दस बात बोलने पर एक का जवाब देती है। वह कभी भी निर्मला को डांट नहीं सकता। उसकी आँखों पर नजर पड़ते ही एकदम ठंडा पड़ जाता है। इतना सुनहला मौका निर्मला यूं ही हाथों से निकल जाने देगी, सोच कर उसे अपने आप को काट खाने की इच्छा होती है।

चमन खाते-खाते बोला, रात में इस समय वहाँ क्या करते हैं बाबू जी?

—थोड़ा पढ़ता-लिखता हूँ।

—कितने बजे खाते हैं?

—खाते-पीते ग्यारह बज जाता है।

—आज जल्दी खा लिया, है न?

तिपाई पर एक गिलास पानी और दीपाधार पर एक सफेद रंग का डोम। नीले रंग की रोशनी की भी व्यवस्था है। कभी-कभी रोशनी तेज होने पर फालसई रंग-सी प्रतीत होती है। कभी बैंगनी रंग की हो जाती है। बाहर के कमरे में इतनी सारी व्यवस्था। यह सब देख कर सुरेश को बड़ा आश्चर्य हो रहा है! कमरा न ज्यादा बड़ा है और न ज्यादा छोटा। सीलिंग में दो बड़े-बड़े हुक लगे हैं। देखने से ही पता चलता है कि कभी-कभी कोई भारी भरकम चीज हुकों से झुला दी जाती है। झाड़-फानूस जैसी कोई चीज जिस पर रंग-बिरंगी रोशनियाँ जलायी जा सकें।

सुरेश लेटे-लेटे यह सब देख रहा है। वह चित्त लेटा है। अंजली का आज का व्यवहार उसे बड़ा अजीब लग रहा है। कल ही सारा काम निपटाना होगा। हो सके तो रात की ट्रेन से रवाना हो जायेगा। यह सब जब वह सोच रहा था, उसी समय सीलिंग के दोनों हुकों पर उसकी नजर पड़ी। जहाँ तक उसे याद आता है, कल रात दोनों हुक नहीं थे। आज अचानक ही हुकों पर उसकी नजर पड़ी। घर और पहाड़ की निस्तब्धता में अंजली के अद्भुत व्यवहार पर वह

विचार कर रहा है। उसकी आँखें खुली हुई हैं।

सफेद रंग का एक कीमती कंबल उसने छाती तक खींच रखा है। उसके हाथ कोमल हैं और रंग गोरा-चिट्टा। उसकी भुजाओं में काफी बल है। हर आदमी अपनी भुजाओं में बल की कामना रखता है। उसकी आँखों में अभी अंजली बसी है। किस तरह अंजली इतनी खूबसूरत हो गयी!

जो आदमी के साथ होता है, वही सुरेश के साथ हो रहा है। वह सिर्फ एक ही बात सोच रहा है, दरवाजे पर जिस किसी समय दस्तक हो सकती है। पिछली रात की तरह अंजली आज भी छिप कर आ सकती है। आज आने पर वह क्या करेगा!

वस्तुत: वह अपने मन से लड़ नहीं पा रहा है। बीच-बीच में आँखों के सामने पत्नी का चेहरा उभर आता था। अभी लीला क्या कर रही है, वह जानता है। बगल वाला पलंग खाली पड़ा है। इतु अपने कमरे में खर्राटे ले रही है। लीला हमेशा गाउन पहन कर सोती है, आज भी उसी तरह सोयी है। उसके विरह मे करवटें बदल सकती है। वह करवटें बदलती है, तो उसका सुनहला गाउन सरक कर कमर तक आ जाता है। और उस समय सुरेश की आँखों पर होता है एक आश्चर्यजनक जुगनू। जो रह-रह कर जल उठता है और सुरेश बेचैन होता जाता है। वह उठ कर बैठ जाता है। पानी पीता है। लीला के पलंग पर जा बैठता है। लीला मानो गहरी नींद में हो। लेकिन वह जानता है, लीला की आँखो में नींद का नामो-निशान नहीं। वह केवल आँखें बंद किये लेटी है। गाउन खींच कर उतार देने पर भी वह एकदम चुप पड़ी रहती है। लीला का स्वभाव ही अजीब है। वह कभी खुद उठ कर नहीं आती। पता नहीं शरीर में क्या छिपा रखा है कि बिस्तर पर इधर-उधर करते देख सुरेश को ऐसा लगता है कि उसे कष्ट हो रहा है। लीला जंभाई ले रही है। नींद नहीं आ रही है। नींद का स्वांग रचती है और गाउन ठीक न रख कर आखिरकार सुरेश को अपनी ओर खींच लेती है। सुरेश एकबार जब उसे छाती में भींच लेता है, वह पागल हो उठती है। उसकी काली-काली लटों में चेहरा छिप जाता है। उस समय वह और लीला कमरे में चक्कर लगाते रहते हैं। ऐसा लगता है कि लीला एक आकर्षक मोमबत्ती बनी जल रही है और वह एक जुगनू बना कमरे में उड़ रहा है।

कम्बल का रङ्ग सफेद है। उसने छाती के पास कम्बल रख लिया है। सिर के नीचे बायाँ हाथ है। दाहिना हाथ छाती पर है। देखने पर ऐसा लगेगा

कि सुरेश दुनिया भर की समस्याओं पर विचार कर रहा है। दोनों आँखें सीलिंग पर टिकी हैं। मन में अंजली के प्रति एक अद्भुत आकर्षण उथल-पुथल मचा रहा है। मानो पलंग पर सोया नहीं है, मोमबत्ती बन कर सोया नहीं बल्कि अंजली जल रही है। अंजली और सोना! बार-बार अंजली उसे तड़पा रही है। और कुछ हो-न-हो, जाड़े की रात में भी ऐसी प्यास लगती है।

दूर कहीं किसी गिरजे का घण्टा बजता है। उस घण्टे की आवाज पहाड़ों पर गूंजने से ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य के हृदय में हमेशा एक करुण दुःख वर्तमान रहेगा। इस दुःख को साथ लिये मनुष्य मर जाता है। इससे वह आजीवन छुटकारा नहीं पा सकता।

सुरेश पानी पीने के लिये उठ बैठा। उसने एक खिड़की खोल रखी है। क्योंकि सर्दी पड़ने पर भी वह सारी खिड़कियों को बन्द कर सो नहीं सकता। रात में ऐसी सर्दी पड़ रही है; हालांकि दिन में कोई खास ठंड नहीं थी। उसने एक खिड़की के पल्ले को खोल रखा था, इसलिये मिशनरी हास्पिटल की एक रोशनी वहाँ से दीख रही थी। और मिशनरी हास्पिटल की याद आते ही, पता नहीं क्यों एक नर्स की तस्वीर आँखों के सामने नाच जाती है। सफेद गाउन में ढकी एक नर्स, जिसके सिर पर सफेद टोपी है। पैरों में सफेद जूते और कन्धे पर काले रङ्ग का सुनहला स्ट्राइपदार बैज। और उसका चेहरा बार-बार अंजली जैसा हो जाता है। अभी वह अंजली को जिस रूप में देख रहा है, वह चमन की स्त्री न होकर यदि किसी मिशनरी हास्पिटल की नर्स होती, तो ज्यादा जंचती।

ठीक उसी समय उसे लगा कि अंजली उसके सामने खड़ी है। अंजली मानो कह रही है, मुझे देखो सुरेश! खिड़की की ओर क्या देख रहे हो?

सुरेश बड़बड़ाया, अंजली, तुम जाओ। चमन को कहीं पता चला, तो बड़ी बदनामी होगी।

—मुझे पता था, तुम यही कहोगे। बचपन से ही जो डरपोक व कापुरुष है, वह इससे ज्यादा और भला कह भी क्या सकता है?

सुरेश ने सिर झुका रखा है। वह क्या बोलेगा! एक ही बात बार-बार घुमा-फिरा कर कहती है। बोला, जो हुआ है, यही हमारे भाग्य में था।

—तुम भाग्य पर विश्वास करते हो सुरेश?

—और क्या करूँ?

—मैं हँसूं या रोऊँ, समझ में कुछ नहीं आता।

सुरेश को लगता है, वह टार्चर है। उसने चीख कर बताना चाहा; पर

सामने कोई नहीं था। दरवाजा बन्द है। मन-ही-मन वह बड़ा उत्तेजित हो उठा है। उस दिन सुबह-ही-सुबह वह बुआ के घर से जो भाग आया था—इस समय वह बात याद आते ही वह अपने आप पर क्षुब्ध हो उठता है। इस भाग आने के कारण ही तो अंजली ऐसा तीखा मजाक करती है। अंजली बार-बार यही एक बात कह रही है। अंजली अभी आती तो वह सब कुछ खोल कर कह पाता। कहता, मैंने सचमुच बड़ी भीरुता दिखायी थी। मुझे सभी इतना भला लड़का समझते थे अंजली कि मैं तुम्हारे लिये बुरा बनने का साहस न कर सका। यह सब याद आते ही मेरा मन दुःख से तड़प उठता है। अब यह सब सोचने से सिर्फ दुःख बढ़ता है। फिर भी मैं कुछ न कर सकूंगा। दरवाजा खोल कर नहीं रख सकूंगा। भाग्य का लिखा भला कौन टाल सकता है! होनी होकर रहती है। जब हमारे भाग्य में यही था, हम रोक कैसे सकते थे!

फिर मानो कोई बोल उठा, सुबह-सुबह घर से भाग खड़े हुए। मेरे बारे में एक बार सोचा तक नहीं! सारी बदनामी मेरे मत्थे मढ़ कर भाग गये।

घटना याद आने पर या अभी भी उसका विश्लेषण करने पर उसे अंजली की दुर्दशा समझते देर नहीं लगती। वह तो भाग गया; पर बेचारी अंजली के मुँह पर कलङ्क-कालिमा पुत गयी। वह सभी की नजरों से गिर गयी। बुआ जी ने तिल को ताड़ बनाना न छोड़ा। सारा दोष अंजली के सिर मढ़ दिया। सुरेश को भला दोष देतीं ही क्यों, वह ठहरा उनके पीहर का लड़का। उन्होंने सोचा अंजली उसे फांस रही है। बौना चाँद छूना चाहता है। सुरेश मानो भाग कर बच गया। यहाँ रहता तो चुड़ैल उसका सर्वनाश कर डालती, उनके मायके पर कलङ्क का धब्बा लग जाता। यह पूर्वजों का आशीर्वाद है जो सुरेश इस डायन के मोह-जाल से भाग निकला। अंजली सरल-सुबोध सुरेश को बर्बाद करने पर तुली थी!

जब कभी सुरेश का अतीत उसके सामने उभर आता है, वह सिसकियाँ सुन पाता है। आज भी सुरेश सिसकियाँ सुन रहा है। अतीत उभर आया है। बुआ जी ने दरवाजा बन्द कर दिया है। बाहर खड़ी-खड़ी एक सरल-सुबोध बालिका यानी अंजली को जली-कटी सुना रही हैं। उनका एक-एक शब्द तीक्ष्ण तीर की तरह हृदय में चुभता जा रहा है। अन्धेरे कमरे के अन्दर अंजली फफक-फफक कर रो रही है। अंजली का सुकोमल व उष्ण हृदय क्षत-विक्षत होते देख कर भी विरोध न कर सका। वह बड़ा भला लड़का था, भले लड़के की तरह ही खिड़की पर खड़ा हो किसी दूसरी खिड़की पर खड़ी किसी सुन्दरी

का मुखड़ा या सड़क देख-देख कर सारी रात आँखों में काट दी थी।

अंजली के मुखमण्डल पर अतीत का कम्पित चित्र अब देखने को नहीं मिलता। हालाँकि चाँदनी अब पहाड़ की चोटी पर बिखर रही है। सुदूर किसी पहाड़ पर हरिनों का झुंड भागता आ रहा है। कमरे में मन्द-मन्द प्रकाश। सुरेश को जंभाई आ रही है। नींद नहीं आ रही है। आँखें बन्द करने पर वह सिर्फ किसी के रोने की आवाज सुन पाता है। ऐसा लगता है कि पहाड़ों पर वही शोकाभिभूत सिसकियाँ गूंज रही हैं। उसने जितना सोचा था कि वह सब नहीं सुनेगा, उतना ही उसे लगता है कि कोई फफक-फफक कर रो रही है। उसने खिड़की बन्द करना चाहा। वह खिड़की की ओर बढ़ा। पल्ले पर हाथ रखते ही देखा, पाइन के पेड़ तले कोई खड़ी है। शायद वह पहाड़ों पर बिखरती चाँदनी देख रही है।

सुरेश ने खिड़की बन्द नहीं किया। चाँदनी रात में सुनहला गाउन पहने कोई युवती खड़ी हो, तो मन स्थिर नहीं रखा जा सकता। आधी रात बीत चुकी है, चमन सो रहा है। और अंजली की आँखों में नींद नहीं! —वह समझ रहा है, सब कुछ समझ रहा है। क्या वह सबके सोने पर गाउन पहन कर मकान के आसपास घूमती रहती है? सुरेश ने बत्ती बुझा दी। आहिस्ते से दरवाजा खोल कर आगे बढ़ा। पेड़ तले एक पत्थर की चौकी। घनी डालियाँ होने के कारण चौकी पर ओस नहीं पड़ी है। वहाँ जो बैठी है, वह यदि अंजली न होकर और कोई हो! यह सब सोचता हुआ वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। उसने देखा, गाउन का रङ्ग सुनहला नहीं है; बल्कि कुछ पीला है। चाँदनी में दूर से सुनहला दीखता है। जूड़ा खोपा। करीब पहुँचते ही एक खुशबू नाक में भर गयी। उसने सोचा, पुकारे या नहीं, या चुपचाप खड़ा रहे और पहाड़ों पर जो बादल के छोटे-छोटे टुकड़े तैर रहे हैं, जिन पेड़ों पर चाँदनी छिटक रही है, यह सब देखता हुआ इस सुन्दरी के साथ रात बिता दे!

सुरेश यह देख कर और भी आश्चर्यित हुआ था कि अंजली इतना पतला गाउन पहन कर इस कड़ाके की सर्दी में किस तरह बैठी है। उसे क्या सर्दी नहीं लग रही है? वह क्या इस पहाड़ी देश में रह कर सर्दी से नहीं सिकुड़ती?

उसने पीछे से पुकारा, अंजली!

अंजली ने मुँह नहीं उठाया। पेड़ पर पीठ टिकाये बैठी है। [illegible] मुड़ा हुआ है और एक पाँव पसारे बैठी है। [illegible] है। जांघ तक तो नहीं उठा है [illegible]

संकोचवश और ज्यादा दूर तक देख न सका। ऐसी पोशाक में इस सर्दी की रात में उसे बाहर देख कर सुरेश ने सोचा, शायद चमन से झगड़ कर बाहर आ गयी है। अगर यह बात नहीं, तो फिर चुप क्यों है, बोलती क्यों नहीं? लेकिन करीब पहुँचते ही वह घबरा गया, अंजली कहीं बेहोश तो नहीं! और करीब जाकर बोला, अंजली! तुम यहाँ क्यों बैठी हो! तुम्हें सर्दी लगेगी।

अंजली ने बोझिल आँखों से देखा। बोली, ओ, तुम! बैठो। —बड़े निरुत्ताप व निस्तेज स्वर में अंजली बोली।

इस अवस्था में सुरेश क्या करेगा, कुछ सोच नहीं पा रहा है। सुरेश ने देखा, अंजली की आँखें फिर बंद हो गयी हैं। पास ही जो एक आदमी बैठा है, इसका उसे खयाल तक नहीं। और वह ऐसी पोशाक पहने बैठी है कि अंग-प्रत्यंग दीखता है, हवा का झोंका आता है और गाउन उड़ा जाता है! उसे यह भी खयाल नहीं कि उसका सब कुछ दीख रहा है। ऐसी स्थिति में यहाँ बैठे रहने की अपेक्षा चमन को बुलाना ज्यादा बेहतर है। साफ़ पता चलता है कि अंजली ने काफी पी रखी है। चमन शराब पीता है। एक सीमित मात्रा में पीता है। आज क्या मात्रा से ज्यादा पी गया है? वह क्या कमरे में बेहोश पड़ा है? अब सुरेश क्या करे, वह सोच नहीं पाता। इस समय मोहिनी होती, तो अच्छा होता। वह मोहिनी की तलाश में आउट हाउस की ओर जाने की सोच ही रहा था कि खयाल आया, इस हालत में अंजली को अगर कोई देख ले, तो बड़ा बुरा होगा। उसने सोचा, कंबल लाकर अंजली को ढक दे। उसके बाद आउट हाउस जाकर या चमन को बुला कर उसे पहुँचा दे।

यह सोच कर सुरेश उठने ही जा रहा था कि अंजली का दुर्बल हाथ उसके हाथ पर पड़ा। उसे लगा, अंजली सब कुछ समझ रही है। वह जो खबर देने जा रहा है, इस हालत में भी अंजली यह समझ रही है। सुरेश को अब जाने की इच्छा न हुई। उसने उसे जितना बेहोश समझा था, वह उतना बेहोश नहीं है। सब कुछ जान-बूझ कर भी वह बोला, तुम्हें सर्दी लग रही है। जाओ, सो रहो।

अंजली बोली, तुम्हें नींद नहीं आ रही है?—

—मैं जानती हूँ, तुम रात में सो नहीं पाते।

—नहीं, मैं सो रहा था।

—सो रहे थे, तो फिर पता कैसे चला कि मैं यहाँ बैठी हूँ?—अंजली की ज़बान लड़खड़ा रही थी।

—खिड़की खोलते समय मुझे ऐसा लगा कि कोई पाइन के पेड़ तले बैठा है। खिड़की बिना खोले क्या तुम्हें नींद नहीं आती ?

—हाँ, मैं सो नहीं सकता।

—लेकिन चमन सो सकता है। तुम नहीं सो सकते; पर चमन सो सकता है। वह खर्राटे भर रहा है। वह गहरी नींद में सोया पड़ा है। वह क्यों कर इतना सोता है ! मैं भी नहीं सकती। मैं काफी रात गये तक जगी रहती हूँ।

—तुम रोज पीती हो ! कहाँ, कल तो नहीं देखा !

—रोज पीती हूँ। थोड़ी-सी, बस इत्ती-सी। उसने दोनों हाथ से सुरेश को मात्रा बताने का प्रयास किया।—लेकिन जिस दिन मुझे दुःख होता है, बहुत दुःख, दुःख से मेरी छाती फटने लगती है, उस दिन ज्यादा पीती हूँ। बहुत ज्यादा। चहारदीवारी में रहना अच्छा नहीं लगता। बाहर निकल पड़ती हूँ। सारी रात घूमती फिरती हूँ। घूमती फिरती हूँ, घूमती फिरती हूँ।—टूटे रिकार्ड की तरह अंजली बार-बार एक ही बात कहती जाती है।

—समझ में नहीं आता तुम्हें कौन-सा ऐसा दुःख है ! चमन क्या तुम्हें

बीच ही में बात काट कर अंजली बोली, नहीं, कोई दुःख नहीं, कोई कष्ट नहीं देता। फिर भी मुझे क्यों कष्ट होता है सुरेश। ज्यादा पीने पर मुझे सिर्फ यही महसूस होता है कि चमन मेरे चारों तरफ मंडरा रहा है। हाँ, चमन परछाई की तरह मेरे पीछे पड़ा रहता है—एक हब्शी, होंठों पर चरक की सफेदी। कमर में बेल्ट। तहबन की तरह धोती पहनता है। पक्षियों के पंख जैसे बाल खड़े रहते हैं। मुझे बड़ा डर लगता है सुरेश। क्षण भर रुक कर बोली, मैं अब अच्छी हूँ न ! विस्तृत आकाश ! झिलमिलाते तारे। चाँदनी तुम्हें अच्छी नहीं लगती ?

—इस जानलेवा सर्दी में तुम जम जाओगी अंजली। चलो, अंदर चलो। कल मैं तुम्हारा सब कुछ सुनूंगा।

—सुनोगे, मेरा सब कुछ सुनोगे !—कह कर अंजली खिलखिला कर हंस पड़ी।—सब सुनने की इच्छा प्रकट करते ही क्या सब कुछ कहा जा सकता है ?

यह कह कर मानो उसे सहसा पता चला कि उसने बड़ा हल्का-फुल्का गाउन पहन रखा है। झटपट दोनों हाथों से नंगे हिस्सों को गाउन में छिपाने की कोशिश करने लगी। इधर खींचती है, तो उधर नंगा होता है, उधर खींचती है, तो इधर नंगा होता है। अन्दर कोई कपड़ा नहीं है। इच्छापूर्वक वह नहीं रखती। उस समय वह पागल जैसी हो जाती है। सब कुछ समझने पर चमन उस रात अंजली के कमरे में नहीं घुसता है तो जान पर बन आती है। बोतल, गिलास जो

कुछ सामने पाती हैं, उठा फेंकती है। डर से चमन कमरा बंद कर सो जाता है।

आज भी एक ऐसी ही रात है। सुरेश इसका अनुमान भी नहीं लगा सकता। फिर भी वह समझ रहा है कि अंजली हृदय में एक मार्मिक व्यथा छिपाये यहाँ रह रही है। वह बोला, तुम मेरे कमरे में चलोगी?

—नहीं

—क्यों! इस सर्दी में तुम मर जाओगी अंजली।

—मुझे सर्दी नहीं लग रही।

—लेकिन मुझे तो लग रही है।

—तुम यहाँ क्यों सुरेश! क्यों आये, तुम क्यों आये!—अंजली अद्भुत क्रन्दन में फूट पड़ी।

सुरेश कुछ भी नहीं बोल पा रहा है। वह चुप है, एकदम चुप, मानो उसकी बोलती बंद हो गयी हो! वह निश्चल-सा, होता जा रहा है। लम्बे अर्से से एक युवती अपना शोक-दुःख भूल कर मानो किसी अन्य जगत की बासिन्दा बन गयी थी। एक छोटे सरोवर में वह कमल बन कर उतरा रही है। वह मानो किनारे पर बैठा-बैठा देख रहा है, पानी में उतराते वक्त कमल का रंग सफेद था। सफेदी मिटती जा रही है. रंग बदलता जा रहा है—नीला और फिर काला। किनारे पर बैठ कमल को देखते-देखते वह मानो कैसी एक अतिकाय नियति का दास बन गया।—बोला, मैं नहीं जानता था कि तुम यहाँ हो।

—तुम कल सुबह चले जाओगे सुरेश?

—जाऊंगा।

—नहीं, तुम नहीं जाओगे।

—ठीक है, नहीं जाऊंगा।

—तुम मेरा कितना कहा मानते हो। काश, पहले मानते, पहले तुम ऐसा क्यों न थे सुरेश!

—तुमने जो कुछ कहा, मैंने सुना। अब तुम्हें मेरी बात सुननी होगी।

—तुम्हारी बात तो मैंने हमेशा सुनी है।

—अच्छा!

—अगर ऐसा न होता, तो मैं यहाँ क्यों रहती। मैं तो कह सकती हूँ सुरेश कि तुम पर तुम्हारी पत्नी से मेरा अधिकार कोई कम नहीं।

सुरेश ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। बोला, मैं क्या कहना चाहता हूँ, तुम समझ नहीं रही हो।

—समझ रही हूँ।

—सचमुच में समझ रही हो ?

—हाँ। तुम जो कहना चाहते हो, मैं जानती हूँ।

—बताओ तो, मैं क्या कहना चाहता हूँ ?

—यही कहना चाहते हो न, मैंने तुम्हारी हर बात सुनी है। अब तुम मेरी एक बात मानो, चलो मेरे साथ, चनन के कमरे में तुम्हें छोड़ आऊँ।

सुरेश ने सोचा, वह जो कुछ कहना चाहता था, अंजली ने बहुत कुछ कह डाला। उसने सोचा था कि कहेगा, तुम्हारी बात जब मैंने मानी है, तुम भी मेरी एक बात मानो। अब तुम उठो। इस सर्दी में बैठी न रहो। खुद उठ कर न जा सको, तो मैं तुम्हें पहुंचा आऊँ।

अंजली बोली, हमेशा तुम मेरा बन कर इसी तरह बोलते रहे हो।—कह कर अंजली ने हाथ से देखना चाहा, जूड़ा ठीक है या नहीं। लेकिन हाथ कांप रहा है। वह शायद हाथ उठा न सकी और इस हल्की-फुल्की पोशाक में वह किस तरह जड़ बनी बैठी है। कुछेक क्षण पहले ही फफक-फफक कर रोयी थी, अभी उसका आभास तक नहीं मिलता।

सुरेश बोला, मेरे मन की बात जब तुम जानती हो, तब यहाँ और बैठा रहना ठीक नहीं। उठो, जब तक तुम नहीं जाती, मैं नहीं सो सकता।

—न जाने से तुम सो न सकोगे ?

—ठीक कहती हो।

—जाने से भी तुम नहीं सो सकोगे सुरेश साहब।

—हाँ, मैं सो सकूंगा।

—नहीं, सुरेश साहब नहीं। मैं जल रही हूँ और तुम नहीं जलते। यह असंभव है, ऐसा कभी नहीं होता मि० सुरेश।

सुरेश ने कहना चाहा, मैं भला क्यों जलने लगा, मुझे कौन-सा दुःख है जो जलता फिरूँ। मेरी पत्नी है, इतु है। लीला तुम से किसी बात में कम नहीं। नहीं, लीला के साथ मैं तुम्हारी तुलना नहीं कर सकता। इससे लीला के सम्मान पर ठेस लगेगी, उसका असम्मान होगा। लीला का सम्मान-असम्मान तो ख़याल आया; पर उसने सोचा तक नहीं कि असम्मान का अर्थ अंजली के समक्ष कितना रूढ़ है, कितना कठोर। मन-ही-मन किंचित पश्चाताप करते समय वह चुप रहा।

—क्या हुआ, कुछ बोलते नहीं !

—क्या बोलूं ?

—यही कि तुम मेरी ही तरह जल-जल कर मर रहे हो।

सुरेश ने सोचा, इससे यदि अंजली को शान्ति मिले, तो स्वीकार कर लेने में क्या क्षति है।—बोला, तिल-तिल कर जलता हूँ।

—बढ़ा-चढ़ा कर बोले।

—तिल-तिल कहा इसलिये बढ़ा-चढ़ा कर कहना हुआ ?

—हाँ, कहो, कभी-कभार जलता हूँ। काम करते-करते जब मैं तुम्हें याद आती हूँ, तुम थोड़ा उदास हो जाते हो। है न ?

—हाँ।

—घर आकर जब पत्नी को अपनी बाहों में खींच लेते हो, उस समय सारी उदासी खत्म हो जाती है।

—ठीक कहती हो।

—तुम क्या हो सुरेश !

—क्या हूँ !

—तुम बहुत बड़े साहब हो न !

—लोग कहते हैं।

—तुम औरत जैसा क्यों हो ?

—मुझ में औरत जैसा क्या दीखा !

सुरेश उसे ज्यादा उत्तेजित करना नहीं चाह रहा है। क्योंकि शराब में धुत युवती के साथ और चाहे जो कुछ किया जाय, सहवास नहीं किया जा सकता। समझा-बुझा कर वह उसे कमरे में छोड़ आना चाहता है। कोई जग जाय, इससे पहले ही उसे कमरे तक पहुँचा आना चाहता है। क्योंकि उसके मनोनुकूल कोई बात न होने पर, पता नहीं वह क्या कर बैठे। सुरेश बोला, तुम मुझे जो दिल आये कह सकती हो।

—और तुम नहीं कह सकते !

—क्या कह सकता हूँ ?

—जो मन मे आये, तुम मुझे कह सकते हो।

यह कह कर अंजली ने सहसा उसे पागल की तरह अपनी बाँहों में जकड़ लिया। बोली, सुरेश तुम पुरुष हो, पुरुष की तरह मुझे अपनी करीब रखो।

कोई देख ले तो क्या होगा ! अंजली ने अपनी बाँहों में जकड़ रखा है। उसके नरम-नरम होठों पर कितनी मादकता है ! वह और जो कुछ करे, बेमौके की शहनाई नहीं बजा सकता। हाँ, कम-से कम अंजली अभी जो कुछ कर रही,

वह समयानुकूल नहीं है । जिसे खुद का होश नहीं, उसके साथ वह कुछ नहीं कर सकता । वह डपट कर बोला, अंजली, क्या हो रहा है !

अंजली अलग हो गयी । उसके बाद धीरे-धीरे चल पड़ी । वह चल नहीं पा रही है । वह लड़खड़ा रही है । सुरेश को लगा, इस तरह लड़खड़ा रही है कि लुढ़क कर नीचे जा गिरेगी । वह उसे सहारा देने को आगे बढ़ा । अंजली उसे झटक कर लड़खड़ाती हुई फौवारा के करीब जा खड़ी हुई । उसे लगा कि फौवारे का पानी अंजली को भिगो रहा है । इस सर्दी में वह इस तरह भीग रही है । इस तरह का दृश्य खुली आँखों नहीं देखा जा सकता । उसने आँखें बंद कर लीं ।

बाकी रात सुरेश को नींद नहीं आयी । सिर्फ करवटें बदलता रहा । मानो अंजली ने उसे फिर पन्द्रह साल पहले का नवयुवक बना दिया है । यह क्या हुआ उसे ! जिस तरह अंजली की प्रतीक्षा में वह रात की घड़ियाँ गिनता, उसके देर करने पर उसका तन-बदन जलने लगता, वह स्वयं को ज्वरग्रस्त महसूस करता, सारी रात जंभाई लेता रहता, आज भी वह वैसा ही महसूस कर रहा है ।

और रात के अन्तिम पहर में उसे थोड़ी तन्द्रा-सी आयी । आश्चर्य, वह देख रहा है कि उसके सिरहाने में कोई मानो चुपचाप बैठी है । वह चेहरा नहीं देख पाता । और सब कुछ देख रहा है, उसका हाथ उसके कपाल पर है । काफी सर्द हाथ । एकदम बर्फ-सा ठंडा हाथ । वह धीरे-धीरे उसके कपाल या सिर पर हाथ फेर रही है । वह रेशमी साड़ी में सिमटी बैठी है । साड़ी में लाल रंग की बरफियाँ बनी हुई हैं और रंग-बिरंगे फूल-पत्ते अङ्कित हैं । एकदम वनदेवी-सी दीखती है । हाथ-पांव की स्निग्धता पर आश्चर्य होता है । करीब बैठी है, इसलिये उसे नींद आ रही है ।

सुरेश मुँह उठा कर देख रहा है । वह सपने में मुँह उठा कर देख रहा है । फिर भी कुछ देख नहीं पाता । चेहरा वह क्यों नहीं देख पा रहा है ! इतनी कोशिश करने पर भी वह चेहरा नहीं देख पा रहा है । वह मानो उठ कर चारों तरफ घूम रहा है । सब कुछ है, सिर्फ चेहरा नहीं । 'नहीं' कहना ठीक न होगा, सिर्फ पीछे का भाग देख पा रहा है । और न रहा गया, उसने पीछे से ही उसे बांहों में जकड़ लिया । और फिर पलंग पर ला पटका । पटकते ही साड़ी और साया ऊपर सरक आये । मोम जैसी गोरी-चिट्टी जांघों पर एक अद्‌भुत नीला रंग आँख-मिचौनी खेल रहा है । पटकने पर उसने देखा, अंजली

काफी सज-धज कर उसके पास आयी है। कपाल पर सिंदूर का बड़ा टीका। आँखों में काजल की लम्बी रेखा। होठों पर नीला रंग। गले में कीमती पत्थरों का सेट। और आँखों में अद्भुत कामना का ज्वारभाटा। उसने उसे पलंग पर चित्त लिटा दिया है, इससे अंजली खुश है या नाराज, कुछ भी समझ में नहीं आता। उदासीन-सी वह हाथ-पांव फैलाये पड़ी है। यानी सुरेश जो चाहे, कर सकता है। और ऐसा लोभ वह संभाल भी नहीं पा रहा है। वह कहता है. जाओ, अंजली, तुम चली जाओ, नहीं जाओगी तो मैं मर जाऊंगा। अंजली नहीं जा रही है। उसकी बगल में चुपचाप पड़ी है। वह कहता है, मैं एक अद्भुत जीव बनता जा रहा हूं अंजली, तुम मुझे बचा सकती हो, चली जाओ तुम।

अंजली ने करवट बदली। अपने हाथों में सुरेश की गर्दन जकड़ ली। बायाँ पांव सुरेश पर चढ़ा दिया। और फिर उसने कुछ न किया। और जो कुछ करना है, वह मानो सुरेश के हिस्से में है। और ठीक उसी समय सुरेश को महसूस हुआ, शरीर क्रमशः ठंडा पड़ता जा रहा है, शरीर से सब कुछ निकलता जा रहा है। उसके लिये अब सोया रहना कठिन हो गया है। अंजली उसके पौरुष पर मुस्करा रही है। उसकी मुस्कान मानो कह रही है, वाह रे पुरुष! कुछ किया भी नहीं और तुम्हारा सब हो गया। छूते -न-छूते सब हो गया! ओस की तरह सब बिखर गया। अंजली को जोरों की हंसी आ रही है। वह किस तरह उसकी बगल में बैठ कर यह सब बोले जा रही है। और सुरेश दूसरी ओर मुँह फेर कर देख रहा है। उसके अन्दर का ज्वर जैसा भाव मिट गया है। मुँह का स्वाद खराब हो गया है। उसे ऐसा लगता है कि अंजली बार-बार बदला लेने आती है। वह डर-डर कर कहता है, मैं नहीं कर सकता, मैं औरों जैसा सब कुछ नहीं कर सकता अंजली।

अंजली बोली, अच्छा उठो। तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं। हम चिड़ियों के शिकार पर जायेंगे।

—कहाँ।

—बिहारीगंज का पहाड़।

—वहाँ क्या है ?

—पेड़-पौधे। पाइन के लाखों पेड़। रंग-बिरंगे कंटीले पौधे।

—क्या होगा वहाँ जाकर ?

—होगा और क्या ! मैं तुम्हें साथ लिये घूमूंगी।

—घूमना तुम्हें इतना अच्छा क्यों लगता है ?

—और तुम मेरे साथ कर भी क्या सकते हो ! छिः, तुमने तो किया न !

—थोड़ा रुकोगी !—कह कर बच्चों की तरह देखने लगा।

—क्यों नहीं, जब तक कहोगे, तब तक।

—नहीं, अभी-अभी सब ठीक हो जायेगा।—कह कर उसने अंजली का हाथ अपने हाथों में ले लिया।

अंजली बोली, दो दिन रह जाओ, तुम्हें देखूं।

इस बात पर सुरेश के अङ्ग-अङ्ग में एक अजीब-सी सिहरन खेल गयी। वह एक पुरुष की तरह खड़ा हो सकता है। उसके समक्ष पुनः सब कुछ रंगीन हो गया है। मानो इस कमरे में अभी अंजली ने हजारों बत्तियाँ जला दी हैं। चेहरा तमतमा रहा है, आँखें जल रही हैं। एक अद्भुत आकर्षण में वह अंजली के आसपास मंडरा रहा है। अङ्ग-अङ्ग में एक स्निग्ध इच्छा नाच रही है और दोनों जैसे हवा में उड़ने वाले पक्षी बन गये हैं। और खिड़की से बाहर निकल कर दोनों कहाँ-कहाँ उड़े जा रहे हैं। उड़ते-उड़ते एक बर्फ का पहाड़ नजर आया। और चारों तरफ देखने पर सिर्फ बर्फ-ही-बर्फ नजर आया। हरियाली कहीं नामो-निशान तक नहीं। और बर्फ के नीचे सारा शहर पड़ा है। शहर के दरवाजों पर मोमबत्तियाँ जल रही हैं।

अभी दोनों पक्षी हैं, नहीं, ठीक-ठीक पक्षी नहीं। अंजली बर्फ की एक चट्टान पर बैठ पंख फड़फड़ाती है और पुनः वनदेवी बन जाती है। उसके पैरों के पास सुरेश एक पक्षी बना बैठा है। वह स्वयं को पहचान नहीं पा रहा है। वह कौन-सा पक्षी है ? कौआ, तोता या मैना ? वह कैसा दीख रहा है ? उसने बर्फ पर अपना प्रतिबिंब देखा। उसने देखा वह मात्र एक पक्षी है, और कुछ नहीं। पक्षी से वनदेवी को बड़ा प्यार है। पक्षी को छोड़ कर वह कहीं भी नहीं जा रही है। सुरेश को बड़ा गुस्सा लग रहा है। उसे अंजली ने पक्षी बना कर क्यों रखा है। अंजली चाहे तो उसे क्षण भर में मनुष्य बना सकती है। गुस्से से वह कूक उठा—कू,कूहू कू। अंजली तुम बड़ी स्वार्थी हो। तुम मुझे पक्षी बनाये क्यों रखती हो ? मेरी आंतरिक इच्छा है इस बर्फीले देश में तुम वनदेवी बनो और मैं वनदेव बन जाऊँ। कितना सुन्दर है यह देश ! ऐसे देश में तुम मुझे पक्षी बना कर रखना चाहती हो ?

और अब सुरेश देख रहा है उसका हाथ थामे अंजली सीढ़ियाँ उतर रही है। चारों तरफ कदंब के पेड़ हैं। सुरेश को लगा कि बर्फीले देश में केवल कदंब के पेड़ ही होते हैं। कदंब के असंख्य फूल मुस्करा रहे हैं। बर्फीले देश में सफेद

कदंब के फूल एक अपूर्व सौंदर्य की सृष्टि कर रहे हैं । उसे साथ लिये अंजली एक अति प्राचीन भग्नावशेष के पास आ पहुँची है । रोमन साम्राज्य के बड़े-बड़े खंभे, सिंह और मनुष्य का द्वन्द्व—उसका एरेना । अभी भी लोहे की बड़ी-बड़ी जञ्जीरें बज रही हैं । हब्शी जैसा एक आदमी, कमर में बेल्ट, सिर पर चिड़ियों के पर, मोटे होंठ, ठिगना कद, सिंहद्वार पर खड़ा है । वह और कोई नहीं, चमन है । हाँ, वह चमन ही है । चमन सिंहद्वार पर खड़ा-खड़ा सिर्फ़ घंटा बजा रहा है—एक, दो, तीन……।

अंजली को देखते ही चमन घंटा बजाने लगा है—ढन, ढन, ढन…। एक हाथ से वह डमरू बजा रहा है । वह दरवाजा खोल रहा है । दैत्याकार दरवाजा । वह ठेल-ठेल कर दरवाजा खोल रहा है । हाथ में पंछी लिये अंजली वनदेवी की भाँति अपने साम्राज्य में प्रवेश कर रही है । अपने निर्दिष्ट प्रासाद की ओर वह धीरे-धीरे बढ़ रही है । सर्वत्र वैभव की छटा ! हजारों दासियाँ नतमस्तक खड़ी हैं । बड़े-बड़े पहलवान हाथ में चांदी का राजदंड लिये नतमस्तक खड़े हैं । सिर पर पगड़ी बांधे, पैरों में बूट पहने और कमर में तलवार लिये एक लम्बी दाढ़ीवाला आदमी आगे-आगे चल रहा है । सांटिन का फ्राक और बर्फ-सा सफेद जूता पहने एक नन्ही-मुन्नी बच्ची वनदेवी का आंचल पकड़े चल रही है । मिट्टी में लोटने पर बच्ची की गर्दन धड़ से अलग कर दी जायेगी । सुरेश हाथ पर एक पक्षी बना बैठा है । सब कुछ देख रहा है । उसे बड़ा मजा आ रहा है । अंजली का प्रभाव देख-देख कर उसकी छाती गर्व से फूल उठती है ।

इसी बीच वह एकबार कूक उठा—कू, कुहु कू ।

उसके कूकते ही सब कुछ निश्चल हो गया । जो जहाँ था, मूर्तिवत चुप खड़ा रहा । ऊपर जो झाड़फानूस झूल रहा था वह भी थम गया । फानूस की बत्तियाँ जलाने के लिये एक आदमी सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, वह भी जहाँ-का-तहाँ रुक गया । सब-के-सब मानो पत्थर हो गये हैं । किसी में जीवन का स्पन्दन नहीं ! वाह, क्या मजेदार दृश्य है ! वह जगा और सब जग पड़े । वह फिर कूक उठा और सब जहाँ-के-तहाँ जम गये । वह समझ गया, सिरहाने में लगा स्विच दबाने से जिस तरह बल्ब जलता-बुझता है, उसी तरह वह इन सबों से खिलवाड़ कर रहा है । इन सबों का उठना-बैठना, चलना-फिरना सब कुछ उसकी इच्छा पर निर्भर करता है । हाथ पर पक्षी बना बैठा है; पर क्षमता तो कम नहीं । उसे अपनी क्षमता पर गर्व हो रहा है । वह गर्व भरी दृष्टि से अंजली की ओर देखता है; पर अंजली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । अंजली हार मानने वाली लड़की

रहा था। अंजली की ऐसी असहाय दशा के कारण वह काँप रहा था। पहाड़ की चोटी पर शायद अभी भी रुपहली चाँदनी छिटक रही थी। कहीं हिरनों का झुंड ठंडा पानी पी रहा था।

बाथरूम में सुरेश को एक बात और भी याद हो आयी, अंजली शायद उसकी छाती में मुँह छिपा कर बोली थी, कल मत जाना सुरेश! इस पहाड़ों पर लौट कर फिर रात आयेगी। और रात के आते ही मैं तुम्हारे पास आऊँगी। किसी को आभास तक नहीं मिलेगा। तुमसे मुझे बहुत कुछ कहना है, सुरेश, बहुत कुछ।

वह सो न सका। अङ्ग-प्रत्यङ्ग से लावण्य टपक रहा है। अंजली मानो स्निग्धता की प्रतिमूर्त्ति है। पहले की तरह ही वह अपना सब कुछ उजाड़ कर देना चाहती है। वह ले नहीं पाता।

सुबह का सूरज पैरों के पास धूप बिखेर रहा है। चिड़िया चहचहा रही है। तलहटी में आदिवासियों के घर से धुआँ निकल रहा है। भेड़ों का झुंड पहाड़ी स्त्रियों की पीठ पर मुस्कराते बच्चे और पिछली रात की घटना में वह एक अद्भुत सत्य और स्निग्धता की झांकी पा रहा है। सुबह-सुबह उसने नहा लिया है। नहाने पर सारा शरीर पवित्र महसूस हो रहा है। और पिछली रात की घटनाओं पर विचार करना उसे अभी भी अच्छा लग रहा है। सारी घटनाएँ यानी जो कुछ उसने सपने में देखा है, जो कुछ खुली आँखों से देखा है—सब कुछ मिला कर वह एक काल्पनिक मायाजाल में फंसा हुआ है।

उसे ऐसा लगा कि सपने में चमन की पत्नी अपनी आपबीती सुनाने आयी थी। पति का अत्याचार, पीठ के काले दाग, बुआजी की निष्ठुरता, सुरेश की दुर्बलता, ऐसी ही कितनी सारी बातें! पता नहीं, सुरेश ने कब दोनों हाथों से उसका ब्लाउज फाड़ डाला था। जो कुछ उसने देखा उससे हृदय में व्यथा उत्पन्न होती है, प्यार उभर आता है, सहानुभूति उत्पन्न होती है। पीठ के काले-काले दाग देख कर उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि अंजली की पीठ पर असंख्य काले नाग रेंग रहे हैं। वह ज्यादा देर तक उसकी पीठ की ओर देख न सका था। उसने आँखें बन्द कर ली थी।

इस प्रकार अतीत की गहराइयों में डुबोये जाने पर वह बेचैन हो उठता है। वह यह सोच कर कांप जाता है कि इस अत्याचार के पीछे उसका भी हाथ है। नहीं, सिर्फ हाथ ही नहीं; बल्कि अत्याचार का मूल ही वह है। उस दिन की उस घटना के बाद अंजली पर क्या गुजरी होगी, उसने कभी सोचा तक

—मैं अब सोऊंगा। कल रात सो नहीं सका था।

—आज भी तुम नहीं सो सकोगे सुरेश।

सुरेश ने मानो सहसा अंजली की झीनी पोशाक देख कर प्रश्न किया था, तुम्हें सर्दी नहीं लगती ?

—नहीं। तुम्हें ?—अंजली ने शायद यही कहा था।

—मुझे जोरों की सर्दी लग रही है।

—और एक कंबल ला दूं ?

—मेरे पास है।

—सिरहाने में बैठने से तुम्हें तकलीफ होगी ?

सुरेश को याद नहीं आ रहा है, जवाब दिया था या नहीं।

—कितने दिनों बाद हमारी मुलाकात हुई ?

—करीब तीस साल बाद।

—नहीं, गिनती ठीक नहीं हुई।—कह कर शायद बोली थी, अच्छा, आज के लिये विदा। कल फिर मिलेंगे।

—कल चला जाऊंगा। भेंट नहीं होगी।

—कल तुम्हारा जाना नहीं होगा, समझे।

—मुझे जाना ही होगा। बहुत काम है।

—तुम्हारा जाना नहीं होगा सुरेश। तुम्हारे साथ मेरी कितनी सारी बातें हैं। शादी के दिन एक पत्र दिया था; पर तुमने कोई उत्तर नहीं दिया।

—तुम्हारे उस पति का क्या हाल है अंजली ?

—तुम तो कोई खोज-खबर नहीं रखते। देखोगे ? —कह कर उसने साड़ी, ब्लाउज सब कुछ खोल दिया था। बोली थी, तुमने मेरा सब कुछ देखा है; फिर भी बहुत कुछ नहीं देखा है। —कह कर वह उसी पतला गाउन में, जिससे एक-एक अङ्ग साफ-साफ दीखता था, सामने आ खड़ी हुई थी। पीठ घुमा कर बोली थी, ये देखो। अंजली की सारी पीठ पर काले-काले दाग थे।

कुछेक क्षण दोनों चुप थे। उसके बाद धीरे-धीरे सुरेश की छाती में मुँह छिपा कर अंजली बोली थी, ये सारे चिन्ह तुम्हारी बुआ जी के ठीक किये वर से उपहार में मिले हैं। इसी चमन लाल ने उसके क्रूर हाथों से मेरा उद्धार किया है।

उसका चेहरा देखकर शायद अंजली भांप गयी थी कि वह और भी कुछ जानना चाहता है, सब कुछ सुनना चाहता है। क्योंकि वह मन-ही-मन कांप

ठीक उसी समय चमन कमरे में दाखिल हुआ। सुरेन को मानो मतलब मिला। वह बड़ा सज-धज कर आया है—काली टोपी, खद्दर का कीमती कुरता, सफेद जूता और चश्मा। दाढ़ी बिल्कुल साफ है। चमन सोफा पर बैठते ही बोला, कोई तकलीफ तो नहीं हुई सर ?

—नहीं, तकलीफ क्यों होगी।

—हो भी सकती है। पहाड़ी जगह होने के कारण अच्छी नींद नहीं भी आ सकती है।

—ठीक कहते हो; पर केवल पहाड़ी जगह ही नहीं, किसी भी नयी जगह में मैं ठीक से सो नहीं सकता। सुबह-सुबह इतना सज-धज कर ?

—हम बाहर जायेंगे।

—कहाँ ?

—आपको साथ लेकर जायेंगे। गाड़ी नीचे खड़ी है। नाश्ता लेकर निकल पड़ेंगे।

—लेकिन मेरा तो विचार है कि आज तुम्हारे साथ बैठ कर काम खत्म कर लूं।

—वह तो खैर होगा ही। आप जब चाहेंगे, हो जायेगा।

—अभी कहाँ जाओगे ?

—आप आये हैं, तो एकबार घूम-फिर कर देखेंगे नहीं।

—खैर घूमना-फिरना तो होता रहेगा। लेकिन असली काम ही तो अभी तक नहीं हुआ।

—उसमें भला कितना समय लगेगा ? वापसी में इधर से हो आयेंगे।

उसने सोचा था, ब्रेकफास्ट आते ही वह झटपट नाश्ता कर लेगा। लेकिन अब जल्दबाजी करने की इच्छा नहीं हो रही है। चारों तरफ फैले हरे-भरे पहाड़ी पेड़-पौधे और उनकी फुनगियों पर चमकती सुनहली धूप आदि देख-देख कर समय काट देने की इच्छा हो रही है। मानो अब उसे कुछ करने को नहीं है। वहीं जो सामने बैठा एक साथ नाश्ता ले रहा है और बार-बार तिरछी नजरों से उसे देख रहा है—सुरेन को फूटी नजरों नहीं सुहा रहा है। उसे जाने की इच्छा नहीं हो रही है। उसका मन बार-बार कह रहा है कि वह यदि जंगल की ओर चला जाता, तो मौका मिलते ही अंजली भी वहाँ अवश्य पहुँच जाती। वह यहाँ से इसलिये बाहर जाना नहीं चाहता है; क्योंकि वह जानता है कि यहाँ रहने पर किसी-न-किसी समय अंजली को देख पायेगा।

नहीं था। वह तो सिर्फ अपने बारे में ही सोचता रहा था। उसे तो सिर्फ यही चिन्ता थी कि कहीं नेक लड़के का मुखौटा उसके चेहरे से न गिर जाय। वह उस मासूम तरुणी की यातनाओं का अनुमान तक न लगा पाया जो एक अन्धेरे कमरे में सिसकियाँ भर कर जी रही थी।

उसने सोचा सपने में जो कुछ देखा है, वह सिर्फ एक सपना था, और कुछ नहीं। जितनी दुर्दशा का अनुमान वह लगा रहा है, संभव है, अंजली को उतनी दुर्दशा भोगनी न पड़ी हो। वह सोच रहा था कि व्यर्थ की चिन्ता न कर नीचे से थोड़ा घूम आये, चाय के पहले अगर खुद को तरोताजा कर ले, तो चमन भांप भी न सकेगा कि बाबू जी कल सारी रात सो न सके हैं। वह सब सोच ही रहा था कि उसे लगा आँखों में वही दृश्य नाच उठा है। आपादमस्तक काली चादर में ढंकी अंजली खड़ी है। रात में कहीं अभिसार में जाना हो, तो शायद इसी पोशाक में निकलना पड़ता है। गाउन उसने समीज की तरह पहन रखा है। और हाँ, किसी समय नीले रङ्ग की कीमती बनारसी में सिमटी अंजली उसके कमरे में दाखिल हुई थी। पीठ के काले दाग दिखाने के बहाने सहसा उसने साड़ी उतार फेंकी थी। जितनी बार वह सोचता है, यह सच है या सपना, उतनी ही बार एक नङ्गी पीठ और काले-काले दाग! वह मन-ही-मन चीख पड़ना चाहता था। नहीं, यह सच नहीं, अंजली यह सच नहीं हो सकता। मैं तुम्हारा यह दृश्य न देख सकूंगा। फिर भी अंजली पीठ घुमाये प्रतिमा-सी खड़ी है। शायद उसने कहना चाहा था, इस प्रकार मुझे टार्चर करने का क्या मतलब है अंजली? उस समय अंजली हँस रही थी। सिर्फ हँस रही थी। हँसते-हँसते वह कांप-कांप उठती थी।

और नीचे ताकने पर उसने देखा था, बारीक कपड़े के अन्दर से झांकता नितम्ब कितना ऊँचा और कछुए की पीठ-सा चिकना है। ओस टपका-टपका कर वहाँ केवल सफेद चाँदनी टपक रही है।

उसने सोचा, इस तरह अगर कमरे में चुपचाप अकेले बैठा रहा, तो वह पागल हो जायेगा।

उसने सोचा, झटपट कपड़े पहन कर बाहर निकल पड़ेगा कि ठीक उसी समय फिर वही दृश्य आँखों के सामने नाच उठा। अंजली सामने खड़ी है। उसकी नाभि के पास बड़ा-सा तिल है, पहले जहाँ हाथ रखने पर महसूस होता था कि मांस नहीं है, अभी वहाँ रबर जैसी चिकनाहट है। उसने चीख कर कहना चाहा था, अंजली जाओ। तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ अंजली, तुम जाओ। मुझ से अब देखा नहीं जाता।

—सच बोलूँ, आप बड़े जंच रहे हैं बाबू, जिस किसी पोशाक में आप जंचते हैं।

—अच्छा ! —इस बार सुरेश मुस्कराया ।

—हाँ सर । पहली बार जब आप से मिला था, बड़ा मजा आया था ।

—कैसे ?

—मैंने कार्ड भेजा । आपके लोकनाथ ने आकर कहा, साहब बिजी हैं ।

—उसके बाद तुम वापस आ गये ?

—मैं वापस आने वाला आदमी ही नहीं । लोकनाथ को जर्दा पान बड़ा पसन्द है ।

—वह बहुत पान खाता है ।

—मुझे लगा था कि साहब भी बहुत पान खाते हैं ।

—और नहीं खाने का कारण क्या समझे थे ?

—यह तो अब आपको देख कर समझ रहा हूँ; आजकल आप जैसा आदमी है कहाँ !

सुरेश ने मन-ही-मन सोचा, सालों का इसलिये इतना सब कुछ होता है । मक्कारबाजी कोई इनसे सीखे । जब से परिचय हुआ है, ऐसा कोई विशेषण नहीं जो साहब को खुश करने के लिये न दे चुका हो ! सुरेश बोला, बङ्गाली होता तो वापस आ जाता ।

—मैं भी बंगाली हूँ सर । लेकिन कहाँ गया, बाप-दादा का दोष खून में थोड़ा-बहुत रह गया है । जम कर बैठ गया । पान लगा कर खुद खाया और उसे भी दिया । तिलापति जर्दा था साहब । तरह-तरह के जर्दे का नाम सुन, ले सुन कर बड़ा खुश हुआ । तीर निशाने पर बैठा था बाबू जी । मैं उठने ही जा रहा था कि लोकनाथ बोला, बैठिये बाबू, मिला देता हूँ । आपका काम हो जायगा ।

—होगा या नहीं, तुमने उससे पता कर लिया ?

—होगा, यह तो मुझे पता था । आपके संबंध में जो खोज-खबर ली थी, उससे पता चल गया था कि आप बड़े भले आदमी हैं । उसने सब कुछ बताया था । तरीका भी मुझे बतला दिया था । बोला था, साहब से कहियेगा, नया कारोबार कर रहा हूँ सर । हेल्प नहीं करेंगे, तो कैसे होगा । इतना छोटा आर्डर सिर्फ हेल्प मांगने पर मिलेगा ।

—लोकनाथ सब यही सब करता रहता है ?

—सर, उसे कुछ नहीं कहियेगा । बेचारा बहुत भला आदमी है ।

वह ऐसा क्यों हो गया ! मानो यहाँ उसके जीवन की कोई अमूल्य निधि खो गयी थी और उसे पाने की आशा में वह फिर लौट आया है। शायद कल रात उसे उसकी निधि वापस मिल गयी है। अभी एक ऐसे आदमी के साथ उसे कहीं बाहर जाना पड़ेगा, यह सोच-सोच कर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा है; हालांकि मुँह फोड़ कर कुछ कह नहीं पाता। उसकी कमजोरी अगर पकड़ ली जाय ! वाह, सुरेश साहब तो बगुला भगत निकले—वह अगर ऐसा समझ बैठे ! सुरेश मन-ही-मन बड़ा छोटा होता जा रहा था।

उसे जो दीघरिया जाना है, वह यह भी भूल गया। दीघरिया जाना आवश्यक है। आसपास कोई कोई आबादी है या नहीं, पहाड़ों की ऊँचाई कितनी है, समतल भूमि कितनी है, सड़क बनायी जा सकेगी या नहीं, पैकिंग प्लांट के ट्रक आने-जाने लायक रास्ता है या नहीं, सब कुछ उसे भली-भांति देख लेना होगा। उसकी रिपोर्ट पर ही सब कुछ निर्भर करता है; फिर भी उसे जाने की इच्छा नहीं हो रही है। आलस्य के कारण सिर्फ जंभाई आ रही है।

चमन लाल बोला, साहब जरा जल्दी कीजिये, दीघरिया यहाँ से काफी दूर है।

—दीघरिया !

—हम वहीं तो जा रहे हैं।

—क्यों ?

—आप ने कहा था न कि दीघरिया देखना चाहते हैं; इसलिये आपको ले जा रहा हूँ। जगह भी देख लेंगे और थोड़ा घूमना भी हो जायेगा।

चमन दीघरिया जाने को इतना उतावला क्यों है, सुरेश समझ न सका। सम्भव है, वह नाना प्रकार से उसे खुश करने की कोशिश कर रहा हो। सुरेश भली-भांति जानता है कि दीघरिया प्लांट होने से चमन को व्यवसायिक क्षति होगी। इसलिये चमन का उत्साह देख कर वह आश्चर्यित हो रहा है।

सुरेश बोला, तुम्हें मेरे कारण बड़ी परेशानी उठानी पड़ रही है चमन।

—नहीं साहब, परेशानी कैसी, यह तो मेरा फर्ज है। आपको सुविधा-असुविधा का खयाल न रखूंगा, तो फिर हम हैं क्यों !

सुरेश को महसूस हुआ कि आज कल जैसी सर्दी नहीं है। उसने नीले रङ्ग का ट्राउजर, नेवी ब्लू कोट और पीले रङ्ग का टाई पहन रखा था। कभी-कभार वह हाथ में एक कीमती छड़ी लिया करता था, पर आज नहीं ली थी। बस, जाना है; इसलिये जा रहा था।

दरवाजे पर कोई खड़ा था। चमन उससे बोला, देखते नहीं, हम तैयार हैं।

वह अंदर चला गया। खिड़की से सुरेश ने देखा, गोशाला की ओर से वह अंदर आ रहा है।

—चलो। अब देर कैसी?

—बस, चलते हैं अब।

चमन चुपचाप बैठा है। सुरेश भी चुप है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वे क्यों बैठे हैं? कुछेक क्षण पहले चमन जल्दी मचा रहा था। लेकिन अभी उसका चेहरा देखने पर लगता है, कोई जल्दबाजी नहीं है। सुरेश की अधीरता भांप कर चमन बोला, दीघरिया में हमारी गायें भी हैं।

—उधर ही जाना है क्या?

—उधरी जाना ठीक नहीं होगा। उससे हमें कोई लाभ नहीं होगा। निर्मला को यह सब पसंद है न; इसलिये पटना से एक बछिया खरीद लायी थी। बछिया अब माँ बन गयी है। एक गाय से पूरा नहीं पड़ता था; इसलिये दो और खरीद ली है। ग्वाला सुबह बस से आकर दूध पहुँचा जाता है।

—इतनी दूर गाय पालने की क्या जरूरत थी, घर के पास रखते।

—कोई खास दूर तो है नहीं, बस पर आधा घंटा समय लगता है। और चूंकि यह है; इसलिये निर्मला का समय भी कट जाता है। बछिया अब गाय बन गयी है न; इसलिये निर्मला बोली कि वह हमारे साथ जायगी। बछड़ा कैसा हुआ है, निर्मला देखना चाहती है।

सुरेश के हृदय में एक हलचल मच गयी।

चमन मुस्कुरा कर बोला, जब हम जा ही रहे हैं तब, तब वह भी साथ चल कर देख ले कि उसकी बछिया अब माँ बन गयी है, माँ बनने पर कैसी दीखती है—

चमन की बात पूरी होते-न-होते खिड़की से सुरेश ने देखा, अंजली लाल रंग की रेशमी साड़ी में आ रही है।

वह सहज होने के उद्देश्य से बोला, बहुत अच्छा।

वह और कुछ न बोल सका। अंजली पर उसकी आँखें जम-सी गयीं। लाल साड़ी, लाल ब्लाउज, लाल सैंडिल और ललाट पर सिन्दूर का एक बड़ा-सा टीका। सिन्दूर का टीका देख कर मानो सुरेश की आँखें चौंधिया रही हैं। उसकी दृष्टि टिक नहीं पा रही है। लेकिन भाव से नजर फिराने की कोशिश करते ही उसने देखा, चमन ताक रहा है। चमन की आँखें उसे स्वाभाविक प्रतीत नहीं हुईं।

सुरेश बोला, चलो, अब चला जाय।

—दीघरिया में हमारा एक छोटा-मोटा खलिहान है।

—अच्छा !

चमन को पता है कि यह सुरेश साहब का तकिया कलाम है। बात-बात पर कह उठते हैं, "अच्छा।"

वह बोला, हाँ। छोटा-मोटा एक खलिहान है। निर्मला को खेती-बारी से दिलचस्पी है। एक छोटा-सा तालाब है। जामरूल और चकोतरा के पेड़ हैं। उसे जो-जो पसंद है, सब कर दिया है।

—और कुछ नहीं किया। औरतों को मन्दिर बनवाने की बड़ी इच्छा रहती है। वह नहीं बनवाया ?

—आजकल की औरतें यह सब नहीं चाहतीं।

—लेकिन वह तो आजकल की औरत नहीं दीखतीं।

—आप से अच्छी तरह परिचय न करा सका। बड़ी शर्मीली है। हो सकता है आज आप दोनों में घनिष्ठता हो जाय।

—अच्छा !

चमन को हंसी आयी। सुरेश बैग खोलकर कुछ देख रहा है। उसे अपने साथ एक फाइल लेनी थी। बैरा फाइल दे गया था। कहीं बाहर जाने के पहले हर चीज भली-भाँति देख लेना उसका स्वभाव है। वह कागजात उलट-पलट कर देख रहा है। कागजात देखते-देखते बोला, तुम कहते थे कि तुम्हारी पत्नी रवीन्द्र संगीत बहुत अच्छा गाती है।

—हाँ, बाबू जी।

—काम होने पर आज ही चला जाऊंगा।

—सर, आप मन-ही-मन कुछ सोचते रहते हैं। आपके मन में कोई विशेष इच्छा है।

—तुम ज्योतिषी कब से बन गये ?

—निर्मला का गाना सुनना चाहते हैं न ?

—संगीत से मुझे प्यार है। खुद गा नहीं सकता; पर गाना सुनना पसंद करता हूँ। यहाँ आने से पहले सोचा था—बोलते-बोलते सुरेश रुक गया। वह क्या बकवास कर रहा है ! वह तो उनका अपना कोई है नहीं, वह तो कम्पनी की ओर से मुआयना करने आया है, वह मानो यह भूल गया था। रुक कर बोला, चलो। और देरी करना बेकार है।

दरवाजे पर कोई खड़ा था। चमन उससे बोला, देखो नहीं, हम तैयार हैं।

वह अंदर चला गया। खिड़की से सुरेश ने देखा, कोठरी की ओर से वह अंदर आ रहा है।

—चलो। अब देर कैसी?

—बस, चलते हैं सर।

चमन चुपचाप बैठा है। सुरेश भी चुप है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वे क्यों बैठे हैं? कुछेक क्षण पहले चमन जल्दी मचा रहा था। लेकिन अभी उसका चेहरा देखने पर लगता है, कोई जल्दबाजी नहीं है। सुरेश की अधीरता भांप कर चमन बोला, दीघरिया में हमारी गायें भी हैं।

—डेयरी खोली है क्या?

—डेयरी कहना ठीक नहीं होगा। उससे हमें कोई लाभ नहीं होता। निर्मला को यह सब पसंद है न; इसलिये पटना से एक बछिया खरीद लायी थी। बछिया अब माँ बन गयी है। एक गाय से पूरा नहीं पड़ता था; इसलिये दो और खरीद ली है। ग्वाला सुबह बस से आकर दूध पहुंचा जाता है।

—इतनी दूर गाय पालने की क्या जरूरत थी, घर के पास रखते।

—कोई खास दूर तो है नहीं, बस पर भला क्या समय लगता है। और चूंकि वह है; इसलिये निर्मला का समय भी कट जाता है। बछिया अब गाय बन गयी है न; इसलिये निर्मला बोली कि वह हमारे साथ जायगी। बछड़ा कैसा हुआ है, निर्मला देखना चाहती है।

सुरेश के हृदय में एक हलचल मच गयी।

चमन मुस्कुरा कर बोला, जब हम जा ही रहे हैं सर, तब वह भी साथ चल कर देख ले कि उसकी बछिया अब मां बन गयी है, मां बनने पर कैसी दीखती है—

चमन की बात पूरी होते-न-होते खिड़की से सुरेश ने देखा, अंजली लाल रंग की रेशमी साड़ी में आ रही है।

वह सहज होने के उद्देश्य से बोला, बहुत अच्छा।

वह और कुछ न बोल सका। अंजली पर उसकी आँखें जम-सी गयीं। लाल साड़ी, लाल ब्लाउज, लाल सैंडिल और ललाट पर सिन्दूर का एक बड़ा-सा टीका। सिन्दूर का टीका देख कर मानो सुरेश की आंखें चौंधिया रही हैं। उसकी दृष्टि टिक नहीं पा रही है। उपेक्षित भाव से नजर फिराने की कोशिश करते ही उसने देखा, चमन खांस रहा है। चमन की खांसी उसे स्वाभाविक प्रतीत नहीं हुई।

गाड़ी पर बैठने के पहले चमन ने मानो औपचारिकता के नाते दोनों का परिचय कराया, निर्मला मेरी पत्नी। आप हैं सुरेश साहब।—कह कर वह सुरेश की ओर मुख़ातिब हुआ।

निर्मला ने नमस्ते में दोनों हाथ जोड़ दिये।

इस प्रकार नये सिरे से परिचय होता देख सुरेश विस्मित हुआ।

सुरेश की समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या बोले। अंजली ने एकदम अपरिचित-सा मुँह बना लिया है। एक ओर सुरेश, दूसरी ओर अंजली और बीच में चमन। पहाड़ी रास्ते पर गाड़ी भागी जा रही है। सुरेश को लगा कि उसके हृदय में बैठा कोई बैंड बजा रहा है। वह सहज होने की कोशिश करता है; पर हो नहीं पाता।

चमन बोला, यही है रेलवेन जल-प्रपात। जब कभी अवसर मिलता है, हम पति-पत्नी यहाँ चले आते हैं।

अंजली समझ रही है कि पति-पत्नी दो शब्दों पर चमन बार-बार क्यों जोर दे रहा है।

—यहाँ एकबार निर्मला जङ्गल में गुम हो गयी थी।—बात पूरी कर चमन ने निर्मला के चेहरे की ओर देखने की कोशिश की। निर्मला का चेहरा नहीं दीख रहा है। वह बाहर मुँह किये बैठी है। वह पहाड़ी रास्ता, हरे-भरे पेड़, मिशनरी अस्पताल या नीला आकाश देख रही है। और मानो वह कुछ भी नहीं देख रही है।

सुरेश बाहर नहीं देख रहा है, वह गाड़ी के अन्दर अंजली के पांव देख रहा है। अंजली ने आज चांदी की पायल पहन रखी है। पांवों की हरकत के साथ-साथ पायल बज उठती है। बारिश की बूंदों जैसी आवाज वह सुन रहा है। अन्दर-ही-अन्दर मानो इस पहाड़ी उपत्यका में वह आवाज गूंजती जा रही है। एक काला-कलूटा हाथ और एक भारी-भरकम शरीर बगल में बैठा है। छिः शरीर से कैसी बदबू आ रही है। इतना सज-धज कर भी चमन अपने शरीर की गंध छिपा न सका है। अंजली के शरीर की सुगंध भी चमन की दुर्गंध में ढंक गयी है। सुरेश मन-ही-मन व्यथित हो रहा है। वह सहन नहीं कर पा रहा है। चमन अंजली की पीठ पर हाथ रखे बैठा है। वह अन्यमनस्क दीखता है। नहीं, साथ आना अच्छा नहीं हुआ। चमन दिखाना चाहता है कि वह निर्मला को कितना चाहता है। चमन सिद्ध करना चाहता है कि दोनों एक-दूसरे को कितना प्यार करते हैं। उसने पायल पर से अपनी नजर उठा ली। वह भी अब बाहर देखने लगा।

गाड़ी एक मोड़ से निकल गयी। मिलटरी अस्पताल के निकास का दायरा अब नहीं दीख रहा है। रेस-कोर्स पीछे छूट गया। पीछे एक छोटा-सा पहाड़ है। गाड़ी पहाड़ का दो चक्कर लगा कर नीचे भाग रही है। ड्राइवर बड़ी तेज रफ्तार से गाड़ी भगा रहा है। शायद अंजली को तेज रफ्तार ही पसंद है। गाड़ी की रफ्तार देख कर सुरेश मन-ही-मन डर रहा है। रह-रह कर अंजली का आँचल खिड़की से बाहर उड़ रहा है। उसके सिर पर नीले रंग का स्कार्फ है। स्कार्फ भी फर-फर उड़ रहा है। लाल रंग के साथ नीला रंग अंजली को चार चाँद लगा रहा है।

सुरेश पलट कर अंजली को नहीं देख पाता। वह बाहर देख तो रहा है; पर मन-ही-मन पलट कर अंजली को देखना चाहता है। वह कोई बहाना ढूंढ रहा है। हाँ, चमन से बात करने के बहाने वह पलट कर सब कुछ देख सकता है। यही सोच कर बोला, चमन, यहाँ कितने दिनों से हो ?

चमन अवश्य कुछ-न-कुछ उत्तर देगा।

लेकिन यह क्या, चमन से बात करने के बहाने वह जिसे देखना चाहता है, वह तो आँख मूँदे चुप बैठी है। तब क्या अंजली इतनी देर से आँख मूँदे बैठी है! वह कुछ देख नहीं रही है! उसे क्या कुछ देखना अच्छा नहीं लग रहा है! क्या कल रात वाली घटना पर शर्मा रही है! लेकिन वह कुछ कह भी तो नहीं सकता। वह तो अंजली को पहचानता तक नहीं है। साथ जो बैठी है, वह अंजली नहीं, निर्मला है, चमन की पत्नी।

चमन बोला, हम दोनों एक साथ यहाँ आये हैं। शादी के बाद हनीमून मनाने यहाँ आये थे। जगह पसन्द आ गयी। निर्मला की इच्छा पर मकान बनवा लिया। उसके कहने पर ही कारोबार शुरू किया। निर्मला बड़ी भाग्यवान है—साक्षात लक्ष्मी। जीवन में उसके आने के बाद ही मैं दो-चार पैसे का मुँह देख पाया हूँ।

सुरेश की इच्छा हुई कि कह दे, तुम जिसकी इतनी प्रशंसा कर रहे हो, वह तो आँख बंद किये चुप बैठी है। वह तो कल सारी रात बाहर बैठी थी। तुम्हें क्या यह सब कुछ पता नहीं ? आश्चर्य ! अभी अंजली का चेहरा देख कर कौन कह सकता है कि कल सारी रात वह पाइन के पेड़ तले बैठी थी। अभी तो सुरेश को भी सब कुछ सपना जैसा लग रहा है। सुबह का मिलना, जंगल में घूमना, दोपहर का खाना और रात में पाइन तले बैठना। जंगल में उसका बैठा रहना मानो सच नहीं एक सपना था। अभी तो अंजली चुप बैठी है,

क्या यह वही अंजली है, जिसे कल रात उसने देखा था !

सुरेश अबोध-सा चुप बैठा था। वह सोच नहीं पा रहा था, क्या बोले।

चमन बोला, इधर जमीन बड़ी सस्ती है।

—अच्छा ? —सुरेश ने कहा।

चमन के होठों पर हँसी नाच गयी। उसने सुरेश को जितना कड़ा आ
सोच रखा था, अभी घुल-मिल जाने के कारण वैसा नहीं समझ रहा है।

चमन ने निर्मला की पीठ से हाथ उठा लिया। निर्मला का स्कार्फ खुल
है। उसने अच्छी तरह स्कार्फ बांध दिया। सुरेश को यह सब बड़ा बुरा लग
है। उसे ऐसा लगता है कि स्वेच्छा से अंजली साथ आयी है और अब
रही है।

स्कार्फ बांधने के बाद चमन बोला, सेब या सन्तरा का बाग हो, तो
अच्छा मुनाफा है।

—अच्छा !

चमन फिर हँसा। शायद अंजली के होठों पर भी मुस्कान खेल गयी।

चमन ने सुरेश की आँख बचा कर निर्मला के नितम्ब में चिकोटी काटी
कहीं सुरेश साहब भांप न लें कि दोनों को उनकी बात पर मजा आ रहा है

निर्मला को चिकोटी काटते सुरेश ने देख लिया। उसके मन में उथल-पु
मच गयी।

चमन ने इसकी परवाह न की। बोला, आजकल वैज्ञानिक ढंग से
लगाया जाता है, इसलिये फल भी काफी होता है।

सुरेश ने मन-ही-मन सोचा, चमन क्या मुझे दीघरिया में सेब और स
के बाग लगाने की सलाह दे रहा है ! तुम तो बड़े चालाक हो चमन।

चमन बोला, यहाँ माचिस की फैक्टरी भी बनायी जा सकती है।

—किया तो बहुत कुछ जा सकता है; पर मुश्किल यह है कि ह
कम्पनी को सिर्फ एक ही कारोबार मालूम है और वह है पैकिंग प्लांट।

—सो तो है ही। —कह उसने कीमती केस से सिगरेट निकाल कर
को दी।

चमन बोला, लाइसेन्स मिल जाय, तो मैं यहाँ एक कागज की
बनवाऊँ।

—कोशिश करने से लाइसेन्स मिल जायेगा।

अभी तक सुरेश और अंजली में कोई बात नहीं हो पायी है। चमन

बातों का उत्तर भी यह बिरले ही देती है ।

चमन ने हाथ उठा कर दिखाया, यह पेड़ देखते हैं न साहब, यूकेलिप्टस पेड़ का पहाड़, यहाँ एक किस्म की घास होती है । कागज के लिये यही अच्छी घास है । इस घास से केमिकल पेपर भी बन सकता है ।

—किसने कहा ?

—दो कैमिस्ट ने आया था । दोनों ने पता नहीं घास से क्या-क्या कैमिकल निकाल कर दिखाया ।

—घास से कैमिकल निकाला जा सकता है, आज तुमसे पहली बार सुन रहा हूँ ।

—किससे क्या होता है, हम भला जानते ही कितना हैं सर !

अंजली ने अबकी पहली बार मुँह खोला, शीशा थोड़ा चढ़ा दो, मुझे सर्दी लग रही है ।

सुरेश ने मजाक किया, और क्या-क्या किया जा सकता है चमन ?

यानी सुरेश यह बताना चाहता है कि यहाँ कौन-कौन-सा काम हो सकता है, यहाँ क्या-क्या प्रोजेक्ट है, यह सब मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ । यही सोच कर वह बोला, मेरी अटैची में इस इलाके का पूरा नक्शा है । तुम्हें दे आऊँगा । बहुत कुछ तुम उससे इस इलाके के बारे में जान सकोगे ।

चमन समझ गया कि सुरेश साहब उससे उल्लू बनना नहीं चाहते । इतने चालाक आदमी को वह बेवकूफ बना भी कैसे सकता है । कल रात निर्मला कहाँ तक रही है, यह भी वह नहीं समझ पा रहा है । सुबह जब तक निर्मला चमन को अपने कमरे में बुला नहीं भेजती, वह उनके कमरे में नहीं जा सकता । सुबह वह पूजा करती है । मन की शान्ति के लिये काशी के एक साधु से मन्त्र ले आयी है । जिस रात परिश्रम ज्यादा करना पड़ता है, उसके अगले दिन सुबह वह मानो पूजा-घर से निकलना ही नहीं चाहती । आज इतनी जल्द निकलने का कारण शायद यह है कि वह दीघरिया जा रहा है, सुरेश साहब को भी साथ ले जा रहा है । सुरेश साहब साथ जा रहे हैं, शायद इसलिये इतनी जल्द पूजा-घर से निकल आयी है । सूरज उगते-न-उगते पूजा-पाठ खत्म कर लिये गुलाब की तरह चमन के सामने आ खड़ी हुई है । बोली है, मैं भी साथ जाऊँगी ।

—तुम जाओगी ?

—हाँ ।

—लेकिन सुरेश साहब से क्या कहूँगा ?

क्या यह वही अंजली है, जिसे कल रात उसने देखा था !

सुरेश अबोध-सा चुप बैठा था। वह सोच नहीं पा रहा था, क्या बोले।

चमन बोला, इधर जमीन बड़ी सस्ती है।

—अच्छा ? —सुरेश ने कहा।

चमन के होठों पर हँसी नाच गयी। उसने सुरेश को जितना कड़ा आदमी सोच रखा था, अभी घुल-मिल जाने के कारण वैसा नहीं समझ रहा है।

चमन ने निर्मला की पीठ से हाथ उठा लिया। निर्मला का स्कार्फ खुल गया है। उसने अच्छी तरह स्कार्फ बांध दिया। सुरेश को यह सब बड़ा बुरा लग रहा है। उसे ऐसा लगता है कि स्वेच्छा से अंजली साथ आयी है और अब शर्मा रही है।

स्कार्फ बांधने के बाद चमन बोला, सेव या सन्तरा का बाग हो, तो बड़ा अच्छा मुनाफा है।

—अच्छा !

चमन फिर हँसा। शायद अंजली के होठों पर भी मुस्कान खेल गयी।

चमन ने सुरेश की आँख बचा कर निर्मला के नितम्ब में चिकोटी काटी। कहीं सुरेश साहब भांप न लें कि दोनों को उनकी बात पर मजा आ रहा है।

निर्मला को चिकोटी काटते सुरेश ने देख लिया। उसके मन में उथल-पुथल मच गयी।

चमन ने इसकी परवाह न की। बोला, आजकल वैज्ञानिक ढंग से बाग लगाया जाता है, इसलिये फल भी काफी होता है।

सुरेश ने मन-ही-मन सोचा, चमन क्या मुझे दीघरिया में सेव और सन्तरा के बाग लगाने की सलाह दे रहा है ! तुम तो बड़े चालाक हो चमन।

चमन बोला, यहाँ माचिस की फैक्टरी भी बनायी जा सकती है।

—किया तो बहुत कुछ जा सकता है; पर मुश्किल यह है कि हमारी कम्पनी को सिर्फ एक ही कारोबार मालूम है और वह है पैकिंग प्लांट।

—सो तो है ही। —कह उसने कीमती केस से सिगरेट निकाल कर सुरेश को दी।

चमन बोला, लाइसेन्स मिल जाय, तो मैं यहाँ एक कागज की मिल बनवाऊँ।

—कोशिश करने से लाइसेन्स मिल जायेगा।

अभी तक सुरेश और अंजली में कोई बात नहीं हो पायी है। चमन की

बातों का उत्तर भी वह बिरले ही देती है।

चमन ने हाथ उठा कर दिखाया, वह देख रहे हैं न साहब कोनिकल शेप का पहाड़, वहाँ एक किस्म की घास होती है। कागज के लिये बड़ी अच्छी घास है। इस घास से केमिकल रेयन भी बन सकता है।

—किसने कहा ?

—दो कैमिस्ट ले आया था। दोनों ने पता नहीं घास से क्या सब कैमिकल निकाल कर दिखाया।

—घास से कैमिकल निकाला जा सकता है, आज तुमसे पहली बार सुन रहा हूँ।

—किससे क्या होता है, हम भला जानते ही कितना हैं सर !

अंजली ने अबकी पहली बार मुँह खोला, शीशा थोड़ा चढ़ा दो, मुझे सर्दी लग रही है।

सुरेश ने मजाक किया, और क्या-क्या किया जा सकता है चमन ?

यानी सुरेश यह बताना चाहता है कि यहाँ कौन-कौन-सा काम हो सकता है, कहाँ क्या-क्या प्रोजेक्ट है, यह सब मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ। यही सोच कर वह बोला, मेरी अटैची में इस इलाके का पूरा नक्शा है। तुम्हें दे जाऊँगा। बहुत कुछ तुम उससे इस इलाके के बारे में जान सकोगे।

चमन समझ गया कि सुरेश साहब उससे उल्लू बनना नहीं चाहते। इतने चालाक आदमी को वह बेवकूफ बना भी कैसे सकता है। कल रात निर्मला कहाँ तक बढ़ी है, यह भी वह नहीं समझ पा रहा है। सुबह जब तक निर्मला चमन को अपने कमरे में बुला नहीं भेजती, वह उसके कमरे में नहीं जा सकता। सुबह वह पूजा करती है। मन की शान्ति के लिये काशी के एक साधु से मन्त्र ले आयी है। जिस रात परिश्रम ज्यादा करना पड़ता है, उसके अगले दिन सुबह वह मानो पूजा-घर से निकलना ही नहीं चाहती। आज इतनी जल्द निकलने का कारण शायद यह है कि वह दीघरिया जा रहा है, सुरेश साहब को भी साथ ले जा रहा है। सुरेश साहब साथ जा रहे हैं, शायद इसलिये इतनी जल्द पूजा-घर से निकल आयी है। सूरज उगते-न-उगते पूजा-पाठ खत्म कर खिले गुलाब की तरह चमन के सामने आ खड़ी हुई है। बोली है मैं भी साथ जाऊँगी।

—कह देना, दीघरिया में हमारी जमीन है। पटना से मेरे लिये एक गाय खरीद कर लायी गयी थी, उसे बच्चा हुआ है, यही देखने जा रही है।

—तुम्हारी बुद्धि की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है।

—और तुम्हारे माथे में गोबर भरा है!

—लोग यही कहते हैं।

—नहीं, यह तुम्हारा अभिनय है। तुम खुद को सीधा-सादा गंवार दिखाने का अभिनय कर दुनिया को बेवकूफ बनाते हो; पर मैं तुम्हारी नस-नस पहचानता हूँ।

चमन का चेहरा उतर आया था।

—यह क्या, मुँह क्यों फुला बैठे?

—तुम मजाक करती हो तो मुझे बड़ा दुःख होता है निर्मला।

—ठीक है, अब तुम जाओ। बानू से कहो, ब्रेकफास्ट कर लें।

तत्पश्चात विस्मित आँखों से देख कर चमन बोला था, तुम क्या सचमुच में हमारे साथ जाओगी निर्मला! तुम जाओगी, मैं तो कल्पना तक न कर सका था।

—जाऊँगी।

—कल रात गाड़ी कहाँ तक बढ़ी?

—एक इञ्च भी नहीं।

—क्यों!

—क्यों फिर क्यों!

चमन का चेहरा फिर उतर आया।

निर्मला मानो उसे आश्वासन देने के उद्देश्य से बोली, समझते क्यों नहीं चमन, सुरेश साहब मेरे पुराने आशिक हैं। वर्षों बाद मुलाकात हुई है, झट से कुछ कहना अच्छा नहीं।

—ठीक कहती हो।

—फिर इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हो?

—चले जायेंगे न।

—कितनी बार तो कह चुकी, जब तक मैं जाने न कहूँ, तब तक नहीं जा सकते।

—क्या कहती हो निर्मला!

मेक-अप में निर्मला का चेहरा ताजे गुलाब-सा दीख रहा है। चमन चुम्बन लेना चाहता है; पर निर्मला होठों पर उंगली रख कर मना करती है। चमन

...क आता है कि अभी चुम्बन लेने से शेष-अब ...चाव हो जायेगा। यह यह
...ीं समझ पाता कि अभी चुम्बन लेने से शेष-आग उभर आयेगा, उसके होठों में
...ग आयेगा। गर्मी-कसार अब चमन पागल-सा हो उठता है, उस समय निर्मला
अपनी एक विशिष्ट मुद्रा से उसे शांत कर देती है। मानो वह उस काले-कलूटे
देह पर जादू फेर देती है। समय-असमय उस दैत्य के लिये भी उसे कुछ-न-कुछ
करना ही पड़ता है, अगर नहीं करे तो उस रंजो-आराम के लिये रुपये कहाँ
से आयें।

आते-जाते बोला, उन्हें कुछ पता तो न चल पाया ?

—क्या पता चलेगा ?

—यही कि तुम मेरी पत्नी नहीं हो।

—पता क्यों चलेगा ?

—अपने पुराने आशिक से अगर सब बता दिया हो।

—मैं इतनी बेवकूफ नहीं।

—प्यार के मामले में औरतें कुछ बेवकूफ होती हैं।

—गलत।

—नहीं। अगर ऐसा न होता, तो अब तक काम हो जाता।

—समय लगता है।

—और कितना लगेगा, समय की भी एक सीमा होनी चाहिये न। ...
चिड़िया हाथ से उड़ जायेगी, तब तो मानना ही पड़ेगा कि औरत प्यार के
मामले में बेवकूफ होती है। मैं तो हमेशा डरता रहता हूँ कि तुम कहीं पकड़
में न आओ।

—यानी कहीं पर्दाफाश न हो जाय कि मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ ?

—और नहीं तो क्या !

—कौन कहता है चमन कि मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ ? तुम क्या मु...
सौगंध लेकर कह सकते हो ? तुम तो मुझे इस तरह रखते नहीं कि मुझे यह
...हुआ हो कि मैं तुम्हारी स्त्री नहीं हूँ।

निर्मला अब इस तरह बोलती है, तो लगता है कि वह अब चमन ...
पर वह सब काम नहीं तब करेगी। चमन भी सोचता है कि अब वह नि...
व्यवहार इस तरह नहीं करेगा। उसे भी बड़ा दुःख होता है। उफ ! ...
साथ कितना पाशविक अत्याचार होता है। कौन सब हृत्पिंड पर ...
गहरे छोड़ जाता है ! यह सब सोचने पर कई दिनों तक चमन के ...

बात निकल नहीं पाती। मन हमेशा उदास-उदास-सा रहता है ।

चमन को कुछेक क्षण चुप देख कर निर्मला समझ गयी कि दुःख चमन के हृदय को साल रहा है। वह कहकहा मार कर हंस पड़ी। हाय, बेचारा मेरे लिये बहुत सोचता है ! चमन को सहज बनाने के उद्देश्य से बोली, जाओ, अब देर न करो।

थोड़ा सहज होकर चमन ने राहत की सांस ली। तत्पश्चात एक-एक कर बोला, सुरेश साहब बड़े चालाक आदमी है, उन्हें अगर भनक मिल गयी, तो सारा किया-कराया चौपट हो जायेगा।

निर्मला मन-ही-मन बोली, चालाक आदमी अच्छा बनने की कोशिश नहीं करता। वह नाना प्रकार से धन कमाता है। वह जो कुछ प्राप्य समझता है, उसे जबर्दस्ती हथिया लेता है। सुरेश इस किस्म का आदमी नहीं है। मैं उसे भली-भांति पहचानती हूँ। और पहचानने के कारण ही उसकी आँखों में धूल झोंकते मुझे भय होता है। नहीं, मैं उसे अन्धेरे में नहीं रख सकती, उसे बेवकूफ नहीं बना सकती। उसे लोभ दिखा कर, शरीर दिखा कर अपना काम हासिल करना मुझे जरा भी पसंद नहीं। सुरेश के प्रति इस प्रकार का विचार भी मेरे मन को में नहीं आता है।—निर्मला यह सब अपने आप से बोली, मुँह से कुछ न बोल सकी। उसे यह भी पता है कि गाड़ी पर उसे अपरिचित का अभिनय करना है। वह यह भी जानती है कि गाड़ी पर कैसी-कैसी बात हो सकती है और किस तरह की बात पर सुरेश परेशान हो सकता है। वह सब कुछ जानती है; इसलिये उसके होठों पर एक आश्चर्यजनक जटिल मुस्कान है।

एक बाजार जैसी जगह पार होते ही चमन बोला, तुम तो जानती नहीं निर्मला, सुरेश साहब ने हमारा कितना उपकार किया है।—कह कर उसने एक कागज बढ़ाना चाहा; ताकि सुरेश साहब समझें कि निर्मला उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानती है। वह अपनी बातों से निर्मला और सुरेश को सहज बनाने की कोशिश कर रहा था।

सुरेश बोला, आप से चमन बढ़ा-चढ़ा कर कह रहा है।

बिना मुँह घुमाये ही निर्मला बोली, वह तो ऐसे हैं नहीं जो किसी के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बोलें; बल्कि थोड़ा कम बोलना ही उनका स्वभाव है।

—लेकिन मैं तो समझता हूँ कि ज्यादा बोलने की उसे बीमारी है।

—आप उन्हें कब से जानते है ?—कह कर इस बार निर्मला ने अपनी आँखें उनके-चेहरे पर जमा दीं। बड़ी-बड़ी आँखें, मांग मे सिंदूर की चौड़ी रेखा

मोहक मुखमण्डल। अभी निर्मला में कल रात की अंजली खोजे भी नहीं
र्ती।

दीपरिया का कॉटेज। चमन ने देखा, निर्मला काफी सहज हो उठी है।
र्मला ने अब उसे जरा भी भय नहीं है। सुरेश साहब से वह अभी तक
आश्वस्त नहीं हो पाया है। उसका दिल धड़क रहा है। गंभीर आदमियों से वह
डरता है। इतनी कोशिशों के बावजूद भी सुरेश साहब को स्वाभाविक नहीं
बना पा रहा है। हमेशा एक कैसा संकोच उन्हें जकड़े हुए है। निर्मला को
साथ लाकर मानो उसने सुरेश साहब को बड़ी मुश्किल में फंसा दिया है। वह
खुल कर बात भी नहीं कर पाते। लेकिन बेचारा करे भी क्या, निर्मला ही तो
उसकी सब कुछ है। निर्मला की बुद्धि पर उसे अगाध विश्वास है। वह जानता
है कि यह युवती अपने रूप-यौवन और नाज-नखरे से स्वार्थी दैत्यों को परास्त
कर डालती है।

लेकिन आज चमन शुरू से एक खास बात निर्मला में देख रहा है। वह
मानो भीतर से जोर नहीं पा रही है; बल्कि जो कुछ कर रही है, अनिच्छापूर्वक
कर रही है। उनका चेहरा साफ बता रहा है कि वह अभिनय कर रही है।
अभी अभी जो दोनों भाग कर जामुन के पेड़ तले बैठे हैं, उसमें भी कोई स्वाभा-
विकता नजर नहीं आती; बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों के हृदय में एक
आश्चर्यजनक प्रेम जन्म ले रहा है और वह देख कर उसे ईर्ष्या होती है। वह
बर्दाश्त नहीं कर पाता; फिर भी एक बड़ी मछली फंसने के लोभ में आँखें बंद
किये रहता है।

और फिर गाड़ी। दीपरिया मैदान की ओर गाड़ी भागी जा रही है।
गाड़ी पर चमन और सुरेश बातें कर रहे हैं। निर्मला गुमसुम बैठी है। वह फिर
अन्यमनस्क हो गयी है। उसके चेहरे पर एक कैसी उदासी छायी हुई है।
ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह किसी अतल गहराई में क्रमशः डूबती जा रही
है। कोई मानो उसे खींचे जा रहा है। शायद उसका अभिनय सफल नहीं हुआ
है। अपने व्यवहार के कारण वह शायद अपनी असलियत छिपा न सकी है।
सुरेश शायद समझ गया है कि वह चमन की पत्नी नहीं; बल्कि रखैल है। इसलिये
वह हमेशा दूर-दूर रहना चाहता है, करीब आना नहीं चाहता। दो दिनों से
वह देख रही है, करीब होने पर भी सुरेश उससे कटा-कटा-सा रहता है। उसके
चेहरे पर हमेशा एक अजीब-सा संकोच छाया रहता है। कल रात वह एक ऐसी
अदम्य इच्छा के अधीन पागल-सी हो उठी थी कि सारी शृंखलाओं को तो

कर सुरेश से कहना चाहती थी, सुरेश मैं वह नहीं, जो तुम समझते हो। अब मैं ऐसे जीवन से थक गयी हूँ। मुझ से अब यह सब नहीं हो पाता, सुरेश। तुम क्यों आये? तुमने आकर मेरे मन में आग जला दी। क्यों आये तुम? मैं अपने आप को भूल जाना चाहती थी। लेकिन वह कुछ भी न कह सकी थी। सुरेश ने उसे तरह-तरह से समझाया था। नहीं, उसने समझाया नहीं बल्कि बहलाया था। खिलौना खो जाने पर जिस तरह बच्चों को बहलाया जाता है, ठीक उसी तरह सुरेश ने उसे बहलाने की कोशिश की थी। उस समय घृणा और क्षोभ से उसका तन-बदन जल उठा था और इच्छा हुई थी कि सुरेश के चेहरे पर थूक दे।···निर्मला स्वयं को पराजित महसूस कर रही है। शायद पराजित होने के कारण ही चुप बैठी है, खिड़की पर मुँह रख कर बाहर देख रही है।

गाड़ी एक हिचकोले के साथ रुकी। सुरेश ने देखा दोघरिया का मैदान अपने में हरियाली संजोये दूर तक फैला है। सामने ही एक झील है। झील के उस पार एक चट्टान पहाड़ की तरह सीना ताने खड़ी है। चट्टान के चारों तरफ हरे-भरे पेड़-पौधे हरियाली बिखेर रहे हैं। रंग-बिरंगी लताएं चट्टान से चिपकी हुई हैं। सामने का सूरज आश्चर्यजनक किरणें बिखेर रहा है और ऐसी किरणों में डूबी प्रकृति एक मनोहर दृश्य उपस्थित कर रही है। प्रकृति की इस मनोहरता में सुरेश को अंजली कटी-कटी-सी प्रतीत हुई। सुरेश और चमन विभिन्न विषयों पर बात कर रहे हैं। निर्मला उन दोनों से कटी-कटी रहती है। किसी पेड़ से पत्ते तोड़ कर सूंघती है या किसी झाड़ी से नीले रंग का फूल तोड़कर जूड़े में खोंस लेती है। चारों तरफ देख कर निर्मला ने एक छोटा-सा शीशा निकाला। दोनों की नज़र बचा कर उसने शीशा देखा। मखमली घास, हरे-भरे पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूल, छलकते सरोवर और पहाड़ों के बीच उसे लगा कि वह अरेबियन नाइट्स की नायिका बन गयी है। पता नहीं, मन क्यों कर पवित्र हो गया! और मन में पवित्रता का अनुभव कर वह एक पत्थर पर जा बैठी। उसके हृदय मे प्रकृति के प्रति प्यार उमड़ आया। रह-रह कर उसे छिपी नज़रों से सुरेश को देखने की इच्छा हो रही है। नीला पेंट, ब्लू सर्ज का कोट, सफेद मोजे; मोजों के अन्दर छिपी कोमल त्वचा, हाथ-पांव और छाती के बाल। यानी सुरेश की हर चीज़ उसके तन-बदन में एक अजीब-सी उष्णता भर रही है।

सुरेश पर नज़र पड़ते ही उसे ऐसा लगा कि एक अजीब-सी गुनगुनी धारा उसकी नसों में बहने लगी है। आज तक उसका चेहरा प्रत्याशा की आग में इस तरह तमतमा न उठा था। वह पागल-सी हो उठी है। जलन इतनी तेज होती

जा रही है कि अब वह किसी की एक न सुनेगी , यहाँ तक कि चमन की भी कोई परवाह न करेगी। वह सुरेश को साथ लिये किसी जङ्गल में जा घुसेगी। उसके बाद किसी झुरमुट में या खुले मैदान में मूसलाधार वर्षा में भीगती रहेगी।

निर्मला ने देखा, सुरेश ने एक छोटा-सा कैमरा निकाला है ; वह भिन्न-भिन्न कोणों से फोटो खींच रहा है ; ये सारे फोटो रिपोर्ट के साथ कम्पनी को दिये जायेंगे। यानी फोटो खींचना भी एक आवश्यक काम है जो सुरेश कम्पनी के लिये कर रहा है। निर्मला को लगा कि सुरेश छिप-छिप कर उसकी तस्वीर भी अपने कैमरे में बंद करता जा रहा है। हालांकि सुरेश अंजली को पता नहीं चलने दे रहा है कि वह छिप-छिप कर उसे अपने कैमरे में बंद करता जा रहा है। लेकिन सुरेश का चेहरा देखकर ही निर्मला समझ रही है कि वह सिर्फ मैदान और पहाड़ को कैमरे में नहीं उतार रहा है। वह इस तरह निर्मला के फोटो खींच रहा है ताकि चमन को पता तक न चले। सिर्फ क्लिक-क्लिक की आवाज हो रही है।

कैमरा में आँख लगाये या फोटो खींचते-खींचते सुरेश अंजली के बिल्कुल करीब जा पहुँचा। उसके बाद चमन की ओर देख कर बोला, चमन, मैं तुम्हारी पत्नी की एक तस्वीर ले रहा हूँ, बुरा तो नहीं मानोगे ?

—अरे नहीं साहब। कल वह खाने पर न आ सकी थी, इससे बेचारी को बड़ा दुःख हुआ था। एक क्यों बाबू जी, जितना जी चाहे, उतनी तस्वीर लीजिये न।

—ठीक तो ?

—हाँ साहब हाँ। मेरी निर्मला दकियानूसी विचार की नहीं है।

—खैर, इतना तो मैं इनकी बातचीत से ही समझ गया हूँ।—यह कह कर सुरेश निर्मला की ओर मुड़ा, आप जरा खड़ी हो जाइये तो।

अंजली उठ खड़ी हुई।

—जरा मुँह ऊपर उठाइये न।

अंजली ने मुँह ज्यादा ऊंचा उठा लिया।

—इतना नहीं।

अंजली ने मुँह काफी नीचे झुका लिया।

—दोनों के बीच।

अबकी निर्मला हंस पड़ी।—आप तो ढेर सारी तस्वीर ले चुके हैं सुरेश साहब, और लेकर क्या करेंगे ?

सुरेश का चेहरा कैसा न एक अपराधी-सा दीख पड़ा। अंजली क्यों कर समझ गयी कि मैंने छिप-छिप कर उसकी तस्वीर खींची है! इस बार निर्मला ने सुरेश की ओर देखा। जिस तरह हर बार देखती आयी है, जिस तरह बुआ जी द्वारा पकड़े जाते वक्त देखा था, ठीक उसी तरह देखा। ऐसी नाजुक घड़ियों में सुरेश की आँखों में आवश्यकता से अधिक भोलापन उभर आता है, उसकी आँखों से भलमनसाहत टपकने लगती है। वह सर्वथा अबोध बालक प्रतीत होने लगता है। यानी अब वह फोटो नहीं खींच सकेगा, वह जा रहा है। उसके चल देने पर निर्मला का कष्ट बढ़ जाता है, वह छटपटाने लगती है। वह सुरेश को अपने निकट पाना चाहती है, बहुत निकट। सुरेश जा रहा है, दूरी बढ़ती जा रही है। अब नहीं, वह अपने को अब नहीं रोक सकती। बोल उठी, सुरेश साहब, क्या हुआ, तस्वीर लीजिये न।

सुरेश ने पलट कर देखा।

—आपने इस पोज में चाहा था न?

सुरेश के मुँह से बोल न फूटा। निर्मला ने एक अद्भुत ढंग में गर्दन सीधी कर रखी है। निर्मला का सारा व्यक्तित्व फूट पड़ा है। उसने शटर दबाया; पर तस्वीर नहीं ली। ऐसी तस्वीर लेने से उसे शान्ति नहीं मिलेगी।

अंजली बोली, आप मेरी एक और तस्वीर लीजिये।

—किस तरह लूं, बताइये।

—मैं पीछे पलट कर भागूंगी और आप कैमरा क्लिक करेंगे।

सुरेश ने यत्नपूर्वक भागती हुई अंजली को कैमरे में कैद कर लिया।

—एक और।

—किस पोज में, बताइये?

—इस पोज में।—कह कर एक पेड़ की ओट में उसने अपना आधा शरीर छिपा लिया। आधा शरीर और पूरा चेहरा बाहर है। जंगली झाड़ियों के अन्दर उसका चेहरा दीख रहा है। लाल बनारसी, आँखों में काजल; पर झाड़ियों में छिपा चेहरा। यह सब देख कर वह बोला, पर्याप्त प्रकाश नहीं मिल रहा है।

—जितना मिलता है, उतने से ही हो जायेगा। जितना अस्पष्ट होगा, उतना ही आप मुझे पहचान सकेंगे।

सुरेश को कैमरा क्लिक करना पड़ा।

अन्त में सुरेश बोला, चमन तुम अपनी पत्नी के पास खड़े हो जाओ। दोनों की तस्वीर लूंगा।

—साहब, मैं तस्वीर नहीं खिचाता ।

—आज खिचा लो ।

—हमारे वंश में इसकी मनाही है, सर । बल्कि आप और निर्मला एक साथ खड़े हो जाइये, तस्वीर मैं ले लूंगा ।

चमन की ऐसी बात सुन कर सुरेश सोच न सका कि वह क्या करे । पता नहीं, उसका दिल क्यों धड़कने लगा है ! बोला, तुम कभी-कभी बच्चों-सी बातें करने लगते हो चमन ।

—जीने के लिये कभी-कभार बच्चा भी बनना पड़ता है साहब । बिना बच्चा बने जीने का मजा नहीं आता । आप निर्मला के करीब जा खड़े हो जाइये न सर । डर क्यों रहे हैं !

—डरूंगा भला क्यों ?

—निर्मला बुरा नहीं मानेगी ।

—नहीं, मैं बुरा मानूंगी । बुरा मानने का कारण हो सकता है ।—निर्मला ने सख्त आवाज में कहा ।

सुरेश ने तत्क्षण प्रसंग बदल दिया । इसे लेकर दोनों में विवाद बढ़ सकता है, सोच कर बोला, यह किसकी जमीन है, जानते हो ?

—किसकी है साहब ?

—एक बंगाली बाबू की ।

दरअसल सुरेश ने अपमान पी जाने के उद्देश्य से ही प्रसंग बदल दिया था ।

सुरेश कुछेक क्षण कुछ सोचता रहा । धीरे-धीरे दूर चला गया । फिर कुछ सोचता हुआ चमन के करीब आ गया । वह अब अंजली की ओर नहीं देख पा रहा है । बोला, उन्होंने टी-गार्डन बनाने के लिये खरीदी थी ।

—फिर बनाया क्यों नहीं ?

सुरेश ने देखा, अंजली काफी दूर निकल गयी है । उसने सोचा, उसे अकेले छोड़ना ठीक नहीं । उधर ही जाया जाय । वह चमन से बातें करता हुआ आगे बढ़ चला—उन लोगों का एक्सपोर्ट-इंपोर्ट का बिजनेस था । धंधा बड़ा जोरदार था ।

—एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के बिजनेस में लक्ष्मी बरसती है सर ।

—ठीक कहते हो । उन लोगों पर भी लक्ष्मी प्रसन्न थी । अब हालत बिगड़ गयी है ।

सुरेश क्षण भर के लिये चुप हो गया । उसके बाद वह जो नहीं कहना

चाहता था, सहसा उसके मुँह से निकल पड़ा, पता नहीं तुम्हारी पत्नी मन-ही-मन क्या सोच बैठी।

—कुछ नहीं साहब, कुछ नहीं। वह है ही अपनी मरजी की। जो चाहेगी, वही करेगी। पता नहीं, कभी-कभार उस पर कैसी सनक सवार हो जाती है। मैं अगर जानता होता कि अभी उस पर उसकी मरजी का भूत सवार है, तो कहता ही नहीं।—चमन ने बड़े संकोच के साथ कहा।

—हाँ, तो मैं कह रहा था न!—कह कर सुरेश सहसा क्षण भर के लिये चुप हो गया। उसने देखा, निर्मला झील के पास एक पत्थर पर गुमसुम बैठी है। बोला, हाँ तो मैं यही कह रहा था कि बंगाली बिजनेसमैन का मंदी में जो नतीजा होता है, वही उन लोगों के साथ भी हुआ। पता नहीं, तुम जानते हो या नहीं, स्टैनलेस स्टील के कारोबार में पैसा-ही-पैसा है। एक षडयंत्र के फलस्वरूप उन लोगों के हाथों से कारोबार निकल गया।

सुरेश मानो अभी बोल नहीं रहा है; बल्कि जो-सो बके जा रहा है। वह मानो फिर से कैमरे में कुछ ढूंढ रहा है। ढूंढते-ढूंढते अन्यमनस्क-सा हो गया है। उसने निर्मला को देखा। वह उसी पत्थर पर बैठी हुई है। शायद वह कुछ गुनगुना रही है। पता नहीं क्या सोच कर वह बोल उठा, चमन, तुम्हारी पत्नी रवीन्द्र संगीत जानती हैं न। एक गीत सुनाने कहो न।

चारो तरफ भीनी-भीनी हवा। सर्दी की हवा और गुनगुनी धूप। सूर्य की प्यारी किरणों में नहाता वन-उपवन। चारों ओर रंग-बिरंगे फूलों की बहार।

चमन ने आवाज दी, निर्मला।

निर्मला जलतरंग-सी आवाज में बोल उठी, क्या··· !

—आओ न, सुरेश साहब तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं।

—इधर ही आ जाओ न, कितनी अच्छी जगह है। रंग-बिरंगी चिड़ियों ने झील में उतरना शुरू किया है। वह देखो, एक कितनी बड़ी चिड़िया आसमान में उड़ रही है। आओ, इधर आ जाओ। अभी-अभी वह चिड़िया झील में उतर पड़ेगी।

दोनों ने देखा एक बहुत बड़ी चिड़िया झील में उतर रही है। बड़ी खूबसूरत चिड़िया है। रंग एकदम सफेद है, सिर्फ पंखों पर कहीं नीला रंग दीख पड़ता है। वह और चिड़ियों के बीच रानी-सी जा बैठी।

झील के चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। झील में कमल और कुमुद की बहार है। एक पहाड़ी उपत्यका में एक ऐसी मनोहर झील देख कर सुरेश मुग्ध हो गया।

निकट पहुँचने पर दोनों ने देखा, निर्मला दोनों पैर पानी में डुबोये एक पत्थर पर बैठी है। लाल साड़ी और अंग-प्रत्यंग में विलक्षण लावण्य! पानी के अन्दर पांव कांप रहे हैं। सुरेश आज अंजली से आँखें नहीं मिला पाता। चोरी-छिपे निर्मल सरोवर में अंजली का प्रतिबिंब देखते-देखते वह अचल-सा हो गया है। क्योंकि सर्वत्र अंजली ने एक अपूर्व दृश्य की सृष्टि कर रखी है। उसका मृदु एवं उदात्त स्वर वातावरण में गूंज रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो खुले आकाश के नीचे कोई वनदेवी बैठी गा रही हो।

सुरेश झील के किनारे बैठा। एक हाथ घास पर फैलाये बैठा है और निर्निमेष दृष्टि से अंजली की ओर देख रहा है। उसने गाना कब सीखा! वह इतनी सुन्दर क्यों कर बन गयी! मुक्त पक्षियों की भाँति वह आसमान में उड़ती फिर रही है। सुरेश के हृदय में आग धधक रही है। वह अपनी पत्नी और सन्तान को भूल बैठा है। वह भूल गया है कि उसे जल्दी-से-जल्दी घर वापस जाना है। उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा है। केवल अंजली के साथ जल-प्रपात की शीतल छाया में किसी पेड़ तले उसे बैठे रहने की इच्छा हो रही है।

और फिर प्रतीक्षा।

कब रात होगी। कब गिरजा का घंटा बजेगा। चमन लाल के कमरे की बत्ती कब बुझेगी। कब दरवान गेट की रोशनी बुझा कर कम पावर का बल्ब जला देगा। जब पूरा मकान झुटपुटे अंधेरे में डूब जायेगा, उस समय एक युवती अभिसार में निकलेगी। चमन अपने कमरे में अंधेरा फैलाये बैठा रहेगा। देखेगा, निर्मला जा रही है या नहीं। काली चादर में लिपटी एक मूर्त्ति देखते ही वह निश्चिन्त हो जाता है। निर्मला उसके लिये जी-जान चेष्टा कर रही है। अब चिड़िया की गर्दन निर्मला के हाथ में है। निश्चिन्त होकर वह एक चादर ओढ़ कर सो जाता है।

उस समय सुरेश चहलकदमी करता रहता है। बीच-बीच में घंटा बज उठता है—ढन-ढन···। आज चौथा दिन है। सुरेश सब कुछ जान गया है। वह यह भी जान गया है कि वह एक जाल में फंस चुका है; फिर भी वह जाल तोड़ कर जा नहीं पाता। निर्मला ने उसे किसी जादुई मन्त्र में बांध रखा है।

जिस तरह तिपाई पर पानी रखा रहता है, आज भी उसी तरह रखा हुआ है। जिस तरह वह कम पावर का बल्ब जला कर बैठा रहता है, आज भी उसी तरह बैठा हुआ है। कल रात वह आयी थी, पास बैठी थी। सिर्फ पुरानी बातें

सुनाती रही थी । लेकिन वह निर्मला की बात मन देकर सुन न सका था; क्योंकि उसके अन्दर एक दूसरी ही आग जल रही थी। वह निर्मला को, नहीं, नहीं, अपनी अंजली को बाहों में समेट लेना चाहता था। लेकिन वह कुछ न कर सका था। उसे पता न था कि वह इतना डरपोक है। वह अपनी पत्नी को प्यार करता है। अंजली उसे उफनती नदी-सी पवित्र प्रतीत होती थी। बार-बार कोशिश करने के बावजूद भी वह अंजली को स्पर्श तक न कर सका था। उसे डर लग रहा था। मानो सुरेश उसके पास उसकी आपबीती सुनने के लिये ही बैठा रहता है। वह और कुछ नहीं चाहता। इतने दिनों का एक संस्कार हमेशा साया की तरह उसके पीछे पड़ा रहता है—वह अपनी पत्नी को प्यार करता है। उस पर उसकी पत्नी का अधिकार है। संस्कार उसे आगे बढ़ने नहीं देता, उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर देता है। सुबह होती है; पर वह पलङ्ग पर पड़ा रहता है। अंजली कब चली जाती है, उसे आहट तक नहीं मिलती।

सुबह होते ही चमन उठ बैठता है। पूजा खत्म होते ही अंजली के कमरे में जा घुसता है। पूछता है, गाड़ी कहाँ तक बढ़ी ?

—ज्यादा दूर नहीं।

—सुरेश साहब कुछ कहते नहीं ?

—नहीं।

—तुम्हें छूना नहीं चाहते ?

—नहीं।

—आखिर तुम कर क्या रही हो निर्मला ! यह मौका फिर न आयेगा।

चमन के प्रति निर्मला के मन में घृणा उत्पन्न हो जाती है। रुपया ! सिर्फ रुपया !!

लेकिन एक रात सुरेश प्रतीक्षा करता रहा; पर अंजली नहीं आयी।

सुरेश को नींद नहीं आ रही थी। दरवाजा खोल कर वह बाहर निकल पड़ा। कल चमन लाल किसी काम से बाहर गया था। सुरेश तीसरे पहर चाय पीने अन्दर जाता था। कल भी गया था। अंजली उसे एक साधारण साड़ी में मिली थी। उसकी अभ्यर्थना करती हुई बोली थी, आज मेरा उपवास है।

—इतनी धार्मिक क्यों बनती जा रही हो ?

—यदि अगला जन्म सुखी हो।

—सुना है, तुम पूजा-पाठ करती हो।

—करती हूँ। देखोगे, मेरा भगवान ?

—कहाँ, किस कमरे में ?

—आओ।

एक लम्बा बरामदा पार कर सुरेश श्वेत संगमर्मर के फर्श पर जा खड़ा हुआ। दायीं ओर के कमरे में अंजली रहती है। कमरे को पार करते ही एक छोटा-सा दरवाजा आता है। दरवाजे के सामने ही भगवान का एक बड़ा-सा सिंहासन है। एक लम्बा-चौड़ा हाल जैसा कमरा। देवी-देवताओं के अनेक चित्र। काले पत्थर का कृष्ण। सोने की आँखें। कमरे में एक टेबिल पर उसने एक तस्वीर देखी थी। किसी दूसरे की नहीं; बल्कि अपनी तस्वीर देखी थी। इतने दिनों तक तस्वीर अंजली के ट्रङ्क में पड़ी हुई थी। लेकिन सुरेश के आने के बाद वह उसे ट्रङ्क में बन्द न रख सकी। निकाल कर टेबिल पर रख दी थी। सुरेश बोला, यह तस्वीर !

—हाँ, यह अभी तक संजोये हुई हूँ। तुम्हें मिलने को लिखा था। मेरी शादी ठीक हो गयी थी। एक प्रेसमैन के सिर मैं मढ़ी जा रही थी। मिलना तो दूर रहा, तुमने उत्तर तक न दिया। तुम इतने स्वार्थी हो।

—विश्वास करो अंजली, मुझे तुम्हारी चिट्ठी नहीं मिली थी।

—मामा जी ने सोचा, लड़की जब इतना कुछ जान गयी है, इतनी सयानी हो गयी है, तब झटपट इसे घर से भगा देना चाहिये। बस, चट मंगनी, पट ब्याह। सिर्फ एक आदमी की जरूरत है जो इसका पति कहला सके। और एक नर कङ्काल उन्हें मिल गया। काश, उस कङ्काल को तुम एक बार देख पाते सुरेश ! वह तुम्हें चालीस भी दीखता और अनायास ही तुम उसे साठ का भी कह सकते थे। हड्डियों का ढांचा, कुत्सित प्रेसमैन मेरा पति बन बैठा। और शादी के बाद मेरा अङ्ग-अङ्ग भर आया, मैं बेहद खूबसूरत हो गयी। और फिर मैं एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर भेजी जाने लगी। प्रेसमैन से प्रेस मालिक, मालिक से एक मारवाड़ी और अब चमन। जानते हो, चमन को मुझ पर अगाध विश्वास है। उसे विश्वास है कि संसार का हर आदमी मेरी नजरों में पागल हो जायेगा। उसके लिये कितनों के ही बिस्तर मैं गर्म कर चुकी हूँ।

रात वह काफी देर तक अंजली के कमरे में बैठा था। उसका कमरा सुरेश पहचानता है। कल इसी कमरे में सुरेश और अंजली बड़ी देर तक बैठे थे। उसे अंजली के साथ बातें करना बड़ा अच्छा लगता था। अंजली का पूरा घर भी उसे पसन्द आया था। हालांकि इस उम्र में इतना ठाठ-बाट नहीं लगता;

सुनाती रही थी। लेकिन वह निर्मला की बात मन देकर सुन न सका था; क्योंकि उसके अन्दर एक दूसरी ही आग जल रही थी। वह निर्मला को, नहीं, नहीं, अपनी अंजली को बाहों में समेट लेना चाहता था। लेकिन वह कुछ न कर सका था। उसे पता न था कि वह इतना डरपोक है। वह अपनी पत्नी को प्यार करता है। अंजली उसे उफनती नदी-सी पवित्र प्रतीत होती थी। बार-बार कोशिश करने के बावजूद भी वह अंजली को स्पर्श तक न कर सका था। उसे डर लग रहा था। मानो सुरेश उसके पास उसकी आपबीती सुनने के लिये ही बैठा रहता है। वह और कुछ नहीं चाहता। इतने दिनों का एक संस्कार हमेशा साया की तरह उसके पीछे पड़ा रहता है—वह अपनी पत्नी को प्यार करता है। उस पर उसकी पत्नी का अधिकार है। संस्कार उसे आगे बढ़ने नहीं देता, उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर देता है। सुबह होती है; पर वह पलङ्ग पर पड़ा रहता है। अंजली कब चली जाती है, उसे आहट तक नहीं मिलती।

सुबह होते ही चमन उठ बैठता है। पूजा खत्म होते ही अंजली के कमरे में जा घुसता है। पूछता है, गाड़ी कहाँ तक बढ़ी ?

—ज्यादा दूर नहीं।

—सुरेश साहब कुछ कहते नहीं ?

—नहीं।

—तुम्हें छूना नहीं चाहते ?

—नहीं।

—आखिर तुम कर क्या रही हो निर्मला ! यह मौका फिर न आयेगा।

चमन के प्रति निर्मला के मन में घृणा उत्पन्न हो जाती है। रुपया ! सिर्फ रुपया !!

लेकिन एक रात सुरेश प्रतीक्षा करता रहा; पर अंजली नहीं आयी।

सुरेश को नींद नहीं आ रही थी। दरवाजा खोल कर वह बाहर निकल पड़ा। कल चमन लाल किसी काम से बाहर गया था। सुरेश तीसरे पहर चाय पीने अन्दर जाता था। कल भी गया था। अंजली उसे एक साधारण साड़ी में मिली थी। उसकी अभ्यर्थना करती हुई बोली थी, आज मेरा उपवास है।

—इतनी धार्मिक क्यों बनती जा रही हो ?

—यदि अगला जन्म सुखी हो।

—सुना है, तुम पूजा-पाठ करती हो।

—करती हूँ। देखोगे, मेरा भगवान ?

—कहाँ, किस कमरे में ?

—आओ !

एक लम्बा बरामदा पार कर सुरेश श्वेत संगमर्मर के फर्श पर जा खड़ा हुआ। दायीं ओर के कमरे में अंजली रहती है। कमरे को पार करते ही एक छोटा-सा दरवाजा आता है। दरवाजे के सामने ही भगवान का एक बड़ा-सा सिंहासन है। एक लम्बा-चौड़ा हाल जैसा कमरा। देवी-देवताओं के अनेक चित्र। काले पत्थर का कृष्ण। सोने की आँखें। कमरे में एक टेबिल पर उसने एक तस्वीर देखी थी। किसी दूसरे की नहीं; बल्कि अपनी तस्वीर देखी थी। इतने दिनों तक तस्वीर अंजली के ट्रङ्क में पड़ी हुई थी। लेकिन सुरेश के आने के बाद वह उसे ट्रङ्क में बन्द न रख सकी। निकाल कर टेबिल पर रख दी थी। सुरेश बोला, यह तस्वीर !

—हाँ, यह अभी तक संजोये हुई हूँ। तुम्हें मिलने को लिखा था। मेरी शादी ठीक हो गयी थी। एक प्रेसमैन के सिर मैं मढ़ी जा रही थी। मिलना तो दूर रहा, तुमने उत्तर तक न दिया। तुम इतने स्वार्थी हो।

—विश्वास करो अंजली, मुझे तुम्हारी चिट्ठी नहीं मिली थी।

—मामा जी ने सोचा, लड़की जब इतना कुछ जान गयी है, इतनी सयानी हो गयी है, तब झटपट इसे घर से भगा देना चाहिये। बस, चट मंगनी, पट ब्याह। सिर्फ एक आदमी की जरूरत है जो इसका पति कहला सके। और एक नर कङ्काल उन्हें मिल गया। काश, उस कङ्काल को तुम एक बार देख पाते सुरेश ! वह तुम्हें चालीस भी दीखता और अनायास ही तुम उसे साठ का भी कह सकते थे। हड्डियों का ढांचा, कुत्सित प्रेसमैन मेरा पति बन बैठा। और शादी के बाद मेरा अङ्ग-अङ्ग भर आया, मैं बेहद खूबसूरत हो गयी। और फिर मैं एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर भेजी जाने लगी। प्रेसमैन से प्रेस मालिक, मालिक से एक मारवाड़ी और अब चमन। जानते हो, चमन को मुझ पर अगाध विश्वास है। उसे विश्वास है कि संसार का हर आदमी मेरी नजरों से घायल हो जायेगा। उसके लिये कितनों के ही बिस्तर मैं गर्म कर चुकी हूँ।

कह वह काफी देर तक अंजली के कमरे में बैठा था। उसका कमरा सुरेश पहचानता है। कल इसी कमरे में सुरेश और अंजली बड़ी देर तक बैठे थे। उसे अंजली के साथ बातें करना बड़ा अच्छा लगा था। अंजली का पूजा घर भी उसे पसन्द आया था। हालांकि इस उम्र में इतना पूजा-पाठ नहीं जचता;

फिर भी उसे अच्छा लगा था। तीसरे पहर वह अंजली को गाड़ी पर ले गया था। उसी झरने के पास दो जाकर बैठे थे। बार-बार उसे अंजली को चूम लेने की इच्छा हुई थी; लेकिन एक सङ्कोच ने उसे जकड़ रखा था। एक संस्कार उस पर सवार था। एक बड़प्पन उस पर हावी था। अर्थात सुरेश साहब एक नामी आदमी हैं, उसे तुम सहज ही अपने चंगुल में नहीं फंसा सकती। सुरेश ने बल-पूर्वक अपनी कुत्सित इच्छाओं को दमन कर रखा था। बार-बार उसे महसूस हुआ है कि वह एक जाल में फंस गया है। उसे चल देना चाहिये। जितनी बार उसने ऐसा सोचा है, उतनी ही बार उसे लगा है कि रुपहली चाँदनी में एक सुन्दरी जा रही है। वह कहाँ जा रही है, वह दूर, बहुत दूर क्यों जाना चाहती है, सुरेश की समझ में नहीं आता। अंजली मानो अकेली ही एक स्टेशन पर खड़ी रहती है। उस समय अंजली को छोड़ कर सुरेश जाना नहीं चाहता। उसकी इच्छा नहीं होती कि वह अंजली को स्टेशन पर अकेले छोड़ कर चल दे। तरह-तरह के बहाने बना कर वह चार दिन रह गया। आज रात भी अंजली को आना चाहिये था; पर आयी नहीं। आज पहाड़ की चोटी पर ऐसी खूबसूरत चाँदनी छिटक रही है, और वह अकेले बैठा है। नहीं, वह अकेले नहीं बैठा रहेगा, ऐसा नहीं हो सकता, अंजली पर उसे अधिकार है, पूरा-पूरा अधिकार। नये सिरे से उसके हृदय में अधिकार ने जन्म ग्रहण किया है। प्रौढ़ सुरेश किशोर सुरेश बन गया है। वह उसके कमरे की ओर जा रहा है, चारों तरफ देख-सुन कर जा रहा है।

दरवाजे पर दस्तक देते ही उसे लगा कि दरवाजा अन्दर से खुला है। उसने देखा, मंद-मंद प्रकाश में अंजली औंधी पड़ी रो रही है। सुरेश सोच न सका, वह क्या करे। इस तरह फफक-फफक कर अंजली क्यों रो रही है! मुँह छिपा रखा है।

धीरे-धीरे वह सिरहाने के पास जा बैठा। सिर पर हाथ फेरते ही अंजली उठ बैठी। वह सपने में भी न सोच सकी थी कि सुरेश उसके कमरे में आयेगा। वह रुँधी आवाज में बोली, तुम चले जाओ सुरेश।

—क्यों, क्या हुआ! जाने क्यों कहती हो?

अंजली ने आँखें पोंछीं। कुछ कहते-कहते रुक गयी। वह कुछ कह न सकी।

सुरेश बोला, रो क्यों रही थी?

—तुम्हें मेरी चिट्ठी न मिली, अगर मिल जाती, तो मेरा जीवन कुछ और होता।

—तुम इसलिये रो रही थी ?

—क्यों रो रही थी, मैं खुद भी नहीं जानती सुरेश। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

—तुम मुझ से कुछ छिपा रही हो अंजली।

—नहीं, कुछ भी नहीं छिपा रही हूं। —कह कर वह जोरों से हंस पड़ी !

—अच्छा सुरेश, तुम्हारी पत्नी को तुम पर बहुत विश्वास है न ?

—हाँ।

—तुम ने जो एक लड़की का जीवन बर्बाद कर दिया है, यह वह जानती है।

—नहीं।

—तुम्हें पश्चाताप नहीं होता।

सुरेश चुप रहा।

—क्या हुआ, बोलते क्यों नहीं ?

—क्या बोलूं ?

—तुम साधु हो और मैं वेश्या हूं। तुम सब कुछ जानते हो। मैंने अपनी असलियत बता दी।

—आज तुमने ज्यादा पी रखी है।

—बिना पिये जिऊंगी कैसे। मेरा और है ही क्या, बताओ ?

—कुछ नहीं !

—कुछ नहीं है, कहना गलत होगा। तुम्हारी स्मृति हृदय की गहराइयों में मैंने संजो रखा है। तुम्हारा प्यार अभी भी संचित है। तुम्हारे साथ के दिनों की याद कर अभी भी जीने की इच्छा होती है। वैसी आकांक्षा लिये जीवन में और किसी युवक की प्रतीक्षा न कर सकी।

—सोच रहा हूं कल चला जाऊंगा। यहाँ रहने से तुम्हें दुःख पहुँचता है।

कुछेक क्षण तक अंजली एकटक देखती रही। वह जानती है कि अभी तक चमन का काम नहीं कर सकी है। जैसे भी हो उसे और कुछ दिनों तक अटका कर रखना होगा। शरीर के विनिमय में उसे टिका रखना होगा। लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाती। प्यास लगने पर सुरेश सिर्फ पानी पीता है, उसे बांहों में नहीं भींचता, उसके होंठों से अपनी प्यास नहीं बुझाता। सुरेश अंजली को जितना दूर-दूर रखना चाहता है, वह जितनी कोशिश करता है कि कुछ न करेगा, उतनी ही अंजली की जिद बढ़ती जाती है।

तुम्हें पता चल गया है सुरेश कि मैं चमन लाल की रखैल हूँ। तुम मुझे छूते भी डरते हो। मुझसे घृणा करते हो।

सुरेश बोला, तुम आज रात क्यों न आयी, सोच कर मिलने आ गया।

क्या सुरेश के मन में और भी तेज आग जल रही है! क्या वह अंजली के लिये तड़प रहा है! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ। तुम्हारे शरीर का आकर्षण, तुम्हारा खोखलापन मुझे मन-ही-मन हंसाता है। तुम जितना भी बन-ठन कर आओ, मेरे सामने नंगी खड़ी हो जाओ, मैं तुम्हारा भोग नहीं करूंगा। तुम्हारे पास अब मेरे लिये कुछ पाने को नहीं है।

इस बार अंजली ने सीधा प्रश्न किया, मुझ से तुम घृणा करते हो न?

—नहीं।

—फिर तुमने मेरा चुम्बन क्यों न लिया!

—चुम्बन लेने से क्या तुम खुश होगी अंजली?

—हाँ। मुझे चूम लो सुरेश। चूमने पर समझूंगी तुम सचमुच में अच्छे हो। तुम मुझ से घृणा नहीं करते। तुमने मुझे माफ कर दिया है।

सुरेश बगल में सो गया। चुम्बन लिया।

—अब मुझे कोई दुःख नहीं सुरेश। तुम मुझ से घृणा नहीं करते, सोच कर मुझे आज अपार सुख मिल रहा है। सुरेश तुम मुझ से घृणा नहीं करते सोच कर मुझे कितनी खुशी मिल रही है।—अंजली ने पागल की तरह सुरेश को दबोच लिया!

सुरेश बोला, मैं तुम से कभी घृणा नहीं कर सकता। आज तक मैंने जो कुछ सञ्चय किया था—चरित्र, नियम-निष्ठा, कर्त्तव्य-बोध—तुम्हें देखने के बाद मेरा सब कुछ बिखर गया। मैं तो सपने में भी न सोच सका था कि उस दिन की घटना तुम्हे यहाँ पहुँचा देगी। मैं तो यही समझता था कि तुम सुखी हो। अच्छे घर में तुम्हारी शादी हुई है। बुआ जी ने पिता जी से कहा था, वह इतने सुखी घर में तुम्हारी शादी कर सकेंगी, सपने में भी न सोच सकी थीं।—कह कर उसने अंजली को छाती में भींच लिया।

अंजली बोली, मुझे कितना अच्छा लग रहा है, बता नहीं सकती। मेरी सारी आकांक्षा तृप्त हो गयी। अब तो मुझे सिर्फ मर जाने की इच्छा हो रही है। जितना जी चाहे मेरे शरीर से खेलो। मेरे इस शरीर में कितने दिनों बाद आज फिर बाढ़ आयी है। मैं मानो ज्वार में बही जा रही हूँ सुरेश। तुम उसमें जी भर कर डुबकियाँ लगाओ। मेरा सब कुछ पड़ा है, एक-एक कर तुम उसे

अपने में समेट लो । अहा, जीवन क्या है, नहीं जानती, सुख की परिभाषा नहीं जानती, इतने सुख के बाद और भी कोई सुख है, मैं नहीं जानती । सुरेश तुम प्यार में पागल नहीं बन पाते । मुझे चबा-चबा कर खा नहीं पाते । तुम कुछ भी नहीं कर पाते सुरेश । जोर से, और जोर से ।...सुरेश अब मैं नहीं सकती । तुम कितने भले हो ! सुरेश, तुम कितने अच्छे हो !

अंजली एक ओर लुढ़क गयी ।

सुरेश धीरे-धीरे उठ बैठा । एकबार उसके अवचेतन शरीर की ओर देखा । अंजली नंगी पड़ी है । बिस्तर सिलवटों से भरा है । सब कुछ मिला कर एक बीभत्स दृश्य उपस्थित है । उसने एक कंबल से अंजली को ढंक दिया । कितनी शान्ति में अंजली सोयी पड़ी है । उठते समय उसने फिर उसका कपाल चूम लिया । इतने प्यार से शायद उसने कभी अपनी पत्नी को भी नहीं चूमा था । उसका कठोर हृदय आज फिर से इस असहाय युवती के प्रति सरल हृदय किशोर सुरेश जैसा रो पड़ा । वह मन-ही-मन बोला, कहो, मुझे और क्या करना है ? तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर कल चला जाऊंगा । आज से तुम्हारे सुख-दुःख का साथी मैं हूँ । तुम्हें सुखी रखने के लिये मैं सब कुछ करूंगा अंजली ।

खिड़की खुले रहने के कारण सुबह की धूप सुरेश के चेहरे पर पड़ रही थी । धूप लगने के कारण ही उसकी नींद टूट गयी । इतनी देर तक वह कभी नहीं सोता । वह धड़फड़ा कर उठ बैठा । उसे याद आया, वह सारी रात एक सपना देखता रहा है । सपने में उसने एक समुद्र देखा । किनारे पर आश्रमनुमा एक विशाल इमारत खड़ी है ।

रंग-बिरंगी लताओं में लिपटी इमारत हरे-भरे पेड़ों के बीच खड़ी है । देखने पर वह एक जंगल-सी प्रतीत होती है । वह नहाने आया है । लीला और ऋतु साथ हैं । ऋतु किनारे पर खड़ी-खड़ी अपने माता-पिता का समुद्र-स्नान देख रही है ।

सहसा ऋतु ने देखा, पिताजी मां को छोड़ कर गहरे समुद्र में बहने लगे हैं । ऋतु रोने लगी । पिता को समुद्र की लहरों में उतराता देख वह रो रही है । मां उसका हाथ पकड़े खड़ी है । उसके पिताजी गहरे समुद्र में बहते जा रहे हैं ।

सुरेश ने मन-ही-मन पता नहीं कब यह सब सोचा है । वह समुद्र में डुबकियाँ लगाता है और फिर तरंगों में उतराने लगता है । उसने देखा, वह किनारे से काफी दूर निकल आया है । उसे किनारे पर बालू का मैदान दीख

पड़ा। बालू के मैदान के उस पार एक घना जंगल है। वह जब किनारे पर आ खड़ा हुआ, उसे याद आया कि समुद्र में उसका वस्त्र बह गया है। वह नंगा हो गया है। कोई इधर आ जाय, तो क्या होगा! फिलहाल और कोई चारा न देख कर वह अपने आप को छिपाने के लिये जंगल की ओर दौड़ पड़ा। बालू का मैदान खत्म ही नहीं होता, वह भागता जा रहा है; पर बालू का मैदान मानो बढ़ता जा रहा है। वह जब थके-मांदे स्वर में बोल उठा था, अब क्या होगा! उस समय जंगल बिलकुल सामने आ खड़ा हुआ था। उसने जंगल में एक छोटी-सी झील देखी। जंगल में मकान है, बगीचा है, रंग-बिरंगे फूल हैं। मानो अभी-अभी कोई आंगन पार कर चला गया है। वह इतने सुन्दर जंगल में घुस कर किसी को न देख सकने के कारण वापस जाने की सोच ही रहा था कि उसे लगा, झील में कोई तैर रहा है। हाँ, अंजली तैर रही है। निर्मल जल में उसका सब कुछ दिखाई पड़ रहा है। वह रुपहली मछली की तरह झील में तैर रही है। सुरेश को किनारे पर देख कर रुपहली मछली ने डुबकी लगा दी। फिर ऊपर न आयी।

ठीक उसी समय उसके चेहरे पर धूप पड़ी। वह जग गया। जग कर वह सपने पर विचार करने लगा; पर कुछ समझ न सका।

उसने खुद ही सपने की एक व्याख्या की। मानो एक बंधी झील में अंजली कैद है। समुद्र जाने के लिये वह छटपटा रही है। उसने नाना प्रकार से सपने की व्याख्या करनी चाही। लेकिन कोई भी व्याख्या उसे नहीं जंची। इसलिये वह खिड़की पर आ खड़ा हुआ। कल रात का दृश्य, अंजली के लिये सब कुछ करने का सङ्कल्प उसे याद हो आया। और यह सब याद आते ही वह मन-ही-मन चमन को खोजने लगा। अभी तक डिसकाउंट का झमेला नहीं सलटा है। यह भी सलटाना है।

चमन अंजली के कमरे में है। वह और प्रतीक्षा न कर सका था। कल रात सुरेश साहब अंजली के साथ रहे हैं और अब सुरेश साहब अंजली के गुलाम बन गये हैं, यह सब वह जान गया है।

वह बोला, मेरे बारे में कहा ?

—तुम्हारे बारे में!—कह कर अंजली उठ खड़ी हुई। वह अभी नहा कर आयी है। भूखे तौलिया में बाल बांध रखा है। अभी-अभी पूजा करने जायेगी,

बातों। उसके पास अभी ऐसी बातों के लिये समय नहीं है। सोची, बाद में तुम्हारी बात सुनूंगी।

—और समय न मिलेगा।

—कैसा समय।

—सुरेश साहब तैयारी कर रहे हैं। आज ही चले जायेंगे।

—मुझसे बिना मिले वह नहीं जायेगा।

—उस समय बात करना भूलना नहीं। मैंने सारे कागज ठीक कर लिये हैं।

—कैसे कागज ?

—उन्हें एक रिपोर्ट देनी है। दाधरिया प्लांट के संबंध में सुरेश साहब कम्पनी को अपनी विस्तृत रिपोर्ट देंगे।

—उनकी रिपोर्ट के कागज तुम क्यों कर तैयार करोगी ?

—इतना कुछ जो तुम ने किया, वह अगर कबूल न किया जा सके, तो फिर तुम्हारा जादू ही बेकार है।

—चमन, मैं वह काम नहीं कर सकूंगी।

—क्या मतलब !

—मतलब साफ है, मुझ से यह काम न होगा। यह सोचने भी मुझे अपने आप से घृणा होगी कि मैंने सिर्फ काम हासिल करने के लिये यह सब किया है। मैं अभी भी उसे प्यार करती हूं चमन। कल रात वह मेरे कमरे में रहा है। मैं कब से इसकी प्रतीक्षा में थी, जानते हो ? आज यह सब करने से, मैं अपनी नजरों में गिर जाऊँगी। मुझसे नहीं हो सकेगा, चमन।

कोई और होती, तो चमन महाभारत मचा देता। लेकिन निर्मला लाखों में एक है। चमन उसका गुलाम बन गया है। वह अनमोल रत्न का मूल्य जानता है। वह अपनी खीज तक प्रकट न कर सका, सिर्फ बोला, निर्मला, तुम कहीं के न रहोगे।

—फिर भी मैं कुछ नहीं कर सकती, मैं लाचार हूं चमन, उस समय, उस एक एग्रीमेंट दस्तखत करा कर, मैं उसे गिरा नहीं सकती। —कह कर वह भाग कर पूजा घर में घुस गयी और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिया।

उसी समय बैरा भागा-भागा आ रहा था। वह चमन को ढूंढ रहा था। चमन को देखते ही बोला, बनर्जी साहब ने आपको सलाम भेजा हुजूर।

चमन शीशे के सामने जा खड़ा हुआ। अपना कुटिल चेहरा देखा। उसका प्यार ! वह मन-ही-मन खुश हो उठा। उसने कपड़े नहीं बदले। वह उन्हीं कपड़ों में सुरेश से मिलेगा।

कमरे में घुसते ही वह हँस कर बोला, मुझे बुला भेजा है ?

—मैं जा रहा हूँ। बोलो तुम्हें कितना डिसकाउण्ट देना है ? कागज तो तैयार कर ही लिया होगा ?

—हाँ साहब।

सुरेश ने एक सिगरेट जलाई। बोला, चमन, एक बात कहूँ, तो बुरा न मानोगे।

—क्या साहब ?

—निर्मला तुम्हारी कौन है ?

—पत्नी।

—सच बोलते हो ?

—हाँ साहब, वह मेरी पत्नी है।

सुरेश ने और कोई बात न बढ़ाई। बोला, उसे पत्नी की तरह रखो।—कह कर बिना देखे ही कागजों पर दस्तखत करने लगा।

चमन बोला, साहब, पढ़ कर नहीं देखा।

—जो देखना था, देख लिया है।

—यहाँ पर दस्तखत करना छूट गया है, साहब।

सुरेश साहब उदास हँसी हँसे। उसके बाद दस्तखत करते-करते बोले, अब तुम खुश हो न ?

—हाँ साहब, बहुत खुश।

—निर्मला ?

—वह भी साहब।

पूजा घर से निकलते ही निर्मला ने देखा, चमनलाल खड़ा है। हाथ में ढेर सारे कागज हैं। बोली, इन कागजों पर मुझे दस्तखत करना है क्या ?

—नहीं। सुरेश साहब ने दस्तखत कर दिये।

—किस काम के लिये दस्तखत कराया।

—जो सब मैं चाहता था।

—उन्होंने कर दिया।

—हाँ। —तत्पश्चात क्षण भर रुक कर हँसता हुआ बोला, दस्तखत करने के बाद बोले, अब तुम खुश हो चमन ?

निर्मला चली जा रही थी। उसने लपक कर हाथ पकड़ लिया। बोला, सुनती जाओ, मैंने क्या कहा।

निर्मला मुँह झुकाये खड़ी रही।

—बोला, हाँ साहब, बहुत खुश। उसके बाद उन्होंने पूछा, निर्मला ?

निर्मला मुँह नहीं उठा पा रही है। उस पर मानो बिजली गिर गयी है।

बड़े कष्ट से किसी तरह बोली, क्या जवाब दिया ?

—बोला, यह भी साहब।

निर्मला ने तत्क्षण चमन के गाल पर एक भरपूर तमाचा जड़ दिया। बोली, मैं वेश्या हूँ; पर इतनी नीच नहीं चमन। वह शायद और भी कुछ बोलती। चेहरा तमतमा रहा था। वह भाग कर बाहर आ गयी। वह सुरेश से कहेगी, तुमने यह क्या किया सुरेश ? कल रात के उपभोग को तुम ने सौदा में बदल दिया। मुझे मेरे प्यार का सम्मान तुम ने न दिया ! लेकिन उसने देखा, सुरेश नहीं है। गाड़ी तलहटी में उतरती जा रही है। सुरेश हाथ हिला रहा है। अंजली भी हाथ हिला रही है और फफक कर रो रही है। तुम मुझे इतना छोटा बना गये सुरेश। एक रात के लिये भी तुम मुझे रखैल के असम्मान से छुटकारा न दिला सके ! मेरे सच्चे प्यार को तुमने सौदा समझ लिया !

इसके बाद की घटना बिलकुल सीधी-सादी है। सप्ताह भर बाद चमन ने एक पत्र दिया था। संक्षिप्त पत्र। निर्मला इस संसार में न रही। उसी रात नींद की गोलियाँ खाकर आत्म-हत्या कर ली। उसे दीघरिया के मैदान में संजो कर रखा है। मौलसिरी का एक पेड़ लगाया है। निर्मला को मौलसिरी का फूल बेहद पसंद था न।

सुरेश साहब भागे-भागे आये थे। दीघरिया के मैदान में रंग-बिरंगे फूल लगाये गये हैं। मौलसिरी का पेड़ बड़ा होता जा रहा है। देसी-विदेशी फूल लगा कर चमन ने इस जगह को नन्दन कानन बना रखा है।

चमन और सुरेश बैठे रहते हैं। छुट्टियों में यहाँ आकर सुरेश कहा करता है, कदंब का एक पेड़ लगा दो चमन। बचपन में मैंने उसे एक बार कदंब के फूल लाकर दिये थे। वह कहा करती थी, लक्ष्मीपूजा में हम कागजी कदंब के फूलों की माला दरवाजे पर नहीं झुलायेंगे। असली कदंब की माला झुलायेंगे। वह बड़ी भली थी। बड़ी भोली-भाली थी। उसकी यह आशा कभी पूरी न हुई।

निर्मला अथवा अंजली की समाधि पर मौलसिरी और कदंब के पेड़ दो प्रकार की शोभा लिये लिये बढ़ रहे हैं। अभी भी दोनों की छाया में दो प्रौढ़

चलते-फिरते दिखाई देते हैं। वे चलते-चलते कभी अन्यमनस्क हो जाते हैं। घास पर ओस की बूंदें झिलमिलाती रहती हैं। ओस की बूंदों में वे शायद प्यार को खोजते-फिरते हैं। कभी-कभी दोनों चुपचाप पेड़ तले बैठे रहते हैं। मैदान से ठंडी हवा के झोंके आने पर वे विभिन्न प्रकार के फूलों की सुगंध पाते हैं, कौन-सी सुगंध किस फूल की है, वे समझ नहीं पाते हैं। उस समय दोनों प्रौढ़ एक-दूसरे की ओर देख कर उदास हंसी हंसते हैं। सूर्य उन पर अपनी किरणें बिखेरता है।